

NOT FOR SALE

महालक्ष्मी सिद्धि विशेषांक

अक्टूबर 2001

मूल्य : 18/-

# जैन तंत्र-संग्रह

विज्ञान

महालक्ष्मी सिद्धि : १०८ प्रश्नोग्न

A Monthly Journal



जैन तंत्र : महालक्ष्मी सिद्धि

वास्तविक संन्यास तंत्र



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

# छाल्य-शक्ति

॥ ॐ पदम् तत्त्वाय नारायणाय गुरुकृत्यो नमः ॥



## सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

5

नून बाणी

44

## स्तम्भ

जित्य धर्म

43

नहानों की बाणी

60

मे समव हूँ

62

ब्रह्मगिर्हार

63

जीवन सरिता

69

इस मास विली में

80

एक दृष्टि में

86



## विशेष

शतायु जीवन संभव है

71

भाग्य रेखा क्या कहती है

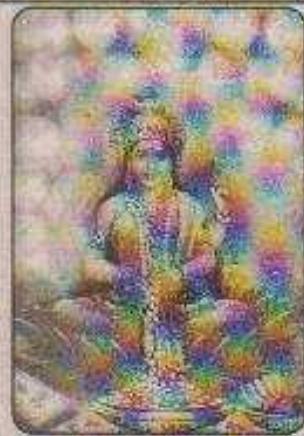
74

प्रतेरेय उपनिषद

64

लक्ष्मी कवच

82



## विवेचन

लक्ष्मी वरवरद माल्य

46

यन्त्रायं तंत्र

55

महालक्ष्मी दीक्षा

78



## ।। सम्पर्क ।।

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायण वर्मा

श्रीमाली

(वस्त्रहंस स्वरमी  
विविक्षणे व्यवस्थाव वर्ती)

प्रधान सम्पादक

श्री लन्दकिशोर

श्रीमाली

कार्यालयक सम्पादक  
श्री वैश्नामात्रवन्न श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार मंडल

दूष पर्म वैतन्य शास्त्री,

श्री गुरु वेदव श्रीवास्तव,

श्री गोपा पाठिल, श्री एच.के. मिश्रा,

श्री आर.सी.सिंह, श्री गणाधर

महापात्र, श्री बदल पाठिल, श्री

मतीज मिश्रा (बन्द्योह), श्री एम.

आर. विश्व, श्री यूपीर लेलोकर,

श्री विजय शास्त्री (बन्द्योह),

श्री कृष्ण गोद्धु (बैंगलोर),

दूष पर्म. के, श्रीवाल (नेपाल),

प्रकाशक एवं स्वामित्व

श्री कैलाश वरद श्रीमाली

द्वारा

नीक आर्ट प्रिन्टर्स

८/१८, नारायण इंडस्ट्रियल

परिया फैस १, नई दिल्ली

से मुद्रित तथा

मंत्र-तंत्र-यज्ञ विज्ञान लाइब्रेरी

कॉलोनी, जोधपुर से

प्रकाशित।

भूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

वापिक : 195/-

सिद्धाश्रम, ३०६ कोहरा एक्सेंट, वीतमपुरा डिल्ली-११००३४, फोन: ०११-२१८२२४४, टेली फैस: ०११-२१९६७००  
मंत्र-तंत्र-यज्ञ विज्ञान, डॉ. श्रीमाली नारा, डाइकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर ३४२००१ (राज.) फोन: ०२९१-४३२२३९, फैसलाबाद: ०२९१-४३२०१०  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

जिवन के प्रकाशित एवं स्थानों का जीवन करने का  
काहा है। भगवन्-तत्-ठंडविलास योगिका में प्रकाशित कहाँसी से  
भग्नादक का सहमत होता अनिवार्य बनी है। तर्क-युक्त करने  
वाले पाठक परिवर्तने में प्रकाशित है। आखरी बोध समझी  
किसी ताम, स्थान का शब्दों का परिवर्तन होती है। और  
कोई प्रदत्त जाग वा तथ्य जिसे जाव, तो उसे अद्वित भक्तों  
परिवर्तन के लिए युक्त कर देते हैं। अनु उल्लेख पोते के  
भाई में कुछ भी इन्ध जावका देता व्यक्ति होता। योगिका में  
प्रकाशित किसी भी केतक वा लाली के बाद-विजावार के  
माध्यम से जीवा द्वारा जैसे हृष्टविकल्पक उपकारक शुद्धि वा  
उपवादक उपकार होती है। किसी भी भग्नादक को किसी भी  
प्रकार का परिवर्तन बहु विद्या जाता किसी भी प्रकार के  
वाद-विवाद में जीवादपुर व्यावालन ही मात्र होता। परिवर्तन  
प्रकाशित किसी भी लाली के लाली का पाठक किसी भी प्राप्त  
कर भक्तों द्वारा परिवर्तन कर्त्ता व्यक्ति से मंत्र वाचने पर वह आखरी तरफ से  
प्रकाशित होता है। असली आखरी अवधि व्यक्ति होते जाने के  
बाद में उसका दिव्यवाची बहु होती है। पाठक अपवेदित व्यक्ति पर ही  
मुख्य भाली परिवर्तन कार्यालय ले लावारी लाली के मुख्य पर  
तर्क का वाद-विवाद मात्र ही होता। परिवर्तन का ग्राहक शुद्धि  
दर्शाव में 195/- है। पर विविध विशेष उपचारित्यकारणों  
में परिवर्तन को प्राप्ति का बहु करता पढ़े, तो जितने भी इनके  
आपको प्राप्त हो जाएं। उसी में विविध उपचारात्मक अध्यात्म क्षमता,  
तीव्रता व प्रवर्णनीय उपचारों को पूर्ण समझें। इरणेकिसी भी  
प्रकार की आवश्यक वा आकोशकाविली भी उपचारों से अधिक जीवि  
होती। परिवर्तन में प्रकाशित किसी भी आधार में  
लक्षण-उत्तरान्तर, अव-जावकी जिसेवारी लाली की तर्क  
की लेही तथा लाली कोई भी उपचारा। उपचार प्रोत्तव्य  
करें, तो जीविक लाली विवरी के विपरीत हो।  
परिवर्तन के प्रकाशित केतकों के उपकरण वेळी वा लाली के लाली के  
विवर मात्र होते हैं। उन पर आप का आवश्यक परिवर्तन की  
क्षमताओं की तरफ लेही हो। पाठकों की मानव पर इन उक्तों  
परिवर्तनों के प्रियों लेही कर्ता भी उक्तों का तीव्र उपचारित्यकारण है।  
जिसप्रतीक नियम पाठक आखरी उत्तरात्मक वालेसक क्रान्ति  
प्राप्तिक इन्होंनों के आधार पर जो मंत्र, तत् वा ग्रन्थ (अपेक्षिते  
शास्त्रीय व्याख्या के फौर ही) बनाते हैं, वे से तो होते हैं। अतः हम  
उपकरण में आखरी व्यालक करको व्याली ही आवश्यक पूर्ण परचाइन्सर जी  
भी कोटी प्रकाशित होते हैं। इन उपचारों में लाली जिसेवारी कोटी  
प्रियों वाले प्रोटोकॉर अवधि अविट्रिट की होती। वेळी प्राप्त करने  
का तात्पर्य यह जीवि है कि अध्यात्म उपचार लाली तुला  
प्राप्त कर लक्ष्य, वह तो लाली भी और असत् प्रकृत्या है। अतः पूर्ण श्रद्धा  
ओर विश्वास के लाली वीक्षा प्राप्त करने हैं। लाली अवधि भी किसी  
प्रकार की कोई भी आवश्यक वा आकोशक रद्दीकारी नहीं होती।  
अख्यवेद वा परिवर्तन पाठ्यकार इस उपचार में किसी भी प्रकार की  
जिसेवारी वहन जीवि करते हैं।

## प्रार्थना

मिन्द्रान्तणक्षन्निमन्वसति सौन्दर्य वार निधिम्।  
कोटी रामद्वारकुष्ठलकटी युवाविभूषिताम्।  
हस्ताक्षन्नेवसुप्रभमन्वयुगलावशी वहन्ती परा-  
प्रावीतां परिचारिकमिन्निं ध्यायेतियां शार्णिणः॥

‘मिन्द्र के तुल्य असुग कान्तियुत, कमल में निवास  
करने वाली, सुन्दरता की महासागर, मुकुट, अंगद, हार,  
कुण्डल, कटि सूद आदि से विभूषित, हस्त कमलों द्वारा आठ  
दलों वाले दो कमल और आदर्श धारण किये हुए हैं, निरन्तर  
परिचारिकाओं योजित हैं ऐसी परादेवी भगवान विष्णु की प्रिया  
लक्ष्मी का ध्यान करता हूं।’

## \* मनुष्य के प्रकार \*

प्रथम उपरात एक जिजामु राजा ने भगवान् बुद्ध से  
प्रश्न किया, ‘महाराज, जापने जप्त्री-आभ्री कहा कि मनुष्य  
चार प्रकार के होते हैं, कृपया समझाएं।’

भगवान् बुद्ध ने उत्तर दिया, ‘मनुष्य चार प्रकार के होते  
हैं-एक, तिमिर से जानेवाला; दूसरा, तिमिर से  
ज्योति की ओर जानेवाला; तीसरा, ज्योति से तिमिर की  
ओर जानेवाला; और चौथा, ज्योति से ज्योति में  
जानेवाला।’

‘राजन्! यदि कोई मनुष्य कान्दाल, जिषाद आदि हीन  
कुल में जन्म ले और जन्म ले दुष्कर्म करने में बिताये, तो  
उसे मैं तिमिर से जानेवाला कहता हूं।’

‘यदि कोई मनुष्य हीन कुल में जन्म ले तथा खाने-  
पीने की तकलीफ होने पर भी बह-बदन-कार्म से सत्कर्म  
का आचरण करे, तो मैं ऐसे मनुष्य को ‘तिमिर से ज्योति में  
जानेवाला’ कहता हूं।

‘यदि कोई मनुष्य महाकुल में जन्म ले, खाने-पीने की  
कमी न हो, वरीर भी उपचार और बलवान हो, किन्तु  
मन, वचन तथा काया से वह दूषित हो, हो तो मैं उसे ‘ज्योति  
में जानेवाला’ मनुष्य मानता हूं।’

‘किंतु जो मनुष्य अच्छे कुल में जन्म ले कर सदैव  
सदाचरण की साधना करता है, तो मैं उसे ‘ज्योति से ज्योति  
में जानेवाला’ मनुष्य मानता हूं।’

सद्गुरु की प्रेरणा से ही शिष्य तिमिर जर्थाति अवधकार  
से प्रकाश की ओर जा सकता है।

उण्डेश है मेरा दुमचा  
बोलना है महिमामय जीवन में

गुरु और शिष्य का सम्बंध और किस प्रकार विषय गुरुत्व में लीन हो कर आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आनंदखेतना नापत करने में व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बंध में यद्युग्मवेद की ओजरकी वाणी यह महान प्रबन्धन-

बहारे उत्तिहास में शंकराचार्य नेसा सम्बासी व्यक्तित्व नहीं बुआ, केवल ३२ साल की अवस्था में उन्होंने बार रथानों पर मठ स्थापित कर दिए- और शंकर भाष्य नेसा शृंग लिखा। गीता को तो फिर भी लोग समझ सके, शंकर भाष्य को आज भी लोग नहीं समझ पाए कि उसमें कितनी गृद्ध विवेचना है, मेरे मन में भी वही, छटपटाहट है कि उस शंकर भाष्य को उन्हीं शब्दों में वापस लिखूँ- सरल भाषा में जो कि शंकराचार्य के मन में कहने की इच्छा थी। जो बात शौक्यगीता में कहना चाहते थे, उसका आगे बाजी देखी ने अर्थ तो किया, मगर वे मन की बात नहीं समझ पाए। अर्थ एक अलग चीज़ है, व्यक्ति का कहना कहना है वह एक अलग चीज़ है।

मन के भावों का व्यक्ति शब्द कभी-कभी नहीं कर सकते। जब राम सीता स्वयंवर में गए, विश्वमित्र और लक्ष्मण के साथ और वाटिका में घूम रहे थे तो सीता तुलसी की पूजा करने आ रही, वी और राम से एक क्षम के लिए सीता को देरखा। वेश्वा और तुलसी ने चीपाई में लिखा जिक्का नेन, नैन लिनु वानी कि, जीभ बहुत कुछ कहना चाहता है पर उसकी

आसे नहीं हैं, वह देख नहीं पा रही बेचारी वह बोल सकती है, पर आंखें नहीं हैं।

और मैंने जिन बाणी आंखें बहुत कुछ देख लेती हैं पर उनके पास बाणी नहीं हैं वह कुछ बता नहीं सकती। ठीक उसी प्रकार से शंकर क्या कहना चाहते थे वह हम समझ नहीं पाए, समझा भी नहीं पाए। शामिल कोई क्षण मिले कि शंकर भाष्य का सही चिंतन दें सकूँ, गीता का सही चिंतन दें सकूँ। मगर वह तो जैसा गुरुदेव चाहेंगे, प्रभु चाहेंगे वैसा ही हो पाएगा।

मगर जो कुछ भी मेरे पास है एक ब्राह्मण के रूप में जान है, चेतना है और उस चेतना और जान पर अपने आप में बहुत गर्व है। पूरे ब्रह्माण्ड को गर्व है, पूरे ब्रह्माण्ड को भी गर्व है कि मेरे पास साधना है, जान है।

मगर यह रब जान रख में बदल नहीं जाए, यह जान अपने आप में जीवित जागत बन सके। शंकराचार्य के बल ३२ साल में मृत्यु को ब्राह्म हो गए। ३२ साल तो काई उम्र ही नहीं होती और ३२ साल में उन्होंने कितने तनाव, तकलीफ झेली और उनकी मृत्यु हुई उनके शिष्य के द्वारा। शिष्य ने ही उन्हें कांच धोट कर मिला किया, और केवार नाश के पास उनकी मृत्यु हो गई।

और अपने अंतिम समय में शंकर ने कहा-

शिष्य शब्द अपने आप में सबसे तुच्छ और घटिया शब्द बन गया है। अशर शिष्य ही गुरु को मारे ये तो वह शिष्य है ही नहीं। गाली बोलना गुरु को तो बहुत बड़ी बात है गाली सोचना भी बहुत बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ के लिए पाद पदम जैसे घटिया शिष्य ने शंकर को समाप्त कर दिया। ऐसा अधन शिष्य इस पृथ्वी पर पैदा नहीं हो सकता।

और शंकराचार्य को यह पीड़ा थी कि उन्होंने कहा शिष्य शब्द अपने आप में गाली बन गया है।

मैं शंकराचार्य के शब्दों को सुधारना चाहता हूँ, मैं बताना चाहता हूँ कि शिष्य अपने आप में बहुपन का शब्द है, उच्चता का शब्द है। शिष्य घटिया नहीं है कोई जरूरी नहीं, कि सभी पाद पदम बनेंगे। हो सकता है कि कुछ स्वार्थी तत्व हैं परंतु शंकर के शब्दों से पीड़ा बलक रही है।

जो पीड़ा शंकर लेकर चले गए, जो बेटना लेकर चले गए शायद और दूसरे सात्सन जीवित रहते तो और दो, चार शंकर भाष्य जैसे ग्रन्थ लिख देने और उनके होठों पर ये शब्द भी न आते कि शिष्य शब्द घटिया है। मगर इन हजारों सालों तक शिष्य शब्द अधम और घटिया रहा और मैं अपने जीवन में उस शब्द को सुधारना चाहता हूँ कि शिष्य शब्द से उच्च कोटि का कोई शब्द नहीं है। वह आपमें हृदय का बीज है, हृदय का रक्त है। ऐसा ही प्यार आपसे मुझे चाहिए।

आप सोचिए कि अगर आपके शरीर का स्पर्श मेरे शरीर से हो जाता है तो इसलिए नहीं कि मैं बहुत महान व्यक्ति

क्यों  
देना चाहे  
लिए आ  
में स्वास्थ  
मिलन।  
होठे  
शिष्य में  
तैयार हो  
और सा  
है।

शंक्रि  
मिलना  
कहता है  
मगर है। हर कोई गा  
आपका गाली ब प्यार भ नहीं मि  
यह आ होती है नहीं मि  
यह नहीं आ उस गु कर्तव्य

हूँ। मैं तो बहुत सामान्य व्यक्ति हूँ मगर शंकरिदाचार्य ने शंकराचार्य  
की मृत्यु के बाद कहा कि वे लोग धन्य हैं जिन्होंने अपने जीवन में  
शंकराचार्य के चरणों को स्पर्श किया, केवल स्पर्श किया।

गुरु जीवित रहे, पर शंकर की मृत्यु हो गई। शोकिन् पादाचार्य  
उनके गुरु थे और वे नो वास्तव में ही हजारों हजारों देवनाथों  
से भी अद्वितीय हैं जिनका शरीर शंकर चार्य के शरीर से ज्यधा  
हुआ होगा, युड़ा होगा, इवय की भूक्ति जूड़ी होगी, पाणी के  
स्पर्दन जुड़े होंगे, वास्तव में ही उनका जेया ना व्यक्ति हो ही  
नहीं सकता। क्योंकि एक लोहा भी पारस से स्पर्श करेगा तो  
कुदन बन जाएगा, सोभा बन जाएगा। एक लकड़ी का टुकड़ा  
बबूल भी अगर चढ़न से रगड़ खाएगा तो अपने आप में सुरक्षा  
युक्त बन जाएगा।

कभी कभी यह बेदना होती है कि गुरु बनकर ठीक किया  
या नहीं किया, क्या मैंने वापस गृहस्थ में आकर उचित किया  
या नहीं किया, कभी-कभी मानसिक पौड़ा होती है। मगर  
फिर एक बार मन में सोचता हूँ कि जीवन का यही धर्म है।

मैंने पहले भी कहा था कि ऋषि मुनि, योगी, यति बेकार हैं  
जो कदरा जी में जाकर बेठ गए, उनको यहाँ आना चाहिए, आग  
में जलना चाहिए, तप्सा चाहिए, नृन जलाना चाहिए, मगर इन  
लोगों को यहाँ जान देना चाहिए। एकांत में जंगली पशु बेठे ही हैं  
आप भी बेठे हैं। उनकी भी जटाएं बढ़ी हैं, बाल बढ़े हुए हैं,  
तुम्हारे भी बाल बढ़े हुए हैं। तुमने उच्च कोटि की साधनार्थ कर  
ली उनका जीवन में क्या अर्थ है? मैं आधार नू तो मुझे इतना  
विवास है कि हजारों, हजारों उठ करके मेरे साथ खड़े हो जाएं,  
हजारों, याप्त खड़े हो जाएंगे, क्योंकि मेरे जीवन में मैंने कोशिश  
यह की है कि प्यार दू आपको डीर में कह रहा हूँ मैंसे कोई  
वक्षिणा नहीं चाहिए। आपसे धन नहीं चाहिए, न धोती चाहिए,  
न कपड़े चाहिए, न आमूल्य चाहिए। केवल प्यार दीनिए मर्ये।

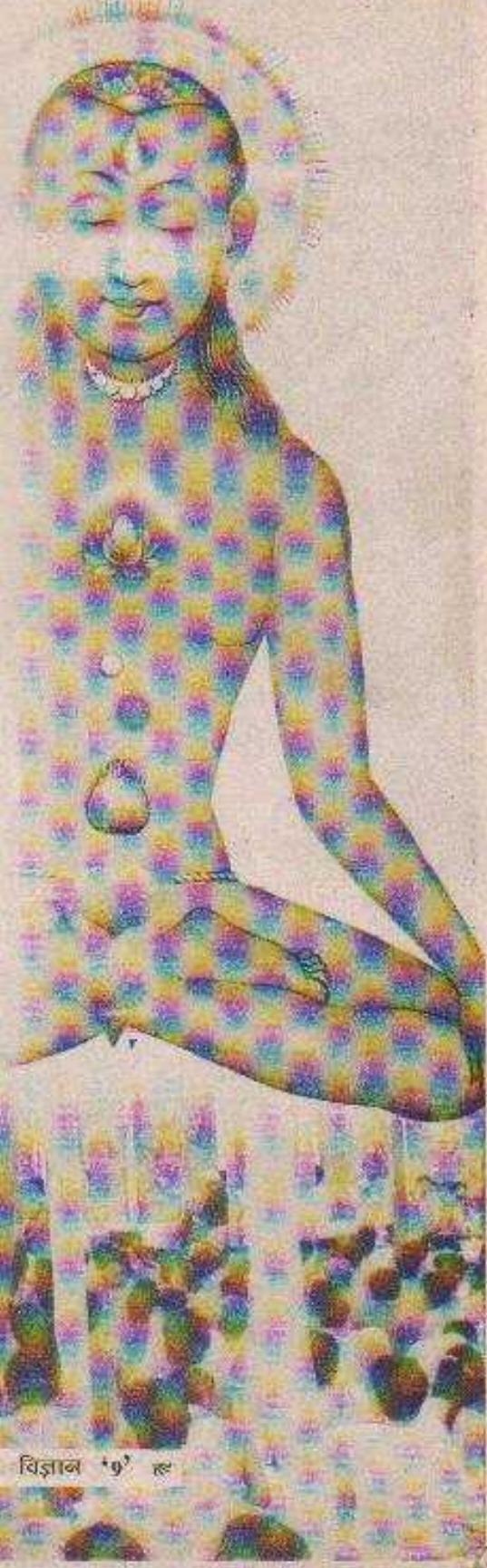
ब्यौके उपसे अमूल्य कोई चीज़ नहीं है और मैं आपको साधनाएं  
देना चाहता हूं, उच्च कोटि का व्याख्यतत्व बनाना चाहता हूं और उसके  
लिए आपका साहचर्य चाहिए, सामीक्ष्यता चाहिए। आपके मेरे बीच  
मेरी ज्ञानी की ओर स्मृतता की रेखा स्थित जाएगी तो न मेरा आपसे  
मिलन हो सकेगा, न मैं आपसे मिल जाऊँगा।

हेठो पर एक मुख्यान रहेगी, हल्का मैं एक अनुभव रहेगी जिसे  
जिस्त मेरे है, मेरी आवाज पर ये दोहे चले आते हैं, बलिदान करने को  
जेतार हो जाते हैं, अपने आपको समाप्त करने को तैयार हो जाते हैं।  
जोर सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं। कई बार मैंने अनुभव किया  
है।

गंकर का स्मरण आया तो ये शब्द निकले मेरे मुँह से, उनसे  
मिलना होता है रिष्ट्राश्रम में, उनकी मन की पीड़ा को मैं देखता हूं, मैं  
कहता हूं, यहां आपस गुंथ लिखिए आपके पास श्रेष्ठ श्लोक हैं।

गंगर जो कांटा चुभ गया उनके हृदय में वह निकल नहीं पा रहा  
है। हर बार चलते हैं और फिर वह कांटा खटक जाता है। जैसे आपने  
कोई गाली बोली, आप चले गए मैं चला गया मगर दो महीने बाद भी  
जल्का नाम याद आते ही फिर मन मैं कसक आती है कि उसने मुझे  
जल्की क्यों दी, क्या हो गया? प्यार क्यों नहीं दिया? और देने वाले  
ज्याद भी देते हैं। नहीं मिलते दो-दो, तीन, तीन महीने मना करने पर  
नहीं मिलते मगर उनको आख में हृदय में, कुछ भी अंतर नहीं आता।  
वह आपको मनवूरी है कि आप नहीं मिल पाते। कभी मेरी आज्ञा  
होती है, आप नहीं मिल पाते, कभी आपकी समरस्या होती है आप  
नहीं मिल पाते। ऐसा होता है जीवन मैं मैं समझता हूं। इसका मतलब  
यह नहीं, हमारे पांच ठिक जाएं, हमारे हाथ लुक जाएं।

आपका जन्म एक गुरु के लिए हुआ है और मेरा जन्म आपको  
उस गुरु स्वयं से भी ऊँचा उठाने के लिए हुआ है। यह मेरे जीवन का  
कर्तव्य है ऐसा ही होगा, ऐसी ही इच्छा है। आपके ओर मेरे बीच में



विवानगी के  
अनुमति किए  
यह मेरा  
बीच में कई  
रसवता हूँ।  
देखु सके।

साफल  
होथों व

शंकरा

गुरु और  
सिद्धियों में  
होता है जा-  
करत्य है।

उपने गुरु

नहीं ढाला  
साधना में  
अगर आप  
जरूरी हैं।

रही तो अ-

गलती नहीं

तत्व अभी

पाण्डा पुरा

का धर्म अ-

उसको ग

नहीं कहे।

सफलता

सफलता

दिलाए।

समय का अंतराल नहीं आना चाहिए, समय  
बीच में खड़ा नहीं होता।

अगर समय बीच में खड़ा हो, काल बीच  
में खड़ा हो जाए तो उसको भी धक्का मारकर  
हम एक दूसरे से मिल सकते हैं। काल हमारा  
कुछ विजाह नहीं सकता, समय हमारा कुछ  
विजाह नहीं सकता।

एक मन में कर्तव्यनिष्ठा, दृढ़ निष्ठा हो,  
संकल्पमस्तु हो, तो ऐसा होगा ही। आपे  
तो समय जाने, भगर ऐसा करेंगे हम।

कल रात भी सिद्धाश्रम भया तो  
शंकराचार्य की व्यथा को देखा रहा था।  
इन्हें वर्षों के बाद भी उनके मन में एक  
व्यथा थी।

मैंने उनसे कहा कि आपने जो शब्द  
शिष्य के लिए कहे मैं उनको पलट करके  
दिखा देना चाहता हूँ कि शिष्य अपने  
आप में सब कुछ न्यौछावर कर देने के  
लिए हो बना है। ऐसा करके मैं दिखा  
दूँगा।

मैंने उनको आश्वस्त किया है। मैंने  
कहा आपके जमाने में अधम शिष्य थे  
आज भी होंगे। मैं यह नहीं कहता  
आज जहर नहीं है। इस जमाने में  
जहर है भगर इस जमाने में अमृत  
भी है, हो सकता है, १५-२०-२५  
घंटिया हों, भगर सैकड़ों शिष्य हैं,  
जो मेरे पीछे पांगल हैं विवाने हैं,

विज्ञानी की हड तक हैं। अपने आपको फना करने के लिए तैयार हैं, आग में जलने के लिए तैयार हैं, मैंने देखा है, अनुब्रह किया है, परखा है।

यह मेरा सीधाम् य है, यह आपका सीधाम् य है कि मैं आपके बीच खड़ा हूं और उन लोगों (वदता औं) और आपके बीच मे कहड़ी हूं, आपकी बात उन तक पहुंचाने की क्षमता रखता हूं और उनकी बात भी आप तक पहुंचने की क्षमता नहीं है। मैं आपको उस जगह पहुंचाना चाहता हूं कि आप सिद्धाश्रम जा सकें, सूक्ष्म शरीर से वहां पहुंच सकें, और देख सकें।

शाकरात्मक रूपं भवतं श्रियसै, जातं सदाम् पूर्णमदेव तुल्यं

लीर्णो वतां स्थूल तनेव रूपं शिशिर मदाम् च मुक्तसै च शब्दं

शकरात्मक ने इस श्लोक में बहुत एक उच्च कोटि की जात कहा है, जिसे समझने को जरूरत है। उसने कहा कि गुरु और सिद्धि या साकल्य शिद्धि-यानि सफलता युक्त शिद्धि यो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। जहां गुरु है वहां शिद्धियों में सफलता है, जहां शिद्धियों में सफलता है वहां गुरु है, इन दोनों में अंतर नहीं किया जा सकता। अंतर सब छोटा है जब गुरु-शिष्य के बीच में अंतर होता है। और अगर यह अंतर है तो शकरात्मक कहते हैं कि यह गुरु का अवृत्त्य है कि इस अंतर को मिटाए क्योंकि शिष्य को जात नहीं कि अंतर है कि नहीं और अंतर करने मिट गएकता है। उसने गुरु पर ही कर्तव्य ढाला। उसने गुरु को भी एक लकार में बांधने की काशिणी की। कवल शिष्यों पर ही मार नहीं ढाला है। यह कहा कि गुरु का धर्म है और अगर वह न्यूनता बरतता है तो.... और आज के युद्ध में शकरात्मकी बाधना में न्यूनता संभव है, मैंने आपसे अभी कहा कि केवल ऐडी के बल पर खड़े हैं, पने के बल पर खड़े हैं और अगर आप की ऐडी टिकी एक बार या दो बार तो स्वाभाविक है कि यह आपकी न्यूनता है। किसीका इस साधना में जल्दी है कि पंजे के बल पर ही खड़े हों। ऐडी ही ऊपर उठ सकती, यहां पर उठने में तो टाइम लगेगा। मगर ऐडी टिकी रही तो आपकी ही यह न्यूनता रही। इस न्यूनता को मिटाना है आप मुझसे कह या नहीं कहें। शिष्य की जलती नहीं है क्योंकि वह तो एक हाड़ मांस का

व्यक्ति है, उसमें प्राण

नन्द अभी तक नहीं आ पाया है। आ भी नहीं  
पाया एकदम से। उसे सफलता देना गुरु  
का धर्म और कर्तव्य है कि अंतिम क्षण तक  
उसको गुरु सफलता प्रदान करे। वह  
नहीं कहे तो भी करे। थप्पड़ मारकर भी  
सफलता दिलाए, प्यार करके भी  
सफलता दिलाए, मगर उसे सफलता  
दिलाए यह

धर्म है,

किस

कहे कि व

सी लंबी

में क्या ह

मगर

नहीं बोल

रहे थे,

उनकी

रहे :

विशेषाः

मिल ज

अब

यह

खुदा हो

कर बैठ

उठने स

हवा में

जहाज

और त

हन

जब ल

वे तो :

या

वायु के

ग्रकान

डी वि

शी। ८

गुरु का धर्म है, यह गुरु का कर्तव्य है।

उसके अप्पाह महस्ते में भी एक प्यार होता है, गाली देने में भी  
एक प्यार होता है, एक मधुरता होती है। कोशयुक्त गहली उसकी  
जड़ी होती।

कबीर ने कहा है- गुरु कुम्हार शिष्य कुम्ह है।

गड़ी गड़ी काढ़े खोट।

चालतर भोजनर सहन के

बाहर बाहर खोट।

बढ़ छोटी सो सुराही भी होती है उसे बाहर चोट  
महस्ता है कुम्हार, मगर अंदर हाथ लगाए रखना है  
अंदर दोरे धोरे फिर उसे बना देता है। अंदर से उसे  
सहजता है। मैं भी अंदर में सहजता हूँ, उमर से डाँटता  
हूँ, घटकारता हूँ। मगर उसमें भी प्यार है, एक  
जलनापन है। आपको छोटने-फटकारने में मुझे कोई  
आनन्द नहीं है। मगर मैं चाहता हूँ आपको  
सहजता मिले।

जल ही एक प्रसंग में शंकराचार्य कह रहे थे  
कि शिष्य को मंत्र दें मगर मंत्र देने के बाद मौ  
उनको सफलता नहीं मिलती और नहीं मिलती  
है, तो वे द्वारा निराश हो जाते हैं। गुरु से नहीं  
कहते हैं कि यह मंत्र गलत है या कही हुई बात  
गलत है, या मैं गलत हूँ।

वह ध्यानित हो जाता है और गुरु को कह नहीं  
पाता। कही न कही कोई मजबूरी होती है कि  
गुरु को किसे कहूँ।

मगर गुरु को आगे बढ़कर कहना चाहिए,  
कि तुम्हारे अंदर न्यूनता अगर आ रही है तो आ  
रही है। उस न्यूनता में भी सफलता देना मेरा

जहाँ है, कर्तव्य है-गुरु के रूप में कर्तव्य है।

जिस प्रकार से वह सफलता मिले और मैं लोगों को दिखा सकूँ। नोग कहे कि कपड़ा फाढ़ कर दिखा और कपड़ा तो दर्जी भी फाढ़ देगा, इसमें कौन जी उन्हीं चौड़ी बात है। पापड़ तोड़ने में क्या टाइम लगेगा। कपड़ा फाढ़ने के क्या टाइम लगेगा। मैं अपनी शक्ति इस काम में क्यों व्यय करूँ?

मगर कुत्ता भौंक ही सकता है। वह मंत्र नहीं बोल सकता, कहे तो भी नहीं बोल सकता। उसको रिश्वाना बेकार है। शंकराचार्य कल मुझे बोल दे थे, उन साधकों को, उन शिष्यों को ऐसा ज्ञान, ऐसी चेतना है कि उनकी साधना में न्यूनता हो भी तब भी उनको सफलता मिल जाए।

रह न्यूनता, वह तो रहेगी ही। मगर फिर भी सफलता मिले दोनों में विरोधाभास है। आप मंत्र बोले थाक से न बोलें और फिर भी सफलता मिल जाए।

अब विरोधाभास को मिटाने के लिए क्या किया जाए?

यह एक कठिन क्रिया है। मैं कहूँ कि तुम्हें इस प्रकार से छड़ा होना पड़ेगा और आप ८ माला के बीच ही घृटने टेक जर बैठ जाएं कि छोड़ो ६ माला ही बहुत हैं, आकाश में तो उड़ने से रहे, ये फालतू की बातें हैं। छोड़िए इसे। ऐसे कोई हवा में उड़ सकते हैं, दिमाग खुराक है तुम्हारा, फिर हवाई जहाज किस लिए बने। नुम सोचो ऐसा कैसे हो सकता है और तुम हनाथ निराश होकर रह जाने हो।

हनुमान जी के पास कोई हवाई जहाज तो या नहीं। जब लंका गए तो हवाई जहाज में तो बैठकर मग्न नहीं। वे तो उड़ कर गए थे। तो ये कैसे चले गए?

या तो पुराण गलत है या फिर हम गलत हैं। बायु बेंगके माध्यम से भी व्यक्ति गमनशील हो सकता है और होता है। आज से पचास मात्र पहले ही विश्वानन्द जी ने ये क्रियाएं करके दिखाई दीं। परंतु क्रिया करके दिखाई उसके बाद वे

से अपने  
तो वि  
का मतल  
उस संव  
है। शिष्य  
करना है  
में विज्ञा  
यह कर  
माध्यम  
शिष्यों  
है। यह  
ज्ञानिम  
में  
सफलता  
क्योंपि  
बहु न  
मन  
नहीं पि  
देता। जो य  
और उ  
पैदा ह  
वि  
राजम  
ते की  
जाए  
जैसा  
से क  
ग  
बद

बहुत नकलीक है पाए। यक्ष मिष्ट भी चेन से नहीं बैठ सके। घर में जो भी शिष्य आता वह बार-बार यही कहता कि करके दिखाओ। उन्हें भी लगा कि मैंने यह बहुत गलत कर दिया कि यह किया करके दिखा दे ऐसियाकल।

रखदे ज्यादा जरूरी है साधनाएं प्राप्त करना, परंतु उनमें भी ज्यादा जरूरी है साधना में सफलता प्राप्त करना। आपको सफलता एक नहीं, दो साधनाओं में प्राप्त करनी है। ऐसे साथ रहकर आपने कम से कम यी साधनाओं में भाग लिया होगा, पचास, साठ में भाग लिया होगा। आप में से कुछ साधकों को सफलता मिली, कुछ को नहीं मिल पाई।

हो कल शक्तिचार्य के साथ प्रृथम यही उठा था कि क्या कोई ऐसी युक्ति नहीं है कि एक बार के ही उन्हें सफलता दिला दें। उनको इह साधन हो जाए, जीवन का एक कर्तव्य एक धर्म पूरा हो जाए। शक्तिचार्य न कहा ऐसी तो कोई युक्ति है ही नहीं, ऐसी कोई विद्य ही नहीं है। ऐसा कोई मत्र नहीं है।

मैं कहा आप कुछ हनार वर्ष पहले पैदा हुए, मगर एक लोक ने इससे बहुत पहले पैदा हुई, पच्चीस हनार वर्ष पहले जारी पैदा हुए। यह मत्र जरूर है। मैं आपकी जात को काट नहीं रखा हूँ। मगर साधना में सफलता मिल देता भी है कि उसके लिये मैं न्यूनता रहे तो न्यूनता रहने द्वारा भी, पूर्ण बन जाए। ऐसी साधना भी है कि सफलता मिल भक्ते पूर्ण उनको।

मैं आपको बहुत यी उच्चकोटि की भाधनाएं दी और आपने बहुत गहराई के साथ प्राप्त की और मुझे विद्वास है कि आप अवश्य उन्हें करें। हो सफलता कला में ५० लड़के बैठे हों, दोस बाल हो जाएं, और तीस केल हो जाएं। मगर केल होने में उस अध्यापक की भी गलती है, शिष्य की तो गलती है ही।

यही प्रश्न विद्वामित्र के भी सामने उठा था और विद्वामित्र ने कहा कि मेरा एक भी शिष्य साधना में असफल नहीं हो सकता, क्योंकि मैं ब्रह्मण्ड की रक्षितों से उस मन को रखौं कर प्रसन्नत कर दूंगा कि सफलता मिले तो।

मन्त्रकिंसी जैसे नहीं बनाए अग्र नरेण ने बनाए होते तो विश्व उपनिषद होता, विद्वामित्र उपनिषद होता। उपनिषद तो लिखे गए वर उनका जान, उनके गेव ब्रह्मण्ड की राष्ट्रमया

उसने जप निर्मित हुए, और आज भी ब्रह्मण्ड को राशियों के माध्यम से लिंगित होता है।

विश्वामित्र ने उस मंत्र को प्राप्त किया जिस मंत्र के माध्यम से न्यूनता, कमी, उश्चलता, अशुचिता एवं अन्तर्ब पवित्रता की न्यूनता होते हुए भी व्यक्ति को साधना में सफलता मिल जाए और विश्वामित्र ने पहली बार उस मंत्र को उचागर किया। उसने शिष्यों द्वारा कहा गया वृद्धि कर गलती करो मंत्र में और वे तुम हैं सफलता देता

विश्वामित्र ने कहा प्रेसा कौस हो सकता है? आपने मंत्र दिया हम तो वह, मंत्र जप  
करना है। उसने कहा मैं तुम्हें यह एक्सप्रेसिट कर के दिखा देना चाहता हूँ ये  
के वैज्ञानिक भी हूँ। कथित हूँ, योगी हूँ, सन्यासी हूँ, मगर वैज्ञानिक भी हूँ वे र  
जह करके दिखा देना चाहता हूँ। और उसने उन शिष्यों को उस मंत्र के  
माध्यम से पूर्ण सफलता प्राप्त करके दिखा दी, कि वह मंत्र उपने आप में  
शिष्यों के लिए वरदान है और इससे उस साधना में सफलता मिलती है।  
वह मंत्र अपने आप में अद्वितीय है, उच्च कोटि का है पूरे जीवन को  
प्रदीप दनाने के योग्य है।

मैं आपकी भेन्दुरो समझता हूँ, भगवान्नहा हूँ कि, साधना करने हेतु  
सफलता नहीं मिल पानी मगर वहीं मिलती तो तुम्हारी गलती है दो  
बड़ोंकि जहा शरदा नहीं है, समर्पण नहीं है, तबां आनंद निरोदन नहीं है  
वह न्यूनता है।

मगर शब्द समर्पण होले शरा शा कमी कभी साधना में सफलता  
नहीं मिल पाती तो यह फिर उस राष्ट्रने भी दिखा दे। ताकि अपने  
देवा होगा कि मैं तैरी के साथ उस साधना तक बो देता चारा हूँ  
तो साधनाएँ पहले नहीं दे यहा था क्योंकि बात में कई प्रकार का  
जोर कठिनाइयों पैदा हो सकती है, जैसे शक्ताधार्य के सामने  
वेदा हुई, विशुद्धानन्द जो के सामने पैदा हुई।

विश्वामित्र ने इस प्रकार उस मंत्र की रचना की, ब्रह्मण्ड को  
राशियों के माध्यम से कि प्रियती भितनी भी साधना है। शिष्यों  
ने की उन साधनोंमें भी शिष्यों को पूर्ण सफलता प्राप्त हो दी  
जाए। इसमें असम्भव या संदेह कुछ हो ही नहीं सकता। उसे भव  
वैसा शब्द फिर जीवन में नहीं नहु सकता। ऐसा मैंने शक्ताधार्य  
रखे कहा।

शक्ताधार्य ने कहा- यह सही है, उन्होंने इत्यान लगासे के  
बाये रखे जन्मव किया।

आपके है, प्राणश्चे मगर य प्रसन्नता, शंकरा शिष्य कम जीवन में और य साधना विद्या व हमें और दीक्षा विवेकानन्द पीठने वा रखता है थो। राम पूर्णरूप विश्वितय तो वे का मुह से बालग जाते

ये न सकता, मगर कु सातो च है। एक मैं पू में केद ह कहते हैं आप ए यह कौ वह जलानी है गी न है क्यों

यह मंत्र गुरु ने नहीं दिया तो वाकों की सारी साधनाएं अपने आप में न्यून रह जाएंगी, समाज नहीं होगी, ये साधनाएं गलत नहीं हैं, मगर इष्टदाता जाप इसनी सीढ़ता से उन्हें कर नहीं पाए। अगर मैंने कभी आपको कुछ मिमट पंजों के बल खड़ा किया तो उसमें पांच ब्राह्मण आपकी देहा दिक्षा, घर में भी टिकेगी और फिर साधना में सफलता नहीं मिलेगी तो मंत्र मेरा झूठा हो जाएगा। आप कहेंगे कि इसका हो कुछ नहीं।

इसलिए साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो उस प्रयोग को अपने करनाना भी गुरु का चर्तव्य है। सारी साधनाओं का निचोड़ वही है कि गुरु साधना में सफलता के लिए वह प्रयोग है जो विज्ञानित ने ही बहनी और अंतिम बार कराया। उसके बाद ब्राह्मणों को दिया ही नहीं गया। वह साधना गुरु अवश्य संपन्न कराए। सत्ते प्रयोगों से बढ़ कर भी यह प्रयोग है कि इससे पहले जिसने भी आपने प्रयोग किए उनमें भी आपको सफलता मिले।

आप मुझे छिर मिले तो बता सके कि गुरुदेव इसमें भुझे यह सफलता मिली। एक भी शिष्य अनुसार मिले न मुझे, कोई न कहे कि गुरु जी मुझे सफलता ही नहीं मिली। ऐसा ही चाहता ही नहीं है। शिष्य को मैं दिल्ली पुरुष बनाना चाहता हूं, शिष्य नहीं रखना चाहता हूं।

मैं शंकराचार्य के समान यह नहीं कहना चाहता हूं कि शिष्य शब्द निकृष्ट है, मैं कहता हूं कि शिष्य जैसा उच्च कोटि का कोई शब्द ही नहीं है। अद्वितीय शब्द है। और उसे सिद्धि पुरुष बनाना मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य, मेरे जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है और विज्ञानित के इस गोपनीय प्रयोग को मैं वे देना चाहता हूं।

मैं नहीं चाहता कोई शिष्य खाने हात रहे, दस-पांच साल जुड़ने के बाद फिर इनके मन में संशय जैसा शब्द हीन ही नहीं चाहिए। मैं इनको कहता हूं दिल्ली पुरुष बनो। कैसे लगेंगे ये क्योंकि इनकी न्यूनता तो रहेगी, घर की समस्याएं तो रहेंगी।

उन समस्याओं को मिटाते हुए मैं इनको सिद्धि प्रदान करूं चाह महा लक्ष्मी साधना हो, चाहे एश्वर्य लक्ष्मी साधना हो, चाहे महाकाल साधना, चाहे गुरु द्वयश्वर धारण साधना हो।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है या समझाए पूरे जीवन का निचोड़ है जो आपके लिए भल्यत महत्वपूर्ण है।

मैं आपको हवय से आशीर्वाद देता हूं कि यह प्रयोग आप गुरु से अवश्य प्राप्त करें और उसमें पर्णता प्राप्त करें।

जानके इरीर में एक दिव्यता है, एक चेतना है, बस यह है, कि उसे जगाया नहीं गया। आपके अंदर साधकत्व है, जानके चेतना है मगर उसे उत्सवित, नहीं किया गया है।

मगर नब गुफ में नहीं जुड़े थे और आज के बहारे में आपके बहुत जमीन आसमान का अंतर है, एक जनना, एक मुस्कुराहट है, एक छलछलाहट है।

शक्तिचार्य की व्यथा से व्यथित होना स्वास्थ्यिक था, मगर मेरे जीवन में ऐसी घटना की कोई विषय कमजोर निकले या घटिया निकले, मेरे सामने तो पूरे जीवन में ऐसा हुआ नहीं, सन्यास जीवन में तो, हुआ ही नहीं और जो आज से ५० साठ साल पहले जुड़े थे के आज भी जुले हैं।

और गृहस्थ शिष्य भी जुड़े हैं। एक-एक शिष्य ने एक एक प्रात को समाप्त रखा है साधना शिविरों के लिए।

ऐसा जगता है उनमें ऐसा जोश है ऐसी उमंग है, ऐसा खेता है कि वे कहते हैं  
हमें और कुछ काम करना नहीं है बस आप इमें आजा है क्या करना है?

दीशा और साधनामों के माध्यम से ही चेतना पास हो सकती है। विवेकानन्द ने राजयोग दीक्षा के बारे में वर्णन किया है। मगर मैं लकीर  
चीटने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, मैं विवेकानन्द के प्रसि विनीत भाव  
सखता हूँ मगर उनको सही ढुंग से राजयोग दीक्षा प्राप्त हुई नहीं  
है। राम कृष्ण परमहंस अत्यंत उच्चकोटि के विद्वान् हैं मगर  
उसी रूप से कुण्डलिनी जाग्रत हुई नहीं थी उनकी। उनको तो  
नियन्ति यह थी कि वे कहीं गए और किसी ने बोल दिया काली,  
तो वे काली बोलते ही बेहोश हो जाते थे मूर्छा आ जाती थी,  
मुँड से झाग निकलने लग जाते थे और काली काली चिल्लने  
लग जाते थे।

ये नहीं है कि वे संत नहीं थे, उन जैसा संत नहीं मिल  
सकता, भगले २०० साल में भी ऐसा संत पैदा नहीं होगा।  
मगर कुण्डलिनी जाग्रण अपने आप में एक अलग किया है,  
सातों चक्र जागृत हो जाना जीवन का उच्च कोटि वा पर्याय  
है। एक जीवन की श्रेष्ठता है।

मैं पूरे ब्रह्माण्ड में घूमने वाला व्यक्ति एक ८ फुट की कार  
में केद हो कर रह गया। यह मेरी कोई उत्तिन नहीं हुई। सन्यासी  
कहते हैं यह उत्तिन कहां से है। एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर  
आप एक सेकेप्ट में चले जाते थे, अब आप कार में घूमते हैं,  
यह कीन सी आपकी विशेषता है?

वह कार क्या कार आएगी, वह कार न तो मेरे साथ  
जाएगी, न यह मकान जाएगा, न यह घर जाएगा। यह जीवन  
है ही नहीं, तो कैड मुझे इस जीवन में इसलिए रहना पड़ रहा  
है क्योंकि इसके लाय मेरे गृहस्थ विषय जुड़े हैं और तुम

शिष्यों से, साधकों से और साधिकाओं से कुछ ऐसा नुडाव, कुछ ऐसा पटेचमेंट सा बन गया है- या तो मैं बहुत ज्ञाना 'भावुक' हूँ, या आपने मुझ पर कुछ कर दिया कि मत्रों से उसे अलग नहीं कर सकता। कोई वशीकरण कर दिया है। कोई तोड़ ही नहीं है मेरे पास। कई बार उस वशीकरण का तोड़ने की कोशिश की कि छोड़ा जब घरबार की चिंता नहीं है तो इनका चिंता छोड़े।

मगर उपर वशीकरण पर्याप्त बहुत स्ट्रोग है, आपके लाल है तो मुझे भी सिखा दें। बहुत कमाल का वशीकरण किया है।

उन सम्बद्धियों से कहा जैने मेरे शिष्यों की आखों में आसू होते हैं, उनका गला संघ जाता है, वे धार विडल हो जाते हैं और बिना देखे रह नहीं पाते हैं, अपने जीवन की होम देते हैं, ठीक है उनकी विवशताएं हैं, मजबूरियों हैं, मैं इस बात को अमज़दता हूँ। मृहस्य की मजबूरियां होती हैं, संन्यास की भी मजबूरियां होती है मगर संन्यासी मजबूरियों से बंधे नहीं हैं। आप मृहस्य मजबूरियों से बंधे हैं- यह आपकी कमजोरी है। क्या हो जाएगा अन्न आप मजबूरियों को तोड़ दें, क्या हो जाएगा अगर आपके पास केडिलेक गाढ़ी हो, गाढ़ी तो गाढ़ी है चाहे, सीधेलो हो फोड़ हो या केडिलेक हो, मैं तो बैलगाढ़ी में भी बैठा था और उसमें भी मुझे एक आनन्द आ रहा था, और आज सीधेलो में बैठता हूँ तो भी आनन्द आता है। वह मेरे जीवन का पर्याय या हेतु है ही नहीं। मुझे कोई होटल में जाने में आनन्द होता ही नहीं, मगर जब साधकों के बीच होता हूँ तो मैं चाहता हूँ कि तोसरा कोई व्यक्तित्व क्या हवा भी बीच में नहीं आए।

शंकराचार्य की मृत्यु नहीं हुई एक युग की मृत्यु हो गई, यह गोविंदपादाचार्य ने कहा अपने शिष्य के लिए। एक व्यक्ति को नहीं मारा, पूरा एक युग अधिकार में ग्रस्त हो गया, और वास्तव में अधिकार में ग्रस्त हो गया क्योंकि शंकराचार्य के बाद में कोई जान और चेतना देने वाला नहीं रहा। राजपूत युग आ गया, और राम, रंग, थोग, विलास और ऐशो आशम में लोग इब गए, मुगल काल आ गया उसके बाद रक्त पान हुआ और अनेकों हमले गंद खेल हो गए। अंग्रेज आए और भव कुछ अधिकार में ग्रस्त हो गया।

शंकराचार्य के बाद ज्योति बंद हो गई, गोविंदपादाचार्य में बिल्कुल सहाज हो गया। उन्होंने कहा- यह व्यक्तिसंकी मृत्यु

नहीं एक यु  
वरण स्थान  
नहा है। व  
कहे जन्मी  
से लगाया  
एक स्वर्णी  
के शब्दों  
कातरता  
किलनी क

में तो  
मास करें,  
न कम्पन  
जीर सम्प  
या तो मु  
और  
ज्ञाना है।  
जब नो  
गा। जह  
आएगा,  
जहां भी  
इस  
है नहीं  
क्यो?

पराम  
इनाम  
मिल  
जिलेग  
ग्रस्त ह  
जिरह  
आप।

क्या  
ज्ञ  
उन्हों  
म  
एक

— उक्त युग की मूल्य है। और उन्होंने कहा कि जिसने भी शंकराचार्य का जन्म स्वर्ण किया है वह अपने आप में उच्च कोटि का व्यक्तिनाम बन जाता है। हाय मिलामा, भूजाओं में भर लेना, यह तो शायद कही, अहं जन्मों का पुण्य होगा, कि किर्ति ने शंकराचार्य को अपने सीने में जन्मा दी गया, अपनी बाजों में अपेक्षा होगा वह तो जीवन का एक व्यर्जित प्रभात होगा। और बास्तव में ही मैं गोविदपादाचार्य के जन्मों का एहसास करता हूँ कि उसके बाधी में कितनी कलताहा होगी, कितना दुख होगा, कितनी वेदना होगी, जिसमें कठिनाई में उत्थ गिर्ज्य को जूझार बनाया होगा।

— तो चाहता हूँ कि आप सब भी उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करें, सब के सब सफलता प्राप्त करें क्योंकि कोई बेटा न जपूत होता है न सपूत होता है, उसकी प्रवृत्तियां कपूत और सपूत होती हैं। वह अपने अपने पोग भोगता है, वे शिष्य या तो मुझे सुख देंगे या दुख देंगे, कीच में कुछ नहीं रह पाएगा।

— और दुख देंगे तो भी मैं मांग नूँगा, क्योंकि दुख तो कई बार आता है। मैं जब पैदा हुआ तो दुख और बेदना मेरे साथ पैदा हुइ, जब तो जुड़वे भाई हैं या बड़न हैं उन्हें मैं छोड़कर भी कहाँ जाऊँगा। जहाँ भी जाऊँगा कोई न कोई बेदना आएगी, कोई न कोई दुख जल्दा, समर्थ्या आएगी। भाई-बहन हैं तो पास मैं बिडाता हूँ उनको। जहाँ भी जाऊँगा हूँ घटे के बाद कोई नहीं समर्थ्या आती है।

— इस बात की मैं वित्ता नहीं करता हूँ। और उग्र समर्थ्या-बाधा आएगी तो नहीं तो मेरे मनुष्य जीवन की सार्थकता ही क्या है। किर मनुष्य बना दी क्यों? जीवन में बाधाएं अड़कने जाएं और उनको हम पार करें, समुद्र की लहरें आएं दबास फुट की और हम उन्हें पार कर सकें यह हमारे जीवन की श्रेष्ठता है, उल्लत है, उनारा बाधकत्व है।

— मिलने में इनना आनन्द है हो नहीं, विश्व में जो आनन्द है वह एक अन्त आनन्द है। एक इंतजार रहता है कि फिर मिलेगा जिसने गृथ लिखे गए हैं वे सब विश्व में लिखे गए हैं, मिलन का तो कोई गृथ है ही नहीं। मिलन हुआ, आया जिन लिए बस आगे कुछ नहीं। विश्व में होता है कि बड़ा आएगा, वधर से आएगा, ऐसा करेंगे, खाना बना देते हैं। विश्व में तो सुख ही सुख है, मगर विश्व के बाद मिलन भी होना चाहिए। ऐसा नहीं कि जीवन में विश्व ही करते रहे उपाय। वह नुम्हारे लिए नहीं भेर लिए शक्तीकर हो जाएगा। यानी मुझसे प्रेम करना ही नहीं जा, मुझ से दर रहना भी, किया तो और उड़ समर्थ्या मन पैदा कर दिना मेरे लिए।

— वह एक चेहरा मुझे याद है, मर्झ अल्पों में प्रत्येक का लिल है, मेरी आखों में अगर आप देखते हो प्रत्येक का फोटो उनमें दिखाव देगा भाष्यको।

— मैंने राजनीति दीक्षा के बारे में बताया और उससे भी उच्च कोटि की दीक्षा आज तक छिन्ने 1000 रुपयों में कोई गुरुदेह ही नहीं पाया। शंकराचार्य जिससे मेरे तरसते रहे कि मझे राजनीतिक दीक्षा मिले, पर गोविदपादाचार्य ने

कहा यह दीशा में नहीं इसकता, क्योंकि मैं अधिकत नहीं हूँ।  
आप अकर भाष्य परे ।

गांधी जी निवारी भर भटकते रहे, उन्होंने चाहा कि मेरा  
राहस्यर जापत जो। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है कि मैं  
किया थोड़ा दीक्षा नं। और उसके लिए कहे भन्यामियों ने गांधी  
जी मिले मरम-उन्होंने कहा किया थोग हम आपको सिखा ही  
नहीं सकते, हम आता ही नहीं।

किया थोग ऐसा जान भीर किया थोग ये भी कई शून ऊना  
राज थोग वह प्रत्येक की बस की बात नहीं कि राज थोग दीशा  
हे यहके। बहुत एकदम से घपकता हुआ धोला दोनों जाटिएँ एक  
माधना की उर्वा, एक तपस्या दोनों जाहिए तब यमयोग दीक्षा  
ही या सकते हैं।

अकर भाष्य में लिखा है।  
विनियोगवाले भवनों के बाय  
भाष्यहीन सदिते सद्य  
अजान त्याम गुन्त्याम पव शिष्य  
इत भाष्य मेव शाकर शुकर

हे अकर नुम हन भाष्य हो, सुमहारा भाष्य ही नहीं है, तुम  
राज्याधियक दीक्षा देना चाहते हो और शुकर ने ही नमा बर  
दिया, शुकर जो रुद तकी प्राप्त होने वह मुझको कहाँ से क्लाँ ? ये  
और किस नुम के पास जाऊ क्योंकि मूँहे और काँड़े गरु दिस्यावै  
जहाँ दे रहा है। राजयोग तो मैं समझ लूँगा पर राज्याधियक के  
विना तो जीवन अधुरा है, अपर्ण हे उस जीवन का पिर मतलब  
नहीं है।

और उस समय ऐसा गुरु था नहीं जो कह सके कि  
राज्याधियक क्या नमादाधियक दे सकता है। आज के युग की  
समादाधियक। क्या जाकाप्राधियक हीला ये देंदेंगे। मगर वह  
भलपता था। गविदपादचार्य ने कहा, शोकर में राज्याधियक  
दीक्षा डस्तिए नहीं दे सकता है क्योंकि मुझ रुद को ही नहीं  
आनी। मैं अपनी तपस्या की वधकरी आवा तरह जीपरा नहीं  
सो सो आएगा। पूरी ज्यादा जीपनी पड़ी नुम्हे। मैंने नुम्हे राजयोग  
दीक्षा दी है उससे भी नम परे भारत वर्ष में दिन ले जाओया।

आप इन दीक्षाओं से, प्रयोगों से बंसात नहु जाएं गुरु  
से क्षवश्य प्राप्त करो।

और इन  
है। आप  
पूरी दुनि  
उम ब्रा  
यति क  
नहीं। ३  
मैंने  
से देरा  
हूँ, डल  
दीक्षा है  
वे  
व्यक्ति  
हो रही  
व कह  
है, हम  
देते रहे  
है, हम  
ओ  
साधन  
क्योंनि  
बस्तु  
आपके  
आपवा

और इतने चामान्य, सहज रूप में प्रयोगों को प्राप्त कर लेना आपका सीधार्थ है। आप तो केवल भारत वर्ष से परिचित हैं। मैं पूरी पृथ्वी से भी परिचित हूँ, पूरी दुनिया से भी परिचित हूँ, पर पूरी दुनिया को भी उपर एक छड़ाण्ड है। तब छड़ाण्ड से भी परिचित हूँ। और सारे छड़ाण्ड के अपि मुनि, योगी जैसे कह रहे हैं कि आप जैसा अज्ञानी व्यक्तिस पृथ्वी पर पैदा हुआ ही नहीं। अरे आप ये वीक्षाएँ ऐसे कैसे दे रहे हैं?

मैंने कहा- किर कैसे देना चाहिए? मैं दे रहा हूँ और भड़ा नरोंके से दे रहा हूँ। मैं शिविर लगाता हूँ। मैं चलाता हूँ। खाना खिलाता हूँ। छलचा खिलाता हूँ। और देता हूँ।

वे कहते हैं आप जैसा व्यक्ति सब गडबड है! गडबड हो रही है। हो रही है तो। होने दौरिये, वे कुहते रहेंगे, क्योंकि गुफाओं में बैठे हैं, हम मुस्कुराते रहेंगे, क्योंकि हम दीझा देते रहेंगे, लेते रहेंगे, वे अपना काम कर रहे हैं, हम अपना काम कर रहे हैं।

और वास्तव में वे धन्य हैं जिन्होंने साधकत्व में अपना नाम लिखाया है व्योकि मैं उनको खिलकुल अमूल्य बस्तुएं देता ही रहूँगा। ये साधनाएँ आपके जीवन की धरोहर होंगी, ऐसा ही आपको आशीर्वाद देता हूँ।

-सदगुरवेद परमहस  
स्वामी निरिखलेश्वरानन्द जी

# स्वर्था गोपनीय भगवती महालक्ष्मी के

## 108

# सिद्ध सचेट सफल प्रयोग

दीपावली पर्व हर वर्ष आज्ञा है और सब जानते हैं कि यह भगवती का पर्व है आप करने लेकर भी नये बर्तन सिलबाते हैं, अनावश्यक खुर्च करते हैं और इसके लिए कर्न भी लेना लड़ता है। वास्तव में दीपावली मनाने की परंपरा तो भगवान राम के युग से प्रारंभ हुई लेकिन आप यह भी जानने का प्रयत्न करें कि वास्तव में दीपावली क्या है?

दीपावली का तात्पर्य है कि दीपक का प्रस्तुतन करना, ऐसा दीपक जो आपके जीवन में उच्चति बिल्कुल रहे। जीवन में कभी भी अधकार स्थिति नहीं आए और यह किया केवल दीपक

जलाने से संभव नहीं है, यह किया तो सभव है जब आप अपने आप को आत्म दीपक बनकर प्रनवलित करें और पूर्ण रूप में साधक बनें।

आश्विन, कानिंह की ओर मार्गशीर्ष मास साधवात्मक कल्प कहे जाये हैं। इन तीन महीनों में साधक का ज्योत्स्ना-से-ज्योत्स्ना ध्यान साधना की ओर होना चाहिए व्यक्ति यह तीन महीने शीघ्र करतु और सरल जटु का संक्रमणकाल है और इस काल में की गई साधनाओं में सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

जीवन में लक्ष्मी का तात्पर्य केवल धन से ही नहीं है लक्ष्मी

ज्ञानपर्यं है जीवन में सातों सुख विद्यमान रहे। यह सातों सुख है निरोगी काचा अर्थ प्राप्ति, संतान प्राप्ति, सुखी गृहस्थ जीवन, स्वयं का घर, श्रेष्ठ मित्र और आश्चर्यात्मिक उत्तरि। इन्हें साधनाओं के इन सात स्वरूपों के संबंध में आपको बात-बात कहा जाता है।

वे समस्त १०८ प्रथोग पिछले प्रयोगों की पुनरावृत्ति नहीं हैं, बरन इनमें से प्रत्येक प्रयोग सर्वथा नवीन है जो पूरे वर्ष भर लें पर करने व योगीजनों से विचार विनाश करने के बाद ही अक्षयित किये जा रहे हैं।

### गुणनिधि यंत्र

१. गुणनिधि यंत्र वास्तव में नवनिधि यंत्र ही है जिसकी स्थापना नात्र ही पर्याप्त है।
२. गुणनिधि यंत्र को दूकान अथवा फे कटरी में रखने पर अनावश्यक विद्वन्-बाधाओं, उपद्रवों से पूर्ण मुक्ति मिलती है।
३. यहाँ एक मात्र ऐसा यंत्र है जिसकी स्थापना रे जगा पूजी में निरंतर वृद्धि होती ही रहती है।
४. गुणनिधि यंत्र की यह भी विशेषता है कि यह अन्य यंत्रों के विपरीत केवल साधक के प्राणों से ही सम्बंधित न होकर पीड़ियों तक के लिए लाभदायक होता है।
५. गुणनिधि यंत्र ही वह यंत्र है जिसके ऊपर भूमर्भ साधन सफलतापूर्वक संरचना की जा सकती है।

साधना साधनी-१५०/-

### यन्त्रविधिणी यंत्र

१. यह में यदि आय का स्थायी स्रोत न हो तब दीपावली के दिन इसकी विधि विधान से स्थापना अवश्य ही करनी चाहिए।
२. वेरोनगार युवकों को इसी यंत्र की पूजा करने से अन्यन्त श्रेष्ठ फल हीद ही प्राप्त होता है।
३. यदि आय का स्थायी स्रोत ही किन्तु धन टिकला न हो, तब उसी यंत्र पर दीपावली की रवि में ग्यारह लघु नारियल निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ावें।

### मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीये नमः

४. उच्चार सकल यह स्थापित करने के लिए यन्त्रविधिणी यंत्र

को उच्चकोटि का यंत्र माना गया है।

५. यह यंत्र की दूसिंहिक सुख का भी प्रतीक है।

साधना साधनी-२७९/-

### रत्नपात्र

६१. समुद्र से प्राप्त होने वाली यह प्राकृतिक वस्तु साक्षात् लक्ष्मी की सहोदर (भाइ) ही कही गई है।
६२. रत्नपात्र अपने आप में अपने नाम के ही अनुरूप गुणों (रत्नों) का संग्रह एवं रुक्म-सोमग्य का स्वापन ही है।
६३. रत्नपात्र में यदि चावल के कुछ बिना टूटे दाने रख रफेद कपड़े में बांध अनाम के भण्डार में रख दिया जाए तो साक्षात् अच्छार्णों का ही वास होता है।
६४. प्रत्येक लक्ष्मी साधना में रत्नपात्र की उपस्थिति उतनी ही आवश्यक मानी गयी है, जितनी शालीग्राम की।
६५. यदि दीपावली की रात्रि में इसे सामने रख एक माला निम्न मंत्र की सम्पत्ति कर ली जाए तो धन-सम्पत्ति में स्थापित प्राप्त होता है।

### मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

रत्नपात्र न्यौदावर-६०/-

### स्वर्णचक्र

६६. दीपावली का पूजन वास्तव में इसकी स्थापना के बिना अधूरा ही है।
६७. स्वर्णचक्र वास्तव में भगवती लक्ष्मी के बनेकबिणी स्वरूप का एर्णता से स्थापन है।
६८. जैन तंत्र ला नो आशार ही है स्वर्णचक्र, जिसके माध्यम से वे चक्रवरी देवों की स्थापना कर अनुलानीय ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं।
६९. यद्यपि तंत्र ही भी समरस उच्च कोटि की लक्ष्मी साधनाओं का आधार यही चक्र है, जिसके माध्यम से धर में धन-धान्य की कमी भी कमी नहीं होती।
७०. उच्च कोटि के वैष्णव व साधक इच्छ भगवान् श्री विष्णु के चार आशुयो-शंख, चक्र, गदा, पद्म में एक अर्थात् चक्र का प्रतीक मानते हैं, जिसकी रथापना मात्र से ही सुख-सौभग्य की प्राप्ति एवं दिव्यों की समाप्ति होती है।

स्वर्णचक्र-१२०/-

श्रीआश्चर्यविधिणी

२१. सीधभास्यवधिनी विद्याद्वित महिलाओं के लिए तो एक बरदान ही है, जिसको धारण कर वे जग्हण्ड सीधभास्य की स्वामिनी बनी रह सकती हैं।

२२. जिनके मास्यवय में बार-बार अड़चन आ रही हो उनके भी इसी रत्न को अंगूठी में जड़वा कर धारण करना चाहिए।

२३. व्याघ्रारिक जीवन में प्रगति सक गई हो, प्रभेशन निवित में होते हुए भी न मिल पा रहा हो तब दीपावली की रात्रि में इसका पंचोपचार पूजा कर धारण करना एक पर्याप्ति उपाय है।

२४. राज्य-बाला हो अथवा राज्य-पक्ष की ओर से किसी सकट में फस गये हों तथा घर की सम्पत्ति नष्ट हो रही हो तब इसी रत्न को एक पीले बस्त्र में बांध किसी अशोक वृक्ष के नीचे बढ़ा देना चाहिए।

२५. कई कई नवयुवक इन्टरव्यू अथवा रव्य व्यवसाय धारण करने के प्रयास में राफलता के बहुत निकट पहुँचने के बाद भी असफल रह जाते हैं, जब भी चाहिए कि वे इसी रत्न का पूर्विका में जड़वा कर दें।

सीधभास्यवधिनी-१०/-

### श्रीरोदम्बा

२६. श्रीरोदम्बा कास्तव में लक्ष्मी का अन्यन्त प्रखर एवं तीव्र स्वरूप है, जिसके आगमन भाज से ही घर में आय के अनेक स्रोत उत्पन्न हो जाते हैं।

२७. समूद्र के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण यह अपने साधनात्मक प्रभाव में रत्न के समान ही फलदायी एवं महत्वपूर्ण है।

२८. यदि दीपावली की रात्रि में इस पर एक कमल चढ़ा कर विधिवत पूजन किया जाए तो 'श्री' का स्वाधीन वास होता है।

२९. पीली परसों पर स्थापित कर दीपावली की रात्रि में इसका पूजन करने से घर में व्याप संत्र दोष आदि समाप्त होते हैं।

३०. घर की तिजोरी में इसे स्थापित करने पर यदि कोई बन्ध प्रयोग किया वा कराया गया होता है तो समाप्त होता है।

३१. इस दुर्लभ वस्तु का स्थापन केवल घर के धन रखने के स्थान में ही करें, फक्टरी अथवा बुकान में नहीं।

श्रीरोदम्बा-६०/-

### हीं यंत्र

३२. जिस प्रकार 'श्री यंत्र' की महिमा अपने -आप में अवर्णनीय है ठीक उसी प्रकार 'हीं यंत्र' की स्थापना भी उच्चकोटि की यंत्र स्थापना है।

३३. उच्चकोटि की लक्ष्मी साधनाएं 'हीं यंत्र' की उपस्थिति में ही सम्पन्न हो पाती हैं।

३४. 'हीं यंत्र' घर लक्ष्मी पूजन करने से आकस्मिक धन प्राप्ति की सम्भावनाएं प्रबल होती हैं।



३५. दीपावली की रात्रि में यदि इस पर चार लघु नारियल बड़ाकर स्फटिक माला से 'हौं श्री श्री' मंत्र की एक माला जप सम्पन्न कर लिया जाए तो चारों पूर्णषाश्रों की प्राप्ति होती है।

३६. 'हौं यंत्र' प्रबल रूप से तांत्रिक प्रयोग निवारक यंत्र भी है, जिसकी स्थापना से धर्म में सुख-शांति की स्थापना होती है।

३७. लक्ष्मी का 'हौं' स्वरूप प्रबल रूप से शैतानिक सुविधाओं की सामग्री प्रदान करने वाला है और इसी लक्ष्य की पूर्ति इस यंत्र के स्थापन से होती है।

३८. अविवाहित युवतियों द्वारा 'हौं यंत्र' पर की गई साधना शोष ही सूखोग्य वर दिलाने में सहायक होती है।

३९. मानसिक हीनता का साधन, तनाव तुक्कि एवं मानसिक दोषबल्य के नाश के लिए भी लक्ष्मी का 'हौं' स्वरूप की साधना इसी यंत्र के माध्यम से करनी चाहिए।

साधना सामग्री- ३००/-

मंत्र

ॐ हौं महालक्ष्मी नमः

४५. यदि वैष्णव साधक हो तभ्य भगवान् विष्णु (अथवा उनके किंवद्दि श्री अवतार) की शक्ति के रूप में यहीं गुटिका स्थापित करनी चाहिए।

विष्णुप्रिया गुटिका- ६०/-

स्फटिक माला- ३००/-

नमदिश्वर शिवलिंग

४६. भगवती महालक्ष्मी के 'हौं' स्वरूप की साधना का रहस्य भगवान् शिव का ही साधना में निहित है।

४७. नमदिश्वर शिवलिंग पर पूरे कान्तिक माह चावल के ३०८ लिना टूटे थाने चढ़ाने से अद्भुत लक्ष्मी का आगमन होता है।

४८. नमदिश्वर शिवलिंग पर यदि दीपावली की रात्रि में १०८ कमलशंख के बीज निम्न मन्त्र द्वारा घड़ाए जाएं तो पूर्ण रुचस्त्रीभाग्य य चिरस्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मंत्र

ॐ श्री श्री लक्ष्मी आगच्छ फट्

४९. दीपावली की रात्रि में नमदिश्वर शिवलिंग का अधिष्ठेक मूलाच के १०८ पुष्पों द्वारा करने से शोष ही उत्तम कोषि का स्व-भवन निर्मित होता है।

५०. पारद महालक्ष्मी के संग नमदिश्वर शिवलिंग का पूजन करने से साधक को भविष्य में रसेश्वरी विद्या की पूर्णता से प्राप्ति होती है।

५१. नमदिश्वर शिवलिंग के रूप में लक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से धन-प्राप्ति के मार्ग में जाने वाली जनेक बाधाएं स्वतः समाप्त होती चलती जाती हैं।

नमदिश्वर शिवलिंग- ६०/-

१०८ कमलशंख के बीज- ३००/-

पद्मावती फल

५२. समलूप तांत्रिक लक्ष्मी साधनाएं पक मात्र इसी फल के सम्बन्धमें सम्पन्न की जा सकती हैं।

५३. यदि व्यापार बंध प्रयोग करा दिया गया हो अथवा अन्य किंवद्दि प्रकार से व्यापार को विरोधियों द्वारा नाश दिक्खाया जा रहा हो, तो दीपावली की रात्रि में तुकान में इसी फल को गूम स्वप्न से स्थापित करे या नदी के नीचे

तात्रोक्त  
 ६०. स  
 प्रा  
 ६१. दी  
 वी  
 पू  
 सु  
 स  
 ६२. ता  
 मे  
 मे  
 है  
 ६३. या  
 म  
 त



शाश्वते।

५४. यदि क्रण लिया हो और लौटा न रहा हो तो ! एक पद्मावती फल लेकर उसे लाल कपड़े में बोध दीपावली की रात्रि में किसी निराहे पर रख आए।

५५. यदि सदैव दरिद्रता जैसी स्थिति बनी रहती हो तो एक पद्मावती फल लेकर उसे लाल कपड़े में गृह्य, दाँवी भूज पर भारण करे।

५६. यदि किसी ने क्रण लिया हो और लौटा न रहा हो तो पद्मावती फल के साथ नाम्बूदित व्यक्ति का नाम लिख खेद भागे से बोध उसके वरदान पर डाल आए।

५७. कहते हैं दीपावली की रात्रि में पद्मावती फल मनोवांडित स्त्री को किसी प्रकार भेट देने पर वह शीघ्र ही वशीभूत होती है।

५८. जहां किन्होंने व्यक्तियों अथवा किसी लड़के युव लड़की के मध्य सामाजिक दौष्ट भे मतभेद घैदा करना नेतिकृत पूर्ण हो, वहां वा पद्मावती फल रख्ये के नीचे

कागज पर अन्वेषित नाम लिख मूँगे की माला से अवृत निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें एवं दोनों को नाम सहित काले कपड़े में बोध दीपावली की रात्रि में ही अमरान अथवा किसी सुन्दराम स्थान पर येक आए तो दोनों में मतभेद आगम्भ हो जाता है।

### मंत्र

ॐ श्री कल्पी महालक्ष्मी नमः

देववश उद्योग व्यवहार में किसी को हानि पहुँचाने की दृष्टि से इस प्रयोग की कोई उपदोषिता नहीं सिद्ध होती।

५९. यदि पद्मावती साधना की पूर्ण देववर्य छेतु सिद्ध करने की आकोश्चा हो तो प्रति दिन की पद्मावती साधना से पूर्व इसी फल के समझ निम्न मंत्र का इक्कीस बार उच्चारण करे।

### मंत्र

ॐ श्री

पद्मावती फल - ६९/-

मूँगे की माला - ₹ ५०/-

### तांत्रोक्त गुटिका

६०. समस्त प्रकार की व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा का तांत्रोक्त उपाय है तांत्रोक्त गुटिका।
६१. दीपावली की रात्रि में एक तांत्रोक्त गुटिका रखने, तेल का दीपक लगा, उसका तेल मिश्रित सिन्धुर व भक्षण से पूजन कर, शनु के नाम के साथ किसी सूखे कुए अथवा सुनसान रुधान पर ढाल आने से शत्रु संकट का समाधान प्राप्त होता है।
६२. तांत्रोक्त गुटिका तात्रीज में धारण करने अथवा पूजा स्थान में स्थापित करने से आकृत्यिक धन प्राप्त की साधनाओं में सफलता की सम्भावना दस गुनी अधिक हो जाती है।
६३. यदि मृठ प्रहार की आशंका रहती हो अथवा पहले से ही मृठ प्रयोग की आशंका हो तो दीपावली की रात्रि में एक तांत्रोक्त गुटिका अपने मुख्य द्वार की चौराखट के सामने

**दीपावली कल्प यह एक ऐसा  
अवसर है जबकि किए गये  
प्रयोग असफल हो ही नहीं  
सकते। ये लक्ष्मी के १०८ प्रयोग  
पूर्णतः प्रमाणिक हैं और इनके  
द्वारा जीवन में पूर्णता समृद्धि  
ऐश्वर्य धन एवं मानसरूपान  
अवश्य ही प्राप्त हो सकते हैं। ये  
प्रयोग आप पूर्ण श्रद्धा समर्पण से  
कार्तिक मास और मार्गशीर्ष  
मास में संपूर्ण कर सकते हैं।**

गाड़ दें।

६४. जिस घर में भी तांत्रोक्त गुटिका होती है वहां धनाश्रम के मार्ग में कोई दैवी बाधा आ नहीं सकती।
६५. तांत्रोक्त गुटिका अपने-आप में पूर्ण पौरुष प्रदायक, सुखदाता भी कही गयी है।
६६. किसी भवन का निर्माण प्रारंभ करते समय जहां नींव में सुख-शांति हेतु 'श्री यंत्र' स्थापित करने का विधान है, वही भूमि के चारों कोनों पर एक-एक तथा एक मश्यमै (अर्थात् कुल पांच) तांत्रोक्त गुटिका स्थापित करना, भवन को तंत्र दोषों से सुरक्षित करने का उपाय है।
६७. प्रबल तांत्रोक्त साधना सामग्री होने के कारण इस को घर में स्थापित करने पर यह समस्त प्रकार के भय का भी नाश करने में सहायक है।

तांत्रोक्त गुटिका - ६०/-

### भोगवरदा

६८. समस्त प्रकार के भोणों व सुखों की जीवन में दृढ़ता भोगवरदा के माध्यम से ही सम्भव है।
६९. शेयर मार्केट में सूचि रखने वाले समस्त व्यक्तियों को भोगवरदा अंगूठी में जड़वा कर पहन लेना चाहिए।
७०. निर्माण कार्यों से सम्बंधित व्यक्ति (ठेकेदार वर्ग) को भी इसी विशेष रत्न का आश्रय लेना ही चाहिए।
७१. जिन व्यापारियों के व्यवसाय का चरित्र उस प्रकार का है कि उसमें दामों का निरंतर उतार-चढ़ाव बना रहता हो, उन्हें भी यही मणि अपने गल्ले में स्थापित कर लेनी चाहिए।
७२. जहां कोई रत्न अपने अनुकूल न सिद्ध हो रहा हो वहां निःसंकोच भोगवरदा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ में धारण करना चाहिए।
७३. वसुधा लक्ष्मी की साधना भी इसी दूर्लभ मणि पर पूर्णता से सम्पन्न की जा सकती है।
७४. यह आकर्षण मणि सम्मोहन के अतिरिक्त प्रभावों से भी संपुक्त होती है।

भोगवरदा - ६०/-

### सुखदा

७५. लक्ष्मी व शणपति के संयुक्त मंत्रों से सिद्ध यह विशेष सात्त्विक गुटिका है।

७६. इसके माध्यम से क्राणमोचन की कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है।

७७. यह प्रकारांतर से रोग निवारण गुटिका भी है एवं घर के शिशुओं को धारण करने से उन्हें बाल रोग, नजर आदि का दोष व्याप्त नहीं होता।

७८. अनेक तांत्रिक साधक दीपावली की रात्रि में इसी को लक्ष्मी गणेश का संयुक्त विश्राह मानकर उच्चकोटि की साधनाएँ सम्पन्न करते हैं।

७९. दुकान, फैक्टरी आदि में जहाँ लक्ष्मी-गणेश का विश्राह स्थापित करते हैं, वहाँ पीले कपड़े पर इनके इस तांत्रिक स्वरूप को भी स्थापित करना आवश्यक कहा गया है।

८०. यदि बिना किसी कारण अचानक ग्राहक ढृति लग गए हों या साख पर बन आयी हो तब तो इस गुटिका को दुकान में अवश्य ही स्थापित करें।

८१. यह गुटिका भाज्योदय गुटिका भी है और दीपावली की रात्रि में इसका इस रूप में विन्नन कर श्रद्धापूर्वक धारण करने से शीघ्र ही मनोवर्गित फल प्राप्त होता है।

सुखवा-६०/-

### तांत्रोक्त नारियल

८२. प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाली यह सामग्री अपने स्वरूप एवं बाधा निवारक प्रभाव में दोनों ही तरह से अनोखी है।

८३. पितृ दोष निवारणार्थ, इनर पोनि दोष निवारणार्थ इसके स्थापन से क्षेष्ठ कोई दूसरी साधना सामग्री है ही नहीं क्योंकि इहाँ दोषों के फलस्वरूप लक्ष्मी का आगमन सम्भव नहीं हो पाता।

८४. यदि मुकुदमे आजी में फंस गए हों और घर की जमा-पूँजी तक नहीं हुई जा रही हो तो दीपावली की रात्रि में एक कुलहड़ में तांत्रोक्त नारियल रख, अपनी समस्या एक कागज पर लिख, वी लौंग, एक काली मिर्च के साथ लाल कपड़े में बांध इमशान में फेंक आएं।

८५. यदि कोई व्यक्ति अनुचित प्रकार से धन वसूल रहा हो तो इसी तांत्रोक्त नारियल पर उसका नाम काजल से लिख कहों एकात्म में जाकर जला दें।

८६. यदि घर में निरंतर कोई रोगी बना रहता हो और उस कारणवश आय का एक बड़ा हिस्सा नहीं हो जाता हो,

तब एक तांत्रोक्त-नारियल लेकर उसे रिंग्डूर में रंग कर रोगी के सिर पर से छुमा कर घर से काफी दूर दक्षिण दिशा में फेंक आएं।

तांत्रोक्त नारियल-८०/-

### सौन्दर्य मुद्रिका

८७. यह वास्तव में सौन्दर्य लक्ष्मी का ही विश्राह स्वरूप है, जिसे कोई भी नवयुवती अथवा नवयुवक अपनी उंगली में धारण कर सकता है।

८८. यदि सौन्दर्य में चमक न हो, चेहरे पर झाइयों से अथवा मुहासे आदि के कारण सौन्दर्य दब गया हो, तब इस मुद्रिका को मात्र धारण करना ही पर्याप्त उपचार है।

८९. जिन स्त्री या पुरुषों में रंग खिलता हुआ न हो एवं किसी भी क्रीम आदि से रिफ्टि न सूखती हो तब सौन्दर्य लक्ष्मी साधना का आश्रय लेना अनुकूल रिंग्डूर होता है, इसी मुद्रिका को मात्र धारण करने से।

९०. सौन्दर्य लक्ष्मी की साधना का सम्पूर्ण फल देने वाली इस मुद्रिका की एक अन्य विशेषता भी है कि यह शीघ्र विवाह मुद्रिका भी है और इस मनोकामना के भाव विश्वासपूर्वक धारण करने पर इस रूप में भी तीव्रता से फलदायक सिद्ध होती है।

सौन्दर्य मुद्रिका-१५०/-

### केलन

९१. अधोर पद्धति में की जाने वाली समस्त साधनाओं की आधारभूत सामग्री है केलन, जो अपने स्वरूप में ही दरिद्रता नाशक है।

९२. दीपावली की रात्रि में घर के प्रत्येक दरवाजे पर्यंत खिड़की के पास तेल का दीपक रख, प्रत्येक में प्रक एक केलन डाल दें तथा ध्यान रखें कि ये दीपक पूरी रात जलते रहें।

प्रातः दीपक समेत सभी केलन घर से काफी दूर फेंक आए, इसमें घर की दरिद्रता श्री चली जाती है।

९३. यदि साधक का किसी दूर स्थान पर कोई कार्य आटका हो दीपावली की रात्रि में अपने सामने रख निम्न मेत्र का २१ बार उच्चारण कर उसे नगर की दक्षिण दिशा में फेंक दें।

मंत्र

### ॐ जोड़ी कद

१०३. घर के पालतू पशुओं (गाय, बैल आदि) पर यदि तत्र प्रयोग अथवा मूठ की आशंका हो तो उनके बाढ़े के चारों कोनों पर एक-एक केलन भाड़ देना चाहिए। पालतू पशु भी लक्षणी का ही एक स्वरूप है, जिन्हें पशुधन की संज्ञा से विभूषित किया गया है।
१०४. यदि पैतृक सम्पत्ति में अपना डिस्सा न मिल रहा हो तो दीपावली (अथवा किसी भी अमावस्या पर) एक केलन रख, उस पर श्वेत पुष्प चढ़ा, अपनी मनोकामना व्यक्त करें।

केलन १५०/-

### स्वर्णाकर्षण गुटिका

१०५. जीवन में विविध प्रकार के धनागमों का उद्गम इसी के माध्यम से सम्भव है।
१०६. स्वर्णाकर्षण गुटिका को पूजा स्थान में स्थापित करने वाले साधक को विशेष कर गुम माध्यमों से धन प्राप्ति का जरिया मिलता है।
१०७. इसी गुटिका का सम्बन्ध स्वर्णाकर्षण भैरव से होने के कारण साधक को अपने अन्दर एक विशेष प्रकार की ऊर्जा और निर्भयता भी सदा अनुभव होती रहती है।
१०८. यदि अपनी संचित धनराशि भ्रष्टाचार आदि के कारण कहीं अटकी पड़ी हो एवं प्राप्त न हो रही हो तो दीपावली की रात्रि में स्वर्णाकर्षण गुटिका स्थापित कर उसका पूजन केवल लाल पुष्प से करें।
१०९. स्वर्णाकर्षण गुटिका जिनके भी घर में स्थापित होती है उन्हें चोरी, आग आदि आकस्मिक विपदाओं में धन जाने का भय नहीं रहता, ऐसा शास्त्र प्रमाण है कि धन को सुरक्षित रखना भी लक्षणी साधना का ही स्वरूप है।

स्वर्णाकर्षण गुटिका १५०/-

### पारद श्री यंत्र

११०. जिस प्रकार श्री यंत्र आपने आप में लक्षणी का पूर्ण प्रतीक है, पारद श्री यंत्र, पारद छारा निर्मित होने के कारण इसी विशेषता को और भी ज्यादा स्पष्ट करता है।
१११. पारद निर्मित होने के कारण इसमें से निकलती तरफे पूरे घर के बातावरण को उल्लासमय बनाए रहती हैं।

१०३. पारद श्री यंत्र के समान कमल गड्ढे की माला से “ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा” मंत्र की एक माला मंत्र जप करने से ज्येष्ठा लक्ष्मी का घर में चिरबास होता है, जो स्थायी व विविध सम्पत्तियों की पूर्णभूता है।

१०४. पारद श्री यंत्र के समान नित्य कमल गड्ढे की माला से एक माला “श्री” मंत्र की जप करने पर साधक को वृद्धता अथवा अशक्तता व्याप्त हो ही नहीं सकती।

पारद श्री यंत्र ३००/-  
कमलगड्ढे की माला ३००/-

### इत्याजोड़ी

१०५. विरुद्धा नामक पौधे की जड़ में मिलने वाली यह तुर्लभ सामग्री साबर साधनाओं के माध्यम से लक्षणी प्राप्ति की एक आवश्यक वस्तु है।

१०६. नाथ पंथियों के अनुसार यह जिनके भी पास होती है, सामने वाला व्यक्ति उससे सम्मोहित होकर उसे मनोनुकूल धन देता ही है।

१०७. यदि दीपावली की रात्रि में इसे स्थापित कर निम्न मंत्र का जप साबर माला से करें तो पूरे वर्ष भर के लिए आर्थिक निश्चिन्ता प्राप्त हो जाती है।

### मंत्र

#### ॐ श्री श्रिये नमः

अगले वर्ष इसी हत्या जोड़ी पर पुनः इसी प्रयोग को दोहरा सकते हैं।

१०८. हत्या जोड़ी को धारण करने वाले व्यक्ति को स्वप्न में, गुप भेद, लौटरी एवं इसी प्रकार के अनेक रहस्यमय माध्यमों से धन प्राप्त होने की स्थिति बनती रहती है, ऐसा साबर ग्रंथों का प्रमाण है।

इत्याजोड़ी ३००/-

प्रस्तुत लेख में वर्णित प्रत्येक साधनात्मक सामग्री यद्यपि मूल रूप से लक्षणी साधना से ही सम्बन्धित है किन्तु हमें परम्पराओं एवं उपयोग द्वारा उनके जो विभिन्न उपयोग पता चले, उन्हें भी इसी लेख में समावित करने का प्रयास किया है, क्योंकि लक्षणी साधना का यही वास्तविक अर्थ है। लक्षणी साधना इसी प्रकार सम्पूर्णता की प्रतीक है, न कि किसी एक आकृति को ही वास्तविक मान, जीवन भर उसके सामने गिरायिन्होंने और हाथ जोड़ो की।

साधना  
एक स्वा  
लग्नते  
आश्चर्य  
सर्वार्थि  
बीमा  
आप में  
प्रतीत  
आगे बै  
इति  
आतुलन  
तत्र मात  
तन्त्र वै  
सकी।  
इस  
नदरप  
वर में  
करती।

यादिकीर्तन को लाभु जी द्वारा लिखित विषय इन्हें लाभु

ताकीजिए

इन्डक्यूट

सिंहद्वारा सहस्र लक्ष्मी प्रदानी

ऐसा दुर्लभ प्रदान

गोरखनाथ सबने

अनुभव से अपने

दुर्लभ प्रदानी लक्ष्मी लाभु, गोरखनाथ को आपने मात्र लाभना कर अपने

लक्ष्मी लाभु को भावीन का लिया।

**अ**धी-अभी पिछले दिनों हिरण्यवासी नपोनिष्ठ योगीराज शीलन्द्र स्वामी जी से एक अद्भुत और अश्वर्यजनक प्रयोग प्राप्त हुआ है, यहि पालकों ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो, तो उन्हें पता चलेगा कि इन्डक्यूट सहस्र लक्ष्मी प्रदान सर्ववा गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग रहा है, यद्यपि इसकी उच्ची कई गन्धी में आई है, परंतु इसका विस्तृत वर्णन हमें जानी तक प्राप्त नहीं हुआ था, पवित्र की टीम हम गहस्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी, परंतु इसकी प्रामाणिक विधि और इसका शुद्ध पाठ प्राप्त नहीं हो रहा था, पिछले दिनों कुम के अवसर पर योगीराज शीलन्द्र स्वामी जी से भेट हुई और हमें ज्ञात था कि यह विद्या उनके केठ में सुरक्षित है, हमने उससे निवेदन किया तो उन्होंने कृपा पूर्वक यह दुर्लभ साधना

रहस्य हमें अंकित करवा दिया, इसके लिए पवित्रा स्वामी जी की आभारी है।

महाविद्या प्रदान

दस महाविद्याओं के बारे में तो पवित्रा के पाठक पढ़ ही चुके हैं, और उनमें से कई साधकों ने उन प्रयोगों को अपनाया भी है, परंतु देवताओं के अधिष्ठित इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को भी महाविद्या मान कर उनकी साधना की, और सहस्र रूपेण अश्रुत हनुम-हनुम रूपों में भगवती लक्ष्मी इन्द्र के निवास में स्थापित हुई और इन्द्र देवताओं में सर्वाधिक सुखी, सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न और सर्वाधिक पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व बने।

भगवती लक्ष्मी की साधना लक्ष्मी के रूप में तो कई स्थानों पर प्रचलित है, परंतु महाविद्या का रूप देकर इस प्रकार की

मानवना इन्हें न ही स्पष्ट की है, और आगे के सभी अधियों ने वह सवाल से यह स्वीकार किया है, कि बास्तव में ही यह साधना उपर्युक्त आप में दौद्ध फलदायक, निश्चित फलदायक और उपचर्यजनक रूप में फलदायक है।

लवाचिक तेजस्वी मब्ब्र

झील में यह दाखें के साथ कह सकता हूँ, कि यह मन्त्र अपने जीव में अस्त्यन्त प्रभावशुल्क है, यद्यपि यह साधना उत्त्यन्त सरल प्रक्रिया होती है, परंतु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है, जिसे के भाषियों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया।

इतिहास साक्षी है कि बिश्वनाथ ने साधना को सम्पन्न कर अनुनाय ऐश्वर्य प्राप्त किया, विश्वमित्र ने इस साधना को उत्तम कर सम्पन्न किया, और वे आश्वर्यचकित रह गये कि ज्ञान की अपेक्षा यह जल्द और पृणाला के साथ सम्पन्न हो सकी।

इस साधना के द्वारा भगवती लक्ष्मी साक्षात् जात्वल्यमान न्वन्प में प्रपाट होती ही है, अद्युत्य रूप में भी वह साधक के पर में निवास करती है और उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रबन्ध करती है। शंकराचार्य ने स्वयं इस साधना की वहाँ प्रशंसा की

है, और कहा है कि यह साथना कर्त्तव्यमें शृङ्खलोगों के लिए कल्पवृक्ष के समान वरदान स्वरूप है।

गुरु गोरखनाथ ने तो अपने सभी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी, जिससे कि उनके शिष्य दरिद्री मही रहे, पूर्ण रूप से सम्पन्न व ऐश्वर्यवान बनें, जिससे कि परे विश्व में अपने ज्ञान का सविधापूर्वक प्रसार कर सकें।

शंकराचार्य के बाद वह साधना एक प्रकार से लुप्त ही हो नहीं, गुणों में इस साधना जीवारीकियाँ और इसका प्रभावी प्रायाणिक मन्त्र प्राप्त नहीं हो सकत, इसके प्रभाव और इसकी प्रमाणिकता के बारे में प्रार्थना काल के गुण्ठ भरे पढ़े हैं।

साधना प्रयोग

यह प्रयोग पुष्ट नक्षत्र को किया जाना चाहिए अगले तीन महीनों में पृष्ठ नक्षत्र इस प्रकार से घटित होते हैं-

कार्तिक कृष्ण पक्ष तिथि ७ बुधवार और ८ गुरुवार, ७ नवमवार २०२१ सप्तम / वज्रे से / नवमवार शत १२५ तक।



पौष कृष्णपक्ष तिथि १ सोमवार और २ मंगलवार, ३१ दिसम्बर २००९ रात १०, ३० से १ जनवरी २००१ रात १० बजे तक।

इसके अलावा भी साधक कभी भी पुण्य नक्षत्र का प्रयोग कर सकता है, शेष साधक तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक पुण्य नक्षत्र को यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं।

### साधना सामग्री

इस साधना में पांच पदार्थों की आवश्यकता होती है जो कि शाल विधि के अनुसार निम्नलिखित हैं-

१. पूर्णता के लिए - तांत्रोक्त नारियल

२. समृद्धि के लिए - कल्पयुक्त फल

३. सिद्धि के लिए - इन्द्राक्षी गुटिका

४. स्थापन के लिए - महालक्ष्मी चित्र और

५. ऐश्वर्य के लिए - कमल गहने की इन्द्र सहस्र लक्ष्मी माला

साधक इन पांचों वस्तुओं को कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सारी वस्तुएं मंत्र सिद्ध एवं प्रामाणिक हों।

पत्रिका की यह नीति रही है, कि वह उच्च कोटि के योगियों और पश्चिमांसे से ऐसी बुलंग सामग्री प्राप्त कर आप तक पहुँचाने का प्रयास करती ही है, इमने इन पांचों वस्तुओं का समन्वित नाम 'इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी महाविद्या पैकेट' रखा है जिसमें ये पांचों वस्तु प्रामाणिकता के साथ हैं जिससे साधक इस पैकेट से ये वस्तुएं प्राप्त कर पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सके।

इसके अलावा नलपात, केसर, पुष्पों की माला, कछु खुले पुण्य, नारियल, फल, त्रिवेद्य आदि पूजन सामग्री भी पहले से ही साधना कक्ष में या पूजा घर में रख देनी चाहिए।

### साधना प्रयोग

जिस दिन साधक को साधना करती है, उस दिन साधक स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और गीठ पर बालों को खुला रखे, यदि चाहे तो पति-पत्नी दोनों आसन पर बैठ कर साथ-साथ साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

सबसे पहले साधक पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी चित्र को क्रैम में मढ़वा कर अपने सामने रख दें और जल से धो कर उस पर केसर की लिन्डी लगायें, सामने नेवेद्य अर्पित करे और फिर लक्ष्मी के चित्र के सामने ही एक चावल की ढेरी बना कर तांबे

का ढोटा सा कलश जल से भर कर स्थापित करें, और उस पर लाल कपड़ा रख कर उस कपड़े को कलश से बांध दें, फिर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और इन्द्राक्षी गुटिका स्थापित कर दें, फिर इनकी संक्षिप्त पूजा करे और पुण्य अर्पित करे, साथ ही साथ इस कलश के सामने पांच थीं के दीपक लगायें, जब तक साधना सम्पन्न करे तब तक थीं के दीपक लगे रहने चाहिए, जो पुष्पों की माला लाई हुई है, वह साधक स्वयं धारण कर ले, और शारीर में विधान है, कि पहले से ही पान लगा कर मगवा लेना चाहिए और यह तांबल अथवा पान मुंह में ले कर उसे चबाकर फिर उसे थूक दें, तथा मुंह को धोकर मंत्र प्रयोग प्रारंभ करें।

### मंत्र प्रयोग

सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं आज पुण्य नक्षत्र के मुहूर्त पर अदूट धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूँ।

तदोपरान्त पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ कर जल भूमि पर छोड़ दें -

### विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोपनीय मंत्र रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपिणी महाविद्याया: श्री इन्द्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादविलेष्टार्थं जपे पाठे विनियोगः।

मंत्र जप से पूर्व निम्न महत्वपूर्ण व गोपनीय न्यास अवश्य सम्पन्न करें-

### ऋष्यादि-न्यास

श्री इन्द्र ऋषिभ्यां शिरसे नमः।

गायत्र्यादि नानाछन्देभ्यौ नमः मुखे।

नवकोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादविलेष्टार्थं जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वगे।

## अंग-न्यास

ॐ श्री सहस्रारे  
 ॐ ही नमः भाले  
 ॐ कल्पी नमो नेत्रयुगले  
 ॐ ऐ नमो हस्त युगले  
 ॐ श्री नमः छदये  
 ॐ कल्पी नमः कटी  
 ॐ ही नमः जंघा द्रव्ये  
 ॐ श्री नमः पादावि सवर्णि

उपरोक्त न्यास आति उच्चारण कर फिर चित्र के सामने चावती लक्ष्मी को श्रद्धायुक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मंत्र का २३ बार उच्चारण करें।

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मंत्र

ॐ ही श्री हृ सौ श्री ऐ ही कल्पी सौः सौः अंगवाच्ये, अंगवाच्ये, सौ श्री जय जय महालक्ष्मी, जगवाच्ये, विजये, सुरासुर त्रिभुवन निवाने, वयाकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु वेहावृते, महा मोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधार्घि वासिनि, महा तेजो धारिणि, सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणि, अचिन्त्यरूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन, परिपूर्णो दय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकाशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले यम कोटि बहन शीले,

ॐ कार नाव विन्दु रूपिणि, निगमागम भागवायिनि विदश राज्य वायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, विव्य देहिनी, निर्गुणो सगुणे, सद-सद रूपधारिणी, सुर वरदे, भक्त ब्राह्म तत्परे, वैदु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेकलक्ष-लक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि

ब्रह्माण्ड नायिके चतुर्विंशति मुनि जन संस्थिते, चतुर्वर्ष भुवन भाव विकारणे, गणन वाहिनि, नाना मन्त्र-राज विराजते, सकल सुन्दरीगण सेविते चरणारविन्दे, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश वायिते, करुणा रस कल्पोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्तामणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमिले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठायिनी, प्रसीद प्रसीद सर्व मनोरथान पूरय पूरय सवारिष्ठान छेदय छेदय, सर्व ग्रह पीडा ज्वराग्र भयं विद्धवंसय विद्धवंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गणि दर्शय दर्शय, ज्ञान मार्गं प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धि कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वायदभ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ही कल्पी सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्याये नमः।

पाठक स्वयं इस मंत्र को पढ़ें और देखें कि यह मंत्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इस दिन केवल २३ बार इस मंत्र का उच्चरण करना है, मंत्र जप पूरा होने पर साधक तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और इंद्राक्षी गुटिका को सुरक्षित रखे दें, यदि साधक की कोई तुकान या फैकटरी हो तो वहाँ पर भी जल छिड़क दें, कलश के ऊपर जो चावल रखे हुए थे, वे घर में रखे हुए धान्य में मिला दें, माला को पहने रहें या पूजा स्थान में रख दें।

आप अपने दोस्री की पत्रिका सर्वस्य बनाए तथा लिखें।  
 यह प्रत्यक्षने दोस्रे भिन्न का पना लिखकर ये चालाह  
 लिलम अप्तु इन्द्र विष्णु की दीप या दरा अपनी मन्त्र  
 मिथि वृष्णि प्रत्येषु वानेषु नारियल, कल्पवृक्ष फल,  
 इंद्राक्षी गुटिका, महालक्ष्मी चित्र और कलश गड्ढ मिहन्द  
 लक्ष्मी कलश माला। इन दोनों पारा दानों मिशो जो एक वा  
 लक्ष्मी नामामृत कप दो पत्रिका दोनों जारी।

# दोषावली

## मठालक्ष्मी फुल

दीपावली के अवसर पर जो केवल महालक्ष्मी से सम्बंधित  
भाना गया है, उस कालरात्रि के अवसर पर हम गणपति और  
लक्ष्मी दोनों के समन्वित पूजन विधान को प्रस्तुत कर रहे हैं।  
कालरात्रि ही एक ऐसा अवसर होता है, जिसे व्यक्ति अपने  
समस्त भौतिक कार्यों के लिए शुभ तथा आरंभ का काल मानता  
है। अपने धन-धान्य सम्पत्ति आदि के लिए इसे शुभ समय  
मानता है। जब यह क्षण उनके लिए नव वर्षारंभ के प्रतीक रूप  
में है, तो सम्भवतः इसी कारण कि महागणपति पूर्व महालक्ष्मी  
के संयुक्त रूप का पूजन कर, पूरे वर्ष को सफलता पूर्वक प्रत्येक  
प्रकार से धन-धान्य युक्त करें और महागणपति उसे समस्त  
बाधाओं पर विजय विलाएं उसके समस्त आने वाली कठिनाइयों  
को समाप्त कर समस्त सुखों को प्रदान करें।

इस कालरात्रि के अवसर पर जो अद्वितीय दुर्लभ क्षण उपस्थित हो रहे हैं, उन क्षणों में विशेष मर्वों द्वारा पूजन सम्पन्न करें तो निश्चय ही साधक में श्रेष्ठता आती है, वह अद्वितीय सम्पन्नता प्राप्त करता है और निश्चय ही वह महामण्डपति और महालक्ष्मी को अपने अनुकूल बना लेता है। साधक के लिए

आध्यात्मिक पक्ष महत्वपूर्ण है ही, उतना ही भौतिक पक्ष भी। भौतिक पक्ष की पूर्णता किए बगेर वह साधनों में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता।

पूजन सामग्री- रोली (कुकुम), गोली, असरबत्ती, केशर, कपूर, चिन्दूर, पान, सुपारी, फल, पुष्प तथा पुष्पमाला, गंगाजल, लौंग, डलायची, पंचमृत, यज्ञोपवीत, वस्त्र, नैवेद्य (सिंहासन) दीपक सुड माच्चिस, नारियल, आसन, पंचपात्र।

सर्वप्रथम आप स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण करे तथा उत्तर दिशा की ओर मुङ्ख कर पीले आसन पर बैठे, सामने बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा ले एवं एक थाली में कुकुम से अष्टब्द कमल बनाकर उसे बाजोट पर रख कर उसमें 'महालक्ष्मी यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के पूर्व में 'महागणपति विघ्रह' पश्चिम में 'नवग्रह गुटिका' उत्तर दिशा में 'लक्ष्मी मन्त्र आपृति गोमती चक्र' दक्षिण दिशा में 'लक्ष्मी वरवरद' को स्थापित करें तथा कमल गङ्गा माला को यंत्र के ऊपर रख दें। यंत्र के मध्य में 'अथनदायै नमः' मन्त्र पांच बार बोल कर अष्टग्रंथ से पांच बिन्दियां लगावें, फिर अपने मस्तक पर तिलक करें। इसके

वाह निष्ठम् प्रकल्प से पूजन क्रम प्रारंभ करें।

### स्तुतीकरण

वाहे श्राव से जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल

### छिक्के-

ॐ अथ विदोः पवित्रो या सवावस्थां गतोऽपि वा ।

ये स्मरेत पुण्ड्रीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

### अवलम्बन

इसमें इधर में जल ले जो, उसमें अथात और पूज्य मिला जे, किस निम्न संदर्भ का उच्चारण करें-

ॐ विष्णु विष्णुः श्री भद्रधनवतो महापुरुषस्य विष्णोराजया  
प्रज्ञनामन्त्य अथ श्री ब्रह्माणो वितीय पराह्ने व्येतवाराहकल्पे  
देवस्वतमन्वन्तरे जग्मवृद्धीपे भारतवर्षे अस्मिन पवित्रे क्षेत्रे  
ब्रह्मक वासरे (इन का नाम ते) अमुक गोत्रोत्पत्रोऽहं (अपना  
गोत्र बोलें) अमुक शमर्तऽहं (अपना नाम बोलें) यथा  
विनितोपचारः श्री महालक्ष्मी ग्रीष्मर्थे लदंगत्येन गणपति  
दूजन च करिष्ये ।

फिर जात को निमलिष्य पात्र में छोड़ दें।

### कलश स्थापन

इसके बाद कलश को जल से भर दें और अपनी बायीं और  
स्त्रें उसमें मौली बांधे। उसमें गंध, अक्षत, पूज्य ढालकर,  
मौली बांध कर नारियल रख दें। कुकुम, अक्षत तथा पूज्य  
चढ़ावे। धूप, दीप में पूजन करे प्रार्थना करें।

गंगे चमुने चैव गोदावरी सरस्वति ।

पूर्व कर्मविदाय नमः ।

दक्षिण यजुर्वेदाय नमः ।

पश्चिम सामवेदाय नमः ।

उत्तरे अर्थवेदाय नमः ।

कलशमध्ये आपामृतये वरुणाय नमः ।

प्रसादो भवा वरदो भाव ।

अनया पूजया वसणाद्यावाहिता वेषता

ग्रीष्मन्तां न नमः ।

### गणपति पूजन

#### द्यान

देसो हृथि जोखक भगवान गणपति का ध्यान करें

ॐ गणानां त्वा गणपति (गु) हवामहे

प्रियाणां त्वा प्रियपति (गु) हवा महे वसो नम ।

आहमजानि गर्भधना त्वमजासि गर्भधम ।

ॐ गणपतये नमः ध्यानं समर्पयामि नमः ।

तत्रादौ पूष्पासनं समर्पयामि नमः ।

-एक पूज्य याली पर चढ़ावे ।

पात्रं अर्थं समर्पयामि नमः

-तीन आचमनी जल गणपति पर चढ़ावे ।

-पंचमूत स्नान दूध, दहो, धी, शहद तीर शङ्कर मिलाकर स्नान  
करते-

पंच नमः सरस्वती मणियन्नि सरस्त्रोतसः ।

सरस्वती तु पञ्चन्या योउवेशउभवत् सरित ।

इसके बाद भगवानपति विश्वाह को शुद्ध जल से स्नान कराके  
पीठ ले और किसी दूसरी याली में कुकुम से स्वस्तिक बनाकर  
स्थापित करें।

इसके बाद वस्त्र लगापित करते हुए कुकुम, केशर या चन्दन  
से तिळक लगावें, अक्षत, पूज्य चढ़ावे तथा धूप, दीप दिखाकर  
नेवद, फल तथा ताम्बूल चढ़ावाएं प्रार्थना करें।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिस्त्रपाय ते नमः ।

विश्वरूपरूपरूपाय नमस्ते द्वादशारिणे ।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तु विनायक ॥

॥ ॐ गणपतये नमः ॥

निर्विघ्नमस्तु । निर्विघ्नमस्तु ।

निर्विघ्नमस्तु । तत्

सद्य ब्रह्मार्पणमस्तु ।

अनेन कृत पूजनेन सिद्धि बुद्धि सहित,

श्री भगवान गणाधिपति; ग्रीष्मन्ताम ।

एक आचमनी जल निर्मात्य पात्र में छाड़ दें।

इसके पृथ्वी पर चाल पचोष्ट्रार गुस्स पूजन सम्पूर्ण करें, गुरु वित्र  
पर सुगन्धिन पुष्प माला अर्पित करें।

### महालक्ष्मी पूजन

सामने चीकी पर याली में महालक्ष्मी यंत्र जो रथापित  
किया गया है उस पर शात, प्रसव चित्त होकर पूजन आरंभ  
करें।

### द्यान

देसो हृथि जोड़कर प्रार्थना करें-

पदमासनो पदमकरां पदममाला विभूषिता,

श्रीर सागरसंभूता हेमवर्ण समप्रभा ।

श्रीरवर्ण समं वस्त्रं दधरनां हरिवललभा,

धावने भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम ॥

श्री महालक्ष्मी नमः ध्यानं समर्पयामि ।

## आवाहन

दोनों हाथों में थोड़े पुष्प ले-

सर्वमंगल मांगल्ये विष्णु वक्षः स्थलाले ।  
आवाहयामि देवि! त्वां क्षीरसागर संभवे॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः आवाहनं समर्पयामि।

## आसन

थाली पर पुष्प आसन के लिए रखें-

सदा यर्वत्र खंस्थाने यर्वधारे महेश्वरि ।  
सर्व तत्वमयं विष्णु आसनं प्रतिशृण्यताम् ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः पुष्पासनं समर्पयामि।

## पाठ्य

दो आचमनी जल चरण धोने के लिए चढ़ावें-

पाद्यमाध्यनत शून्यायै वेद्यायै वेदवादिभिः ।  
तुम्यं स्त्यामि पदमाक्षिः सुगन्धिं निर्मल जलं ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः पाठ्यं समर्पयामि।

## अध्य

तीन आचमनी जल डूलन प्रक्षालन के लिए चढ़ावें  
अधीने गृहणेवम् अच्युमष्टुगं संयुतं ।  
अम्बाखिलानां जगताम् अम्बुजासन संस्थितां ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः अध्यं समर्पयामि।

## आचमन

मुख प्रक्षालन के लिए तीन आचमनी जल चढ़ावें  
जंगातोयै समानीतं स्वर्णकलशे स्थितं ।  
अचम्यतां महाभागे! प्रवानि प्रवभामिनि ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

## स्नान

स्नान के लिए महालक्ष्मी वंश पर जल चढ़ावें  
साध्वीनामश्तो गण्ये साधुसंघ समागते ।  
सर्व तीर्थमयं तोयं स्नानार्थं प्रतिशृण्यताम् ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

## पंचामृत स्नान

दूध वहीं, धीं, शहद और चीरी मिलाकर भ्यान करावें  
पंचामृतं शक्तरायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितं ।  
पंचामृतं गृहणेवं स्नानार्थं जगदम्बि ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

## शुद्ध जल स्नान

तत्पश्चात् शुद्ध जल से रनान करावें-  
परमानन्द बोधालिप्तनिमन्न निनमृतये ।  
शुद्धोदकेस्त्रय स्नानं कल्पयामि महेश्वरि ॥

श्री महालक्ष्म्ये नमः शुद्ध जल स्नानं समर्पयामि।

इसके बाद महालक्ष्मी वंश को किसी स्वच्छ तीलिये से  
पोछ कर किसी दूसरी थाली में स्वस्त्रक बनाकर स्थापित कर दे।  
वस्त्र चढ़ावे यदि वस्त्र न हो तो मीली चढ़ावे-  
दुक्कलं विनयं दिव्यं कंचुकं च भनोहरं ।  
देवि! त्वं च गृहणेवं सर्वं सौभाग्यदायमकम् ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

## गन्ध

कुंकुम, केशर या चन्दन का तिलक लगावें-  
कपूरागरु कस्तुरी कुंकुमादि समन्वित ।  
गन्धं ददाम्यहं देवि! सर्वमंगलदायिनि ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः गन्धं समर्पयामि।

## अष्टात

बिना दृटे हुए वाल चढ़ावें-  
अक्षतान् धवलान् देवि! शालीयं स्तण्डलानशुभान ।  
हरिद्राकुं कुमोपोतान् गृहणं करुणाणवे ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः अक्षतान् समर्पयामि।

## पुष्प

विविध पुष्प एवं पुष्प हाथ पहनावे-  
पदम् शंखं जपा कुसुमः पारिजातेश्वरं चंपकः ।  
पूजयामि प्रसीद त्वं पदमाक्षिः भूवनेश्वरि ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

## धूप

मुगन्धिन धूप, उग्ररबनी लगावें-  
आज्यवर्ति समानुके ज्येतिमयं शुभंकरं ।  
मंगलायतनं दीपं गृहणं परमेश्वरि ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः दीपं दर्शयामि।

## जीवेद्य

कोई भिठाई जो शुद्ध दो भाग लगावें-  
नानाविधानि प्रक्ष्याणि व्यंजनानि हरप्रिये ।  
यथेष्ट भुद्धन नैवेद्यं वहस्यं च चतुर्विधम् ॥  
श्री महालक्ष्म्ये नमः नैवेद्यं निवेदयामि ।  
तत्पश्चात् निग्नं मत्रोच्चारणं करते हुए तीन आचमनी जल  
निर्मल्यं पात्र में डालें-  
ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा ।  
ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।  
ॐ समानाय स्वाहा ।  
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

## फल

३५ 'उक्तुर' 2001 मंत्र-तंत्र-व्याप्र विज्ञान '38' १८

कोई भी फल जो मौसम के अनुकूल हो चढ़ावें-  
उंडे फल मथा देवि! स्थापितं पुरतस्तव।  
तेन मे सफला वामि: गृहाण नगदम्बिके ॥  
श्री महालक्ष्मये नमः फलानि समर्पयामि।

ताम्बूल

लौज इलायची, आदि मिलाकर समर्पित करें-  
पूर्णी फलं महदिव्यं नागवल्ली दलेयुर्तं ।  
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयताम् ॥  
श्री महालक्ष्मये नमः ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

यथा योग्य दक्षिणा समर्पित करें-  
हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमशीर्जं विभावसोः ।  
अनन्तपुष्टफलदं अतः शान्तिं कुरुष्व मे ॥  
श्री महालक्ष्मये नमः दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ।

नीराजन (आरती)

गृह दी की बत्ती बना ले तथा श्रद्धापूर्वक आरती करें-  
ॐ न तत्र स्योर्भाति न चन्द्रतारकं  
नेमा विद्युतो भान्ति कृतोऽयमग्निः ।  
तथेव आनन्दं अनुभाति सर्वं  
तस्यधासा सर्वं भिर्वं विभाति  
श्री महालक्ष्मये नमः नीराजनं समर्पयामि ।

जल आरती

नीन बार आवमनी से जल लेकर दीप के चारों ओर शुमाकर निर्माल्य पात्र में छोड़ दें-

ॐ धीः शान्तिरम्भरित्वा (जू.)  
शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः  
शान्तिः रोषधयः शान्तिः ।  
वनस्पतयः शान्तिं विश्वेदेवा: शान्तिः  
ब्रह्म शान्तिः सा मा शान्तिरेति ।

पुष्पांजलि

दोनों हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा  
मंजरी पर चढ़ा दें  
नाम स्पृष्टं पुष्पाणि यथा कलोदध्वनि च ।  
पुष्पांजलिर्यथा दत्ता गृहाण नगदम्बिके ॥  
श्री महालक्ष्मये नमः पुष्पांजलि समर्पयामि ।

प्रणामांजलि

दोनों हाथ ऊँडकर प्रार्थना एव प्रणाम करें-  
नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः ।  
नमः प्रकृत्ये भद्राये नियता: प्रणाता: स्मरातः ॥  
श्री महालक्ष्मये नमः नमस्करोमि ।

समर्पण

नूजन फल की प्राप्ति हेतु निम्न मंत्रोच्चारण करें-  
ॐ तस्मत् ब्रह्मपूर्णमन्तु अनेन कृतेन पूजाराधनं कर्मणा  
श्री महालक्ष्मी देवता परासंवित् स्वरूपिणी प्रीयत्नाम् ।  
एक आचमनी जल पूजा की पूण्यता हेतु छोड़ दें। साधना  
की सारी सामग्री कार्तिक पूर्णिमा तक अपने पूजा स्थान में ही  
स्थापित रखें।

## महालक्ष्मी जी की आती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैथा जल लक्ष्मी माता ।  
तुमको निसि दिन सेवत, हर विष्णु धाना ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जय माता ।  
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद व्रद्धि जाता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

दुर्गा रूप निरजनि, सुख सम्पत्ति वाता ।  
जो कोई तुमको ध्याना, रिधि विधि धन पाता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता ।  
कर्म प्रभाव ग्रकासिनि, भव निधि की द्राता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

निराधर तुम रहसी तहं, सब सदगुण आता ।  
सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

तुम दिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।  
खान पान का देखत सब तुमसे आता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

श्रुभ गुण मंदिर भुन्दर, क्षीरोदधि जाता ।  
रत्न चतुर्दश तुम दिन, कोई नहि पाता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

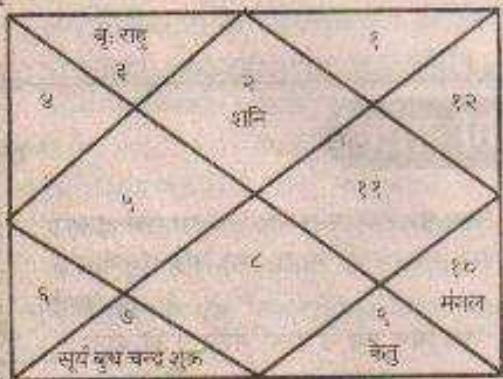
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई न गाता ।  
उर आनन्द समाता, पाप उत्तर जाता ॥

ॐ जय लक्ष्मी...

# ३८ लिप्तावती रुद्रवंश

इस वर्ष दोपावली कार्तिक वृद्धि पक्ष १४ बृद्धवार १४ नवमवर २००१, जिस दिन स्वति नक्षत्र एवं तुला राशि उभयन चंद्रमा को संपर्जन होगी। लक्ष्मी संबधी विशेष पूजन जो कि प्रत्येक साथक दोपावली के बिन अवश्य ही करता है उसे यह पूजन स्थिर लम्ब में करना चाहिए। ज्योतिष के अनुसार वृषभलम्बन एवं सिंहलम्बन, स्थिरलम्बन माने जाते हैं। दोपावली पूजन के समय स्थिर लम्ब में पूजन करने के पीछे यही भाव है कि लक्ष्मी चिरकाल तक स्थायी रूप से दिशानमान रहे। नीचे दोनों लक्ष्मी की स्थिति स्पष्ट की जा रही है-

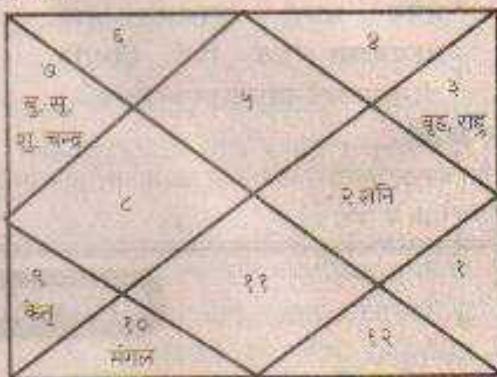
## वृषभलम्बन



बृद्धवार १४ नवमवर को वृषभलम्बन सायेकाल १३-१४ से १५-१६ (अंग्रेजी समय अनुसार) है। इसी काल के दोरान अमृतकाल १६-१७-१८ के बाद प्रारंभ होता है। वृषभलम्बन की कुण्डली का विवेचन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसका सर्वाधिक कारक यह जी नवमेश एवं दशमेश है लगभग २० दिनों का है साथ ही वह वक्ता होकर तीव्र भाव एवं सम्प्रभाव पर पूर्ण दृष्टि ढाल रहा है इसके साथ उद्योग भाव और

भाव पर भी पूर्ण प्रभावशाली है। इनका मित्र ब्रह्मपति इसी भाव पर लक्ष्मी होकर धनभाव में वैठकर पूर्ण प्रभाव ढाल रहा है। उच्च का मंगल भाव स्थान में भावश्य है तथा तुला का बृद्ध सूर्य के साथ विशेष योग बना रहा है इस कारण उद्योग जगत के व्यक्तियों को इस मुहूर्त में ही पूजन करना चाहिए।

## सिंहलम्बन



यिह लम्ब अत्यंत प्रभाव शाली माना जाता है और अंग्रेजी समय अनुसार यह मुहूर्त रात्रि २ बजकर १ मिनट से प्रारंभ होकर रात्रि २ बजकर २१ मिनट तक है। इसी के मध्य अमृतकाल का युवाकाल १२ बजकर ३० मिनट तक विशेष अनुकूल है। यिह लम्ब में लक्ष्मी सूर्य नदा लाभेश-धनेश, बृद्ध तथा दशम भाव के लवागीशुक की पूर्ण दृष्टि भावभाव में है। इसके साथ ही भाज्यभाव का स्वामी मंगल वक्ता होकर शनि भाव में सर्वाधिक कारक ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर यह शनि वमन करता है, उसके साथ ही भाज्या होकर लम्ब पर पूर्ण प्रभाव ढाल रहा है, इस कारण इस मुहूर्त में भी लक्ष्मी पूजन पूर्ण कालदायक है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का जाभिज्ञ जॉग है। इसके साथनाटक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समाज रूप से रखीकार किया गया है, वयोंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल

और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

मासिक सदस्यता

- क्या आपको मालूम है कि साबर मंत्र अथवा अजीबोजारी व अटपटी शब्द रचना के होते हुए भी अत्यक्त प्रभावी और तीक्ष्ण होते हैं?
- क्या आपको ज्ञात है, कि साबर साधनाओं में विशेष तंत्र किया और या कर्मकाण्ड आदि की भी अत्यधिकता नहीं होती?
- क्या आपको मालूम है, कि ये साबर मंत्र नाय सम्प्रवाय के योजियाँ और कई बंजारों एवं आदिवासियों के पास आज भी सुरक्षित हैं?
- क्या आपको मालूम है कि इन्हीं साबर पद्मोति से तेवार की जह ऐसी भी कई तांत्रीक वस्तुएं होती हैं, जो लक्ष्मी और धनायर के लिए अचूक टोटका होती हैं?
- 'साबर धनदा यंत्र' साबर मंत्रों से लिटु किया जया ऐसा ही यंत्र है, जो आपकी आर्थिक उन्नति के लिए पूर्ण प्रभावी है।

इस यंत्र का प्राप्त कर किसी दूषवार का दिन अपने घर के किसी कोन में कल कमड़ में लग्त कर खुंटी रखें। तो न माल बाद उसे किसी निचोन स्थान में फक्क दें। यह धनायर का कांगर टोटका है।

यह दुलीप उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपले लिखी मिल, रिहतेवार या उठजग की लगाकर ही प्राप्त कर लकरें। यदि आप पत्रिका के लिहारण नहीं हैं, तो आप उत्तर में दादरा बलकर यह उपहार प्राप्त कर लकरें। आप पत्रिका में प्रकाशित टोल्टकार्ड नं ४ को उपह अक्षरों में मारकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम उत्तर करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च असिरिक 40/-

संपर्क:

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342002, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342002, (राज.)

फोन: ०२९१-४३२३०९, फैक्स: ०२९१-४३२६१०

ऋ 'अवस्था' 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '41'

## कार्यालय कृपया ध्यान दें

१. कार्यालय से सामग्री मंगाते समय, सामग्री किस वर्ष के किस माह पत्रिका अंक में प्रकाशित है, स्पष्ट विवरण दें।
२. पत्रिका अप्राप्त की स्थिति में कार्यालय को शिकायत-पत्र लिखते समय सदस्य संख्या का स्पष्ट विवरण दें।
३. यदि पत्रिका सदस्यता संख्या मालूम न हो तो आप पत्रिका सदस्य कैसे बने-
  - (i) वी.पी. छुडाई हो
    - (a) वी.पी. संख्या..... (b) दिनांक.....
    - (c) धनराशि ..... से अवगत करायें
  - (ii) राशि अग्रिम भेजा हो तो
    - (a) बैंक ड्राफ्ट संख्या..... (b) धनराशि.....
    - (d) दिनांक..... से अवगत करायें।
  - (iii) मनीआडेर भेजा हो तो
    - (a) धनराशि..... (b) दिनांक.....
    - (c) रसीद फोटो स्टेट संलग्न करें
४. नवीन पता परिवर्तन हेतु साधका शिष्य, अपना नवीन, पुराना पता सहित सदस्य संख्या लिखें।
५. वी.पी. छुडाने के बाद पत्रिका सदस्य बनाने हेतु कार्यवाही में तीस से चालीस दिन तक का समय लग सकता है।
६. पत्रिका अप्राप्त सम्बंधी शिकायत अलग से पत्र पर लिखें जिसे आपके द्वारा अन्य विवरण न लिखा जाए।
७. पत्रिका प्रतिमाह प्राप्ति हेतु अपने परिचित नजदीकी गुरु भाई आपस में मिलकर किसी एक निश्चित पते पर एक ही बण्डल में पत्रिका मंगाएं। एक ही बण्डल में पत्रिका मंगाने हेतु कार्यालय को सब की सदस्य संख्या, पते सहित सभी का हस्ताक्षर युक्त पत्र भेजें।

-व्यस्थापक

# शिष्य धर्म

■ गुरु का कर्तव्य है कि बराबर शिष्य पर प्रहार करे, और शिष्य के पास एकमात्र विकल्प है उस प्रहार को सहन करे। शिष्य में सहन करने की क्षमता नहीं है तो वह शिष्य नहीं बन सकता और गुरु में प्रहार करने की क्षमता नहीं है तो वह गुरु नहीं बन सकता।

■ शिष्य के सामने कोई गुरु पर प्रहार कर लेता है---शब्दों के माध्यम से या प्रश्न के माध्यम से, और वह चुपचाप सुन ले या यदि गुरु की जिन्हा हो रही हो और वह युन ले, तो उससे बड़ा पापी इस संसार में कोई नहीं।

■ शिष्य की पूजी केवल तीन चीजें होती हैं, चौथी चीज अबर शिष्य के पास है तो वह शिष्य नहीं है। शिष्य के पास चौथी चीज होनी ही नहीं चाहिए, उसके पास केवल समर्पण होता है, उसके पास सेवा होती है, उसके पास श्रद्धा होती है।

■ गुरु जैसा करे वैसा तुम्हें करने की जरूरत नहीं है, गुरु जैसा कहे वैसा करने की जरूरत है। गुरु ऐसा क्यों कर रहा है, तुम उसे अभी समझा नहीं पाओगे।

■ श्रद्धा के साथ ही अपने-आप की पूर्णज्ञप से समर्पित करने की क्रिया का भी भान होना चाहिए, इसलिए नहीं कि तुम्हारे समर्पण करने से गुरु को महानता मिलती है, गुरु की महानता उसके द्वारा से है।

■ शिष्य में समर्थता होनी आवश्यक होती है, शिष्य को गुरुता प्राप्त करने के लिए समर्पण का होना आवश्यक है... और समर्पण का अर्थ है 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुम्यमेव समर्पयेत्' मैं कुछ हूं ही नहीं।

■ गुरु कहे और शिष्य करे, वह तो मामुली मनुष्य है, और गुरु कहे शिष्य करे ही नहीं, वह राक्षसा है, गुरु नहीं कहे और इशारा समझ कर करे, वह छेवता है।

■ यह गुरु ज्यादा जानता है कि तुम्हें क्या काम सौंपना है इसलिए यह तुम पर निर्भर है कि तुम पादपद्म बन सको, तुम विवेकानन्द बन सको, यह तुम्हारे हाथ में है, गुरु तो एक जगह खड़ा है।

■ जिस क्षण शिष्य के जीवन में तरंग आती है, जिस क्षण उसके जीवन में आनन्द की हिलोर आती है, तो वह निरंतर अद्वासर होता रहता है, क्योंकि लहर रुकती नहीं। पत्थर या लकड़ी एक जगह रुक सकती है, लहर नहीं रुक सकती।'

# गुरुवारी

\* रायि तुम भावना के साथ खार्य और जीवन साधना को प्रदान करते हों।

\* ज्ञान और विवेक से अपने मन को हरेशा दानत रखो भले ही इमड़ा हो पर अन्दर से तो शान हो।

\* संज्ञार तो एक भेला है। इसमें तुम्हारी प्रशंसा करने वाले भी मिलेंगे और निन्दा करने वाले भी मिलेंगे किरण विचलित रथों होते हों।

\* साधना तो तुम्हारी लिंगता ही जहाँ है। आत्मिक खुशाक है, और मुख्य प्रयोगज है। उसे तो अधिक में, उजाले में, लैठ कर सो कर, कहीं भी और कभी-भी किया जा सकता है।

\* नाव में बैठ कर नदी पार करते हो इसमें लट्ठे आती हैं तो नाव को कस कर पकड़ते हो पर वास्तव में नाव से रंच मात्र भी आसन्नित नहीं है। वैसे ही संसार में रहकर तमाम कर्मों का निर्वाह करो पर आसकिटा का महा रोग मर्त पालो।

\* सद-गुरु अनुसंधान के विहङ्ग, संकट ग्रस्त और एकाकी जीवन में पथ प्रबर्झक और सहयोगी हैं जो साधकों को निरंतर स्वक्षय की याद बिलाते हुए उनमें साहस और लितिक्षण भरता रहता है।

\* छोर्त बिन्दा कहे तो विचलित और कुपित होने से साधना में ही खलत पड़ेगा बास्तव में साधक का रूप ऐसा होता है। साधक रूपी अनुष्ठ का आभूषण है रूप और उसका अलंकार है गुण। गुण का बहुल है ज्ञान और ज्ञान का आभूषण है तमा हम बात को अच्छी तरह से समझ जाऊंगे तभी साधना में उम्मीद फूल सकती है।

\* साधक रूपी अनुष्ठ तो एक शिल्प कार है उसकी जीवात्मा एक अमरद पत्थर है। वह अपनी साधनाओं के द्वारा उस पत्थर को ब्राश कर एक सूर्ति का विशाल करता है जिसका नाम है पूर्णिमा अर्थात् मोह।

# लोकमी दर-दरद माला

ॐ श्री हं श्री कमले कमलालये प्रसीद  
प्रसीद श्री हं श्री ॐ महालक्ष्म्ये नमः ॥

भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन में पद्म (कमल) एक प्रिय प्रतीक रहा है उपमाकारों का और शास्त्रकाग्रों वा, जिसके द्वारा कई एक स्थितियों को स्पष्ट किये जये हैं 'पद्म' कहकर। चाहे वह इस शरीर में स्थित षट्कल कमल की बात हो या मर्त्तिष्ठक में स्थित सहस्रदल कमल की, और जीव की उपमा भी तो कमल से ही की गई है। भगवान् विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमलदल पर आसीन ब्रह्मा की कथा से कीन नहीं परिचित है। कड़ने का तात्पर्य है कि भारतीय जीवन पठन्ति में याहे वह चिन्तन हो अथवा सामान्य पूजन, कमल का एक विशेष स्थान है, और इसी कमल पर जो देवी आस्तृ होती है, उनका नाम है- लक्ष्मी। उन्हें केवल कमल पर आसीन ही नहीं किया गया, उन्हें साक्षात् 'कमला' की संज्ञा दी गई। लक्ष्मी, जो कि पूर्णरूप से ऐश्वर्य, धन-धान्य और भमृद्धि की देवी है, उनका कमल पर आसीन होना एक प्रतीक है कि किस प्रकार मेरे प्रौतिक और आध्यात्मिक स्थितियों जीवन में घुली-मिली होती है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि जीवन में पूर्ण प्रौतिकता जिस आधार पर सुस्थिरित हो सकती है, वह होता है आध्यात्मिकता की।

धीतिक समृद्धि और धन-धान्य, ऐश्वर्य, 'श्री' को लेकर हमारी प्राचीन जीवन शैली और प्राचीन इतिहासकारों की चिन्तन शैली में कोई भी छद्म नहीं रहा। साभेजात्मक विलतन का इस सम्बन्ध में मान्यताएं बहुती और याचना, देन्य, इरिद्वना के साथ ही साथ आन्म-पीड़न को आध्यात्मिकता का चरण ही नहीं माना गया, वरन् उसे ही आध्यात्मिकता मान लिया गया, जो नितान्त खोखला आधार रहा।

जहाँ भी साधना की बात आती है वहा नम, यंत्र और तत्र की विवेणी की बात आवश्यक हो जाती है। यंत्र और नम के संगम पर गुप्त रूप से बहती है तत्र की धारा, जिसमें स्नान कर व्यक्ति प्राप्त कर सकता है अपने जीवन की सभी कामनाओं की पूर्ति, इसकी एक-एक धारा भी अपने-आप में परिषृण्डी है। प्रत्येक धारा में स्वतंत्र रूप से भी इनना प्रभाव है कि उपरि अंकले उसके आधार पर जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है, जो उसके जीवन की इच्छाएं हैं और इच्छाएं तो होनी ही चाहिए क्योंकि इच्छाएं और कामनाएं ही जीवन में आधार देती हैं- सरलता और गति की।

इसी की एक धारा है 'यंत्र'। यंत्र का तात्पर्य तात्र पत्र पर

उत्कौर्ष  
सामित  
सहजता  
करा दे,  
बरद मात  
हो नम  
और सम  
एक सद  
अपने-ज  
विशि  
पठन्ति से  
विशा जाए  
देवी या  
लक्ष्म  
लक्ष्मी ये  
भाँति वि  
करना उ  
और केव  
भी करने  
सम्भव है

१. र  
योगमाय  
देवी १०  
१४. वि  
विष्णु पि  
विनेश्वर  
२७. मार  
वत्सला  
तेजस्विन  
३५. भास  
४३. भूक  
भोगेश्वर  
भोगविन  
५४. मा  
भवनार्थ  
कार्यक  
वरदायि

लक्ष्मी कुछ रेखाओं आयदा गोपनीय संकेतालयों नक्कही बनायिए नहीं होता। प्रत्येक वह उपाय जो हमारे जीवन में बहुता और सखलता से अल्प समय के अन्दर इच्छित प्राप्त करता है, वह यत्र ही है, और ऐसा ही यह यत्र है—“लक्ष्मी वर-वरद माल्य”। लक्ष्मी वर-वरद माल्य के बल जिसी मला का है नाम नहीं, वह तो साक्षात् लक्ष्मी को अपने शरीर, प्राण और सम्पूर्ण जीवन में उतार लेने की किया है। यंत्रों का तात्पर्य एक सहजोंती उपकरण के रूप में ही नहीं होता। यंत्र विद्या तो ज्ञान-ज्ञान में सम्पूर्ण विधा है।

विशिष्ट साधनाभी भथवा देवी-देवहाँओं को विशिष्ट तत्वों के विनाश से उनके सामग्री रूपों का किसी माल्य के रूप में उतार दिया जाए, तो वह माल्य राघवूर्ण रूप से चिह्नित दियकर एवं उस देवी या देवता का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाली हो जाती है।

लक्ष्मी वर-वरद माल्य ठीक ऐसा ही किलामाला है, जिसमें लक्ष्मी के ग्राम्य १०८ स्वरूपों का रूपाहिनीकरण भवी-भवनि किया गया है। लक्ष्मी के १०८ ग्राम्यों की साधना करना उन्हें पूर्ण रूप से चेतना हीते हुए भी सिद्ध कर लेना, और केवल सिद्ध हो नहीं कर लेना वरन् उनका आवश्यकरण भी कर देना है, केवल उस दिव्य माल्य (माला) के द्वारा ही सम्भव है। लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों के नाम इन प्रकार हैं—

१. लक्ष्मी २. नाहेश्वरी ३. कमली ४. ब्रह्माणी ५. योगमाया ६. महाविद्या ७. महायाग ८. कृष्णता ९. सिद्धि देवी १०. नदी ११. विजया १२. जगन्महा १३. सर्वमंगला १४. विनाशी १५. ईश्वरी १६. शुभगा १७. वृत्तदेवी १८. विष्णु प्रिया १९. पह्मावती २०. पद्ममेत्रा २१. मालंगी २२. विनेश्वरी २३. उमा २४. दुर्गारी २५. चतुर्भुजा २६. विभूषणा २७. मोक्षदा २८. कामयायिनी २९. भोगदा ३०. सुरारि ३१. वत्सला ३२. विदा ३३. पापनाशिनी ३४. अप्यकरी ३५. तेजस्विनी ३६. अम्बुलपा ३७. भाग्यजननी ३८. भाग्यदेवी ३९. भाग्यस्थिती ४०. भालया ४१. भीति-नाशिनी ४२. शुभना ४३. शुभनानन्दकारिणा ४४. मुक्तिदा ४५. भोगरक्षणी ४६. भोगेश्वरी ४७. भोगलया ४८. भोगवती ४९. भृधरा ५०. भ्रजितामिनी ५१. भव्या ५२. भव्यतरा ५३. भववल्लभा ५४. भास्त्रका ५५. उदया ५६. विद्या ५७. चक्रिणी ५८. भवनाशिनी ५९. गवाल्लितरणी ६०. सुखदिविनी ६१. कार्यकरणी ६२. करुणानिधि ६३. कालशमनी ६४. वरदायिनी ६५. निवा ६६. निशा ६७. काम्या ६८. कला माल्य म।

वह लक्ष्मी स्वरूप नहीं है। वह तो एक ऐसी अठारोंकाल रक्ता ही कही पर सकती है, जो कमी-कमी ही किसी ओपर व जाता युक्त के तिर्थशन में ही रहती या जाकर है, और जिसको तेयर करने में प्राप्त एक रूप पर लग जाता है। वह तो एक ऐसी सौजन्य होती है जिसे लजोकर रख्य सिद्धा जाता है, और जो आपने वाला पीटियों के सिए उत्तम उपहार सिद्ध होती है।

६१. प्रभदायिनी ७०. कमला ७१. सकलाकला ७२. सकलासिद्धि ७३. सकलासेधि ७४. सकलसरा ७५. सकलाशदा ७६. शुभनमूर्ति ७७. शुभनकरि ७८. शुभनामध्या ७९. मदनारूपा ८०. मदनातुरा ८१. मदनेश्वरी ८२. भाग्यवचना ८३. भाग्यदाकला ८४. भाग्यावता ८५. भाग्याविता ८६. भाग्यस्थिता ८७. भाग्यसुपता ८८. भाग्यलूपदा ८९. भोगसम्पदा ९०. भोग्यगुणिता ९१. भोगयोगिनी ९२. भोगरमना ९३. भोगराजिना ९४. भोगविभवा ९५. भोगवरदा ९६. भोगकुशला ९७. भद्रा ९८. भद्रश्वरी ९९. भद्रकिंवा १००. भद्रकीडा १०१. भद्रविद्या १०२. शूप्रमंगलका १०३. भवदानन्दलहरी १०४. भवदानन्ददायिनी १०५. शिवदा १०६. महामाया १०७. कुम्भा १०८. शुभप्रिया।

उपर लिखे गाएँ भे सहज ही अपष्ट होता है कि लक्ष्मी के १०८ स्वरूप कितनी विविधा और विशिष्टा संगत हुए हैं। आप सुदूर ही कल्पना करें, जब लक्ष्मी को उसके एक ही स्वरूप ‘लक्ष्मी’ के रूप में प्राप्त करने में सारी उम खप जानी है, किन्तु फिर भी जो कुछ प्राप्त होता है वह इनमें उल्लेखनीय नहीं होती कि उसे जीवन की प्राप्ति कहा जा सके, और वही लक्ष्मी के सभी १०८ स्वरूपों को लेकर इस जीवन में उत्तरना कठिन कार्य है, किन्तु जेसा कि, ऐसे प्रबले लिखा, यह विद्या में तो वे उपाय हैं, जो कि कठिन से कठिन कार्य को सरलतम बता देते हैं, और यही विद्या भास्त्रज होती है लक्ष्मी वर-वरद वर्द्धन। उपर्युक्त प्रत्येक मनके लक्ष्मी के द्वारा एक स्वरूप लो-

लेकर उसकी पूर्ण विन्यता और प्रभावकारी गुण सहित उतार दिया जाता है, जो एक अल्पन्तु दुरुह और गोपनीय किया है।

स्फटिक की मणिमाला को लेकर उसके प्रत्येक मनके में क्रिधिवत पूजन और गोपनीय किया और इन्हाँदि के द्वारा लक्ष्मी के एक-एक स्वरूप को समाहित कर इस विव्य और देव दुर्लभ माला का निर्माण किया जाता है। ऐसी माला पाने के लिए साधरण मानव ही नहीं वेगःण तक लात्यायित रहते हैं, क्योंकि लक्ष्मी का प्रभाव होता ही बताना चापक है। इस चराचर जगत में लक्ष्मी ही तो है, जो सभी को पोह लेने में समर्थ है, फिर यदि एक मृहरय इसकी कामना करता है, तो उसमें आश्वर्य ही क्या?

स्फटिक तो गमयनेव एक विव्य पदार्थ है। स्फटिक का स्पर्श और दर्शन ही फलदायक कदम गया है, जिसको बेखत ही उसकी शुद्धता और न्यूच्छना से मन में शौलनना व्याप्त हो जाती है।

व्यक्ति केसे भी मानसिक तनाव में हो यदि वह सामान्य रूप में भी स्फटिक मणिमाला धारण कर लेता है, तो उसे अपूर्व शाति और विन्यता प्राप्त होने लगती है। स्फटिक का विशेष गुण है कि वह अपने स्पर्श से व्यक्ति को शून्यता की स्थिति में ले जाता है, और फिर यही शून्यता व्यक्ति के विविध तनावों व द्वंद्वों के समाप्ति कर देती है, और यदि ऐसी विव्य माला लक्ष्मी प्रभाव से भी युक्त हो उठे, तब तो उसकी विलक्षणता के विषय में कहना ही क्या! इस 'लक्ष्मी वर वरद-माल्य' में ऐसे ही गुणों का समावेश होने से यह माला पूरी रूप से धैतिक समृद्धि के लिए केसाथ राष्ट्र आध्यात्मिक उत्तरि य काढ़लिनी नागरण की स्थितियाँ प्रदान करने में भी समर्थ होती है।

माला के सब में लक्ष्मी का यह समाहितीकरण जहाँ व्यक्ति के वक्षस्थल से निरंतर समर्पित रह उसके शरीर में धीरे-धीरे लक्ष्मी तत्व समाहित कर देता है, वही लक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरूपों की प्राप्ति व्यक्ति को ही जाने से उसके अन्दर समोहनकारी गुण भी पनपने लगते हैं। जिस प्रकार से पद्मगन्ध छुपाए नहीं छुपती, उसी प्रकार से लक्ष्मी तत्व की शरीर में प्रविष्टि कभी कहीं योवन को गुलाबी आमा बन कर प्रकट होती है, तो कहीं शरीर से निःसृत होती है, दिव्य गंध के रूप में। ऐसी माला धारण करने वाली सभी या पुरुष के शरीर से ऐसी ही पद्मगन्ध आने लगती है, कि उससे मिलने-जुलने वाले ठिक कर उससे सम्मोहित हो भी जाते हैं, और यही समोहनकारी गुण फिर व्यक्ति को सफलता प्रदान करने वाला बन जाता है, जोवन के प्रत्येक क्षेत्र में।

जोवन के अन्दर अलग रूपों में आश्वर्यननक रूप से यह

वर-वरद माल्य सहायक लिख दी हाँसी है। केवल धन-प्राप्ति के द्वेष में ही नहीं अथवा व्यापार की उत्तरिति के रूप में ही नहीं वरम यदि कोई दृष्टप्रभाव जीवन अथवा व्यापार आदि के साथ चल रहा हो, तो उसका भी निराकरण स्वतः ही कर देती है। काण, वरिद्रता, तनाव, निर्धनता, अड़चने-जादि ऐसी कई दुखद स्थितियाँ इसके माध्यम से समाप्त हो जाती हैं।

जो व्यक्ति मुद्रकमेघानी में फैले हो अथवा जिनके ऊपर कई शज्य बाधा आ पड़ती हो या ऐसे व्यक्ति अथवा व्यापारिक ब्रह्म जिन्हे अधिकारियों से निरंतर कार्य पड़ता रहता हो, उनके लिए यह माला धारण करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इस माला के विविष्ट सामोहिनारी प्रभाव इस द्वेष विशेष के लिए भी तो हैं।

घर में स्त्री ही अथवा पुरुष, इस विव्य माला को बिना किसी भ्रेव-भाव के कोई भी धारण कर सकता है, और एक प्रकार से कहा जाए तो परिवार के मुखिया के साथ-साथ परिवार की स्त्री को भी यह माला धारण करनी ही चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी एक स्त्री है और स्त्री के ही माध्यम से वह अधिक सरलता से अपना प्रभाव प्रकट कर सकती है, तभी तो घर की स्त्री के गृहलक्ष्मी की संज्ञा दी गई है।

केवल इसना ही नहीं जिस प्रकार से मांगलिक अवसरों पर अपने परिवार में स्त्रियों को आभूषण भेट किये जाते हैं, उन्हीं अवसरों पर यदि इस विव्य लक्ष्मी वर-वरद माल्य को उपहार में दिया जाए, तो न केवल उससे उस स्त्री का सम्पूर्ण जीवन संबर जाता है वरन् उसके माध्यम से उसके घर में ऐसी 'श्री' का प्रादुर्भव हो जाता है, जिसमें जीवन श्रेष्ठ और सफलता युक्त बन जाता है।

यह कोई साधारण माला नहीं है। यह तो एक ऐसी अलौकिक रचना ही कहीं जा सकती है, जो कभी-कभी ही किसी व्येष्य व जाता गुरु के निर्देशन में ही रखी जा सकती है, और जिसको तैयार करने में प्रायः एक वर्ष भी लग जाता है। यह तो एक ऐसी सौगत होती है जिसे संजोकर रखने जिया जाता है, और जो आने वाली पांडियों के लिए अनुपम उपहार सिख दी होती है।

यह माला किसी साधना का उपकरण नहीं है वरन् यह माला प्राप्त करना ही अपने आप में सम्पूर्ण साधना है, क्योंकि जिनके पुण्य उत्तित हो जाने हैं, जिनके जीवन में श्रेष्ठता, यश, मान और ऐश्वर्य की प्राप्ति के शरण आ जाने हैं, वे ही इस प्रकार की वेद-दुर्लभ माला प्राप्त कर एक झटके में ही जीवन में ऐसे सभी स्थितियाँ प्राप्त कर जाने हैं, जो कि अन्यथा उन्हें निर्मित करने में सम्पूर्ण जीवन लगाना पड़ता।

वर-वरद माल्य - ४५०/-

# साधना माध्यम से सम्भव है प्रत्यक्ष लक्षणी स्थिति

अपनेप्रकट कठकप में भी और अपनेवदादिक कठकप में भी...

इकमी का प्रत्यक्षीकरण तोप्रत्येक विधि में

कौभाग्य ही होता है। एक काब्द पद्धति, जैन तत्र पद आधारित...

यदि तो टूक शब्दों में पुछा जाए कि जीवन का सीन्दर्भ क्या है, जीवन की सार्वकला क्या है, तो निःसंकोच उत्तर दिया जाना चाहिए- लक्षणी। यही जीवन का परम सत्य है क्योंकि इसके अभाव में फिर जीवन का और विशेषकर गृहस्थ जीवन का कोई अर्थ नहीं होता जाता। केवल गृहस्थ जीवन तक ही नहीं बरन् लक्षणी का अर्थ व्यापक ढोता हुआ जीवन के प्रत्येक प्रष्ठा, प्रत्येक ढंग और प्रत्येक शैली को अपने अन्तर्गत ले जाता है, क्योंकि इसी से जीवन में गतिशीलता सम्भव होती है, कामनाओं की पूर्ति सम्भव होती है तथा उन सभी स्थितियों को जीने की आधार भूमि बनती है, जिनसे मानव अपने-आप को सुखी व सन्तुष्ट बना सकता है।

यदि जीवन के परम सत्य एवं लक्ष्य को एक पल के लिए अलग कर दें और फिर किसी व्यक्ति से पूछें कि वह सारी भ्राग-दीड़, परिश्रम और सम्बधों का अनानन्द बिगड़ना किस कारणवश कर रहा है, तो निश्चित रूप से उसका उत्तर यही होगा 'अपने व अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए तथा पालन-पोषण की स्थितियों से उपर उठने के बावश सुख'

सुविद्याओं को एकत्र करने के लिए। इससे व्यक्ति को केवल अपने लिए ही नहीं बरन उससे भी आगे बढ़कर अपने परिवार के सदस्यों के लिए कुछ करने में जो प्रसन्नता मिलती है, वही जीवन का सीन्दर्भ होता है और जब तक जीवन में ऐसा सीन्दर्भ नहीं होता, तब उसके व्यक्ति के मन में तुलि का भाव भी नहीं पनपता। जीवन के छोटे-छोटे क्षणों को जी लेने के बाद उस मनुष्य का मन सरस होता दें, तस होता है व आळादित होता है तभी उसके मन में बहु भाव-पूमि उत्पन्न होती है जिसके आधार पर उसका मन ईश्वर के चरणों में नमिन होता है।

एक प्रकार से देखा जाए तो भौतिक सुख एक ऐसी वस्तु होती है जिससे भीम कर ही व्यक्ति के नम हृदय में आध्यात्मिकता के कोमल अंकुर फूलते हैं। अभाव ग्रस्त, दुःखी, दीन, दरिद्री और कष्ट से पीड़ित व्यक्ति ईश्वर की आराधना भले ही कितनी जोर-शोर से कर ले किन्तु उसके स्वर में तरलता नहीं होती। उसकी पुकार के पीछे एक चिड़निडाहट और ईर्ष्या के भाव ही छुपे होते हैं, 'अत, यदि यह कहा जाए

कि दुर्खी रहना, शरीर सुखना और शीत-हीन ब्रह्मे रहना ही आध्यात्मिकता की शही पहचान है, तो ऐसे से कहना पड़ता है कि सम्भवतः उभी तकः इमला चिन्तन उस केवल और दासता से मुक्त नहीं हुआ है, जो उबों को गुलामी की देने है।

दूसरी ओर वह भी सत्य है कि जब व्यक्ति को अर्थोपार्जन के उपाय नहीं मिलते, सम्भवता की स्थिति नहीं प्राप्त होती, तब वह इत्तमा होकर अपनी देन्द्रियों को ही आध्यात्मिकता मालसे की ऐसी प्रवृत्ति लेता है, जिससे वह कालतर में खुब ही अस्तित्व होकर दीन-हीन, परित बना रह जाता है, क्योंकि अर्थोपार्जन करना, वर वे 'श्री' का संरापण करना रहने कार्य नहीं है। स्पष्ट शब्दों में कह जाए तो लक्षणों को घर में स्थापित करने, सहज कार्य नहीं है। उसका कारण यह नहीं कि लक्षणों चंचला है वरन् इसका कारण यह है कि व्यक्ति के पास वह मात्र सुनि और वैतन्यता नहीं होती। जिससे लक्षणों की स्थापित निया जा सके। लक्षण पर चलते समय व्यक्ति किसी आकर्षक दुकान को देख कर दे। क्षण हिंदू भजता है लेकिन वही अहों अगे बढ़ने पर गद्दी का देख देखकर जल्दी जल्दी कठम बढ़ाने की क्यों जो भना है?

यही 'अंतर होता' है लक्षणों के स्थापन में। जहाँ स्वच्छता है, स्थापना होता आधार है, पवित्रता और आश्रह है, लक्षणी वही स्थापित हो सकती। जल्दी शीतला, मलिनता, कलह और दुर्बुद्धि है वहाँ लक्षणी किस आधार पर स्थापित होती? देवकाल और विश्विति के अंतर साधना-जगत में बहुत अधिक नहीं पड़ता। इनमें हानि साधना के पश्च प्रभावित भवित्व होते हैं लेकिन इसमें कोई शास्त्र-मूल अंतर पड़ता है, वह तिनां आधारयों नहीं होता, अतः पदि शरतों ने प्रसाग मिलते हैं, पुराणों में कथाएँ मिलती हैं कियज्जे, साधना अदि के माध्यमों से लक्षणी प्रकट होती थी, तो वह आज के मुळ में भी सम्भव है। कनिकाओं की दृष्टि प्रवृत्तियों बाह्यकरी व्यवस्था है किन्तु वे अलग्याच स्थितियाँ नहीं हैं।

साधना के मैत्र सुख महत्व देखता है कि नहीं होता वरन् इस बात का होता है कि जो व्यक्ति साधना में प्रवृत्त है उसकी वैतन्यता क्या है, उसके प्राणों में कितना बल है और उसमें कितना सौख्य है, जिससे वह एक साधना-भित्रि को सम्मल कर रख सके। साधना में केवल पारंभिक सफलता ही पर्याप्त नहीं होती वरन् यह भी महत्वपूर्ण होता है कि क्या साधक

यदि शास्त्रों में प्रमाण मिलता है,  
पुराणों में लक्ष्मी प्रत्यक्षीकरण की  
घटनाएँ मिलती हैं तो यह प्रेत्या आज  
भी सम्भव है।

### देश, काल, परिस्थिति से बहुत अधिक अन्तर नहीं पड़ता

साधना की पश्चात्यर्ती स्थितियों की सम्भालना जानता है, स्थिति को विरस्थायी करना जानता है। यदि इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए तो साधना में स्थिति तो एक बहुत मामूली सी घटना होती है क्योंकि वर्ष, देवना गत्र स्वरूप होते हैं, जो विशेष क्रियाओं द्वारा आवश्य होने के लिए आधार होते ही हैं।

लक्षणी प्राप्ति तो व्यमद्र मध्यन की किया है और जीवन के समूह में साधनाओं के शोधनाग ल्याए रक्त से जो कुछ मध्य कर प्राप्त होता है वहाँ लक्षणी का यशस्वि स्वरूप होता है। इस प्रकार साधनाओं के द्वारा केवल लक्षणी ही नहीं वरन् चौदह रन्नों की प्राप्ति भी होती है। उसी करणवज्ञ जीवन में महालक्षणों की साधना अपने आप में शाश्वत साधना पद्धति कही गई है। किन्तु नहीं मंथन होता है वही विष की उत्पत्ति भी अनिवार्य होती है।

साधना जै क्षेत्र में किया जाया ऐसा मध्यन विष की सृष्टि भी करता है और यह विष होता है- साधक की अहंमन्यता, प्रमाद, जिसके बशीभूत होकर साधक उस सुख को प्राप्त नहीं कर पाता, जो असृत ज्ञान का आनन्द होता है। यदि साधक इस विष को शामित करने की कला जानता हो, तब वह स्पष्ट अनुभव कर सकता है कि लक्षणी उसके समक्ष हर पल उपस्थित होती है। परं-परं पर उसके साथ ही चल रही है और चल ही नहीं रही वरन् अनुगमन कर रही है। साधनाओं के द्वारा ऐसा चमत्कार सम्भव है।

इसका आप भी प्रत्यक्ष उदाहरण देखते ही होंगे कि समाज में कहा लोग सर्वेषां गनाव रहित, मुक्त न्यन्तरं एवं जीवन-अन्तर्मा से भर-पूरे, उत्तमते हुए विष्वाई देते हैं और जानने की। इच्छा होती होती है कि भावित इन्होंने अपने जीवन में ऐसा क्या कुछ किया है, क्या पाया है, जिससे इस तनाव के युग में भी वे



सर्वथा उन्मुल विलाई दे रहे हैं। यही प्रभाव राधना से भी प्राप्त किया जा सकता है अथवा जो प्रारब्ध से न मिला हो उसे पुनराय से अर्जित किया जा सकता है।

अपने संन्यास जीवन में जब मैं निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान का प्रमण करता हुआ वेवल प्राचीन पद्धतियों का संग्रहण कर रहा था तब मैंने अनुभव किया था कि निस प्रकार से गृहस्थ व्यक्ति की लक्षणों की नितान आवश्यकता रहती है उसी प्रकार विनष्ट जीवन में भी पर-पर पर लक्षणों का साहचर्य आवश्यक हो ही जाता है। मेरी भेट एक ऐसे वृद्ध योगी से हुई जो नगल में यावंया एकान्त में कुट्टा बनाकर रहते हुए निरिक्षण और नुम रहते थे। संचाल की समस्त प्रयोगों का पालन करने हुए भी उनके जीवन में कोई अभाव नहीं था और उसी अनुरूप उसका रवाना भी खुली किताब जैसा था।

मैंने उनसे इस बात का रहस्य जानना चाहा, तो उन्होंने

बिना हिचक के बता दिया कि उन्हें लक्षणी की प्रत्यक्षा सिंचित है, जिससे वे भौतिक जीवन से सम्बंधित जो भी मांग करते हैं वह तत्क्षण पूर्ण हो ही जाती है, और मैंने उनके साथ एक समाह रहकर पाया कि वास्तव में वे अपनी साधना के बल से उस घनधोर जंगल में भी निस वस्तु की कामना करते थे वह उपलब्ध होती ही थी, चाहे वस्त्रों की जात ही अध्या सुखदु भोजन की। यह बात और है कि उस योगी की आवश्यकताएँ अत्यन्त न्यून ही थीं।

मैंने उनसे इस साधना का रहस्य जानना चाहा और उन्होंने भी बिना किसी हिचकिचाहट के इस साधना का मूल मर्म लक्षण दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि साधना जीवन में गोपनीय रखा जाने वाला पक्ष होता ही नहीं है। सचमुच उनकी भूमती, फक्कड़ स्वभाव देखकर इष्ट्या डा होती है उनकी यह विद्या सम्पवता, जैन साधर तव पर आधारित थी।

किसी भी अमावस्या की रात्रि में, लाल वस्त्र पहिन कर, दो छिकोण उल्टे व सीधे गीच उसके प्रत्येक शीर्ष पर एक शोभती चक्र रख (अर्थात् कुल छ: शोभती चक्र),

मध्य में एक कल्प चक्र रखकर मंगों की माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना था। मंत्र-जप के काल में तेल का दीया जलते रहना था उसके प्रत्येक शीर्ष पर एक शोभती चक्र इस प्रकार से था-

#### मंत्र

॥ ॐ मो लक्ष्मये सिंचि वेदि प्रत्यक्षं भव णनो हु ॥

मंत्र-जप के उपरात तेल का दीया कुक मारकर बुझा देना था, चार केलन चार विशाओं में फँक कर, समस्त साधना-सामणी को साधना स्थल पर ही गढ़ा खोद कर एक बचे हुए केलन के साथ गढ़ देना था।

मैंने उसके बताये ढंग से साधना सम्बन्ध की, लेकिन अपने मन की शंका भी उनके समक्ष रखी कि नहीं साधक गृहस्थ हो और इस प्रकार नगल में बैठकर साधना न कर रहा हो तब वह क्या करे? इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने बताया कि लाल वस्त्र

में साथना सामग्री को बोधकर किसी कोने में हाल देना भी नूसि में वजा देने के समान ही माना जवा है। मैं ऐसे दुर्भ प्रयोग को प्राप्त करने के लिए आज तक उनका आपारी हूँ, साथ ही चलते समय उन्होंने जो बात कही वह मेरी स्मृति में निरंतर बनी रही है।

मैंने चलते समय उनसे हाथ पूरी हुंग से कहा कि आप तो सर्वया ब्रीतरागी हैं, बूझ हैं, आप को लक्ष्मी की क्या आवश्यकता पड़ गई? उनका उत्तर था- यह सत्य है मेरे स्वयं की आवश्यकताएं तो यही प्रकृति के माध्यम से पूरी हो जाती है लेकिन मेरे जो सेकड़ों संस्कृत व शूलस्थ शिष्ट हैं उनके जीवन की आवश्यकताएं उनके वस्त्र, भोजन आदि की उपशयकनाएं कैसे पूरी होंगी? कोई आवश्यक नहीं कि वे शिष्ट आपकी दृष्टि के सामने हैं अथवा नहीं, किन्तु मेरे तो शिष्ट हैं ही। मुझे नो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति गुरु होने के कारण करनी ही पड़ती है। क्या बिना लक्ष्मी के यह सम्बद्ध है?

आज आपने गृहस्थ जीवन में जश्न उनके बताये छां से लक्ष्मी का चैतन्य स्वरूप देख सका हूँ, वहां यह भी जनुग्रह कर सका है कि अनेकों का प्रत्यक्षीकरण अर्थात् उसकी कृपाओं का जीवन में स्पष्ट उत्तरण आवश्यक ही नहीं बरन पग-पग पर अनिवार्य ही है।

साधना सामग्री पैकेट- ३५०/-

## जैन आवर तंत्र के अनुभूत प्रयोग

### १. दुर्घट की खिली बढ़ाने हेतु

सात गोमती चक्र लेकर ग्रन्थक गोमती चक्र पर तीन-तीन बार निम्न मंत्र पढ़कर (अथोत कुल २१ बार) उन्हें दुर्घट की खिली के नीचे गाढ़ देनो सर्व शाहक आकर्षण प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

मंत्र

ॐ अप्रतिचक्र फट विभक्ताय स्वाहा

यह प्रयोग शनिवार के अंतिरिक्त अन्य किसी भी दिन सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट- १५०/-

### २. ब्रह कलह शांति हेतु

यदि एक सुधारणा लेकर सोमवार की रात्रि में आपने सामने

स्थापित कर ले तो वह में नित्य प्रति बना रहने वाला गृह कलह, विषाद और आपसी झगड़ समाप्त होते ही हैं।

मंत्र

ॐ शांते शांते शांति प्रदै जगत जीव हित शांति करे ॐ ही भगवति शांते मम शांति कुरु कुरु शिवम कुरु कुरु निरपद्रव कुरु कुरु सर्व भयं प्रशमय प्रशमय ॐ हां हां हैः शांते स्वाहा।

इस मंत्र का २१ बार जप करना यथोत्तम है।

साधना सामग्री पैकेट- १३०/-

### ३. कामिनी गोहिनी प्रयोग

अपनी मनोबांधित प्रेमिका को बश में करने का यह जैन तंत्र का बेहद प्रभावशाली मंत्र माना जाया है। उन्य स्त्रियों की बात तो क्या साक्षात् देव पत्नियां भी इस मंत्र से प्रभावित हो जाती हैं। अपने समक्ष किसी भी बुधवार की रात्रि को १० बजे के पश्चात् कामिनी कामेश्वर यंत्र रखकर यदि सफेद हड्डीकी की भाला से एक माला मंत्र जपे तो मनोबांधित स्त्री सम्मोहित होती ही है।

मंत्र

ॐ सुगन्धवती सुगन्धवता कामिनी कामेश्वराय स्वाहा  
“अमुक” स्त्री वशमानय वशमानय।

‘अमुक’ के स्थान मनोबांधित स्त्री का नाम ले।

साधना सामग्री पैकेट- ३००/-

### ४. शिरोधूल की समाप्ति हेतु

यदि किसी आवात अथवा अजात बारण से किसी व्यक्ति के पिर में असद्य पीड़ा उत्पन्न हो गयी हो तो निम्न मंत्र से जल को २१ बार अभिमंत्रित करके पिलाने से तुरंत आराम मिलता ही है।

मंत्र

ॐ हः सः

### ५. नजर दूर करने का प्रयोग

छोटे बच्चों को किसी ऐसी आपदा से बचाए रखने के लिए आवश्यक ही हो जाता है जैन मंत्र से अभिमंत्रित एक विशिष्ट नजर निवारक तारीज निम्न मंत्र के उच्चारण के द्वारा धारण कर दें तथा जब-जब वे अस्वस्थ प्रतीत हों तब-तब इस मंत्र से अभिमंत्रित जल उनके ऊपर छिड़क दें।

मंत्र

आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु  
पिलुन चक्षु सर्व चक्षु ही फट स्वाहा।

साधना सामग्री पैकेट- १३०/-

4

मनुष्य का जीवन प्रकृति पर ही निर्भर करता है, नहीं मनुष्य ने प्रकृति को छोड़ा। अथवा उपने आप को प्रकृति न छोड़ना चाहा तो वहाँ उसके जीवन में संशय और संबंध में आदिकाल से परंपरा रही है, लेकिन इस युग में संन्यास के प्रति बहुत अधिक ध्रुम और गलत विचार उत्पन्न हो जाते हैं। भारतीय दर्शन में सन्यास के

लेकिन उसके लिए उसे बहुत बड़ा मूल्य भी चुकाना पड़ता है। ये सामाजिक नियम और कानून, रीति-रिवाज, मर्यादाएँ व्यक्ति की आत्मस्वतत्रता को केद कर लेती हैं। मनुष्य का मन परंपराओं और अधिविश्वास के बंधन में फँस जाता है। ऐसी परिस्थिति में उसका मन स्वतंत्रतापूर्वक प्रकृति के अद्भुत बातचरण में विचरण नहीं कर सकता।

संन्यास वो शब्दों (सम्+न्यास) से बिलकर बनता है और इन दोनों का तात्पर्य है सम्-पूर्ण, न्यास-त्याग, समर्पण। इसका तात्पर्य यह है कि संन्यास का शास्त्रिक अर्थ- पूर्ण समर्पण और त्याग है। इस संसार के प्रति जो आसक्ति है और उपने कार्यों के फल की कामना है उसका त्याग ही संन्यास का आवश्यक है।

मूलतः संन्यास किसी धर्मवेश तथा विज्वास एवं अविज्वास के बद्धों से परे है उसके मन में प्रत्येक मानव जाति धर्मद्वारा और समाज की धारनाएँ एवं परिस्थिति की समझने की प्रेरणा होती है।

मूलतः संन्यास एक बाड़ा प्रवृत्ति न होकर

लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि सभी व्यक्तियों को यहाँ तक कि संन्यासी को भी समाज पर निर्भर होना पड़ता है, क्योंकि भोजन, वस्त्र, आत्म सुरक्षा समाज से ही प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कैसे बंधनमुक्त हो सकता है इसी समस्या के समाधान हेतु संन्यास की विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ।



5

### आत्मिक प्रवृत्ति

है। आज का आशुनिक नव समाज चिंता एवं तनावपूर्ण परिस्थितियों के कारण अत्मचेतना का भाव खो चुका है। उसके भीतर वह शांति और अपेक्ष्य नहीं है जो पूर्व काल में मानव कष्ट महिंद्रियों और मान्य समाज में था।

सामाजिक जीवन में मनुष्य मछल्वाकांक्षी बन जाता है, कि भीतर अहंकार एवं मानसिक विक्षिप्तता की मात्रा बढ़ जाती है, उसके कारण उसके अन्दर अनेक विरोधी विचारों वित्तियों का संघर्ष होता रहता है। वह अर्थात् उसका मन जा के शुल्कस्वरूप से बहुत दूर रहता है।

इस दृष्टिकोण से सामाजिक नियम अभिशाप स्वरूप है। अजिक नियमों के द्वारा उसे जीवन संबंधी सुविधाएँ, सुरक्षा, शांति और सुखवस्था तो अवश्य प्राप्त होती है।

समाज के नियमों का पालन करते हुए भी समाज के बद्धों से मुक्त रह सकता है।

संन्यास का आधार त्याग है और त्याग मूलतः एक मानसिक वृत्ति है, जिसके साथ ही साथ संन्यासी भीतिक सुख सुविधाओं का त्याग कर सकता है और जब त्याग प्रारम्भ होता है तो मनुष्य का मन अधिविश्वास और परंपराओं से मुक्त हो जाता है। तब उसकी आत्मिक शक्तियाँ प्रस्फुटित होती हैं।

आत्म ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए संन्यास अर्थात् त्यागपूर्ण जीवन सर्वोत्तम विधि है। परंपरागत विभिन्न शास्त्रों के अनुसार संन्यास के विषय में अनेक प्रकार की विचारधाराएँ ही गई हैं, जिनके अनुसार व्यक्ति को अपनी अवस्था और विकास के अनुकूल पार्ग अपनाना चाहिए। संन्यास उपरिवद में निम्न लिखित घार रूपों में संन्यास की अवस्थाएँ बताई गई हैं-

चत्यारिंशत्संस्कारसंपत्त : सर्वतो विरक्तिवत्तशुद्धिमेत्या ।  
शास्येष्वाहिकारं दण्ड्या साधनाद्युद्य संपत्त एवं संस्तु महत्ति ॥

अर्थ- चालीस प्रकार के संस्कारों से युक्त, सबसे पूर्ण विरक्त, वित्त को शुद्ध रखने वाला, आशा-निराशा, ईर्ष्या,

• 54 •

**संन्यास का और अद्यात्म का मूल वैराग्य**  
**अर्थात् त्याग और अनास्तिक है। संन्यास जीवन में अनास्तिक और त्याग को हटाना अधिक महत्व हुआ लिए दिया गया है कि जीवन में भौतिक वस्तुओं की उपलब्धि और उनके पीछे भागने से मनुष्य का उनका गुलाम हो जाता है, हुसले उसकी संकल्प एवं क्रिया क्रमजोड़ हो जाती है। जीवन के प्रति अनुभव और समझ भी क्रमजोड़ हो जाती है।**

अंडकार को भर्म करके थारो साधनों से सम्पर्जिती संन्यासी होता है।

१. वैराग्य संन्यास : ऐसे व्यक्ति जिनको बचपन से ही वैराग्य की प्रबल भावना हो। सांसारिक वासनाओं के प्रति जो संदेश उठासीन रहा करते हैं। संसार के सुख-दुःख, हानि-लाभ आदि का जिनके ऊपर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ता ऐसे अनास्तिक भाव से रहने वाले व्यक्ति को वैराग्य संन्यासी कहते हैं। आधुनिक युग में श्री रमण महार्षि इसके उत्तम उदाहरण हैं।

२. ज्ञान संन्यास : इसमें उस प्रकार के लोग आते हैं जिन्हें संसार का अनुभव प्राप्त हो चुका है जो कई प्रकार के शास्त्रों आदि का अध्ययन कर चुके हैं। साथ ही किसी गुरु से दीक्षा ले चुके हैं। उन्हें गुरु कृपा और शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञान का उदय होता है और वे संन्यास की तरफ प्रेरित होते हैं।

३. ज्ञान-वैराग्य संन्यास : जिन भाष्यकों को ज्ञान की शृंखिका पढ़ने से है। बाद में आगे चलकर उनमें ज्ञान के साथ ही साथ वैराग्य की भावना का उदय होता है। ज्ञान के द्वारा उनमें विशेष एवं अन्तःप्रज्ञा-शक्ति का जागरण होता है जिसकी परिणियत वैराग्य के द्वारा होती है जिससे उनके जीवन में ज्ञान वैराग्य प्रसार होकर ध्यान के लगता है और ज्ञान से अन्य लोगों को ज्ञानान्वित करता है।

४. कर्म संन्यास : इसमें उस प्रकार के लोग आते हैं जिन्होंने जीवन की तीन अवस्थाओं (ब्रह्माचार्याश्रम, शृण्वाश्रम, वानप्रस्थाश्रम) एवं उनके कर्मों को समाप्त कर लिया है, साथ ही जिनके संस्कार पूर्ण हो गये हैं। वे जीवन की चतुर्थ अवस्था में संन्यास धारण करते हैं। इस दृष्टिकोण से संन्यास आश्रम जीवन की चौथी अवस्था है। यह बहाही मनोरनन का विषय भी हुआ करते थे, बाने शारी करने के बाद भी संन्यासी ही थे।

है कि 'संन्यास उपनिषद' हर व्यक्ति के ७५ वर्षों की उम्र के बाद संन्यास लेने का उपदेश देता है। यह एक ऐसी आवश्यक प्रवासी विचारधारा है जिसे प्रत्येक मनुष्य सामाजिक एवं परिवारिक उत्तरदायियों का निर्वाह करके अपना सकता है।

इन सबका तात्पर्य यह है कि संन्यासी कोई भी व्यक्ति हो सकता है, जिसके मन में आत्म ज्ञान और त्याग की भावना विशेष रूप से हो। इसके साथ ही संन्यासियों में जो स्थितिक्रम बनता है उसे समझना आवश्यक है। संन्यास परंपरा की सीढ़ियां साधक, योगी, संन, गुरु, ऋषि, महार्षि, महात्मा और परमहंस क्रम में होती हैं। इन सब का तात्पर्य इस प्रकार से है -

**साधक : साधक का विशेष अर्थ होता है अपनी आध्यात्मिक विकास के हेतु साधना करने वाला। यह साधक शब्द गृहस्थ तथा संन्यास में वीक्षित प्रारंभिक अवस्थाओं के लिये व्यवहृत होता है।**

**योगी : वह व्यक्ति जो योगाध्यास करता है। यह उपाधि साधारणतः उस व्यक्ति को दी जाती है जो अपनी आनंद वेतना में दुक्षत हो। यह शब्द गृहस्थ और संन्यासी दोनों के लिए व्यवहृत होता है।**

**संत : जिसके अंदर समाता का भाव विद्यमान हो।**  
**गुरु : अज्ञान रूपी अनधिकार को दूर करने वाला वह महापुरुष जिसकी आत्मज्ञान की सिद्धि प्राप्त हो चुकी है और जो दुसरों को आध्यात्मिकता के रास्ते में उसकी शक्तियों के विकास हेतु मर्जवशीर्णि देता है तथा जिसके एक से अधिक शिष्य हों।**

**ऋषि : इस शब्द का अर्थ है मंत्रद्रष्टा, ये मंत्रद्रष्टा ऋषि गृहस्थ भी हुआ करते थे, बाने शारी करने के बाद भी संन्यासी ही थे।**

ज्ञानसाक्षात्कार के हेतु जंशल में निवास करते थे। इन्हीं नक्षत्रों ने वैदिक ज्ञान का उद्घाटन किया। अतः वेदों में ज्ञान वाले में विस्तृत ज्ञानकारी निलंबित है।

**महर्षि:** जो मन्त्र दृष्टाओं में भी श्रेष्ठ हैं। ऋषि से भी महर्षि की उच्चता श्रेष्ठ है। वह महान आध्यात्मिक पुरुष जिसने ज्ञानसाक्षात्कार की अनुभूति प्राप्त की हो। यह संन्यासी या ज्ञानसाक्षी दोनों के लिए व्यवहृत किया जाता है।

**महात्मा:** महान है जिसकी आत्मा वही है महात्मा या महान द्वन्द्व। महान सन्धारियों के लिए इस शब्द का व्यवहार किया जाता है।

**परमहंस :** जीवों में जो श्रेष्ठ है, वह है, परमहंस। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त संन्यासी इस महान पदवी से विमुक्ति किया जाता है।

### संन्यास का उद्देश्य

जीवन की शक्ति एवं किया कलाप इसीम है, कुछ नेत्र अपने जीवन को संकीर्ण बद्धनों से घरे उन शक्तियों को पहचानने में लग्न होते हैं, कुछ लोग अहंकार की सीमाओं को पार कर विस्तृत वैतन्य शक्ति में विचरण करते हैं, लेकिन ज्यादातर लोग अपनी पांच कमेन्डियों औंख, कान, नाक, जिहा एवं त्वचा से जो प्रत्यक्ष अनुभूति होती है वही तक जीवन को सीमित मान लेते हैं, लेकिन

जीवन का दायरा बहुत विशाल, असीमित और अनन्त है जब ऐसे लोग अपनी सीमा से बाहर आते हैं तो उन्हें अपने अल्लान का पता चलता है, वे चेतना की गहराई में प्रवेश कर अपने और दूसरों के प्रति विचार बदलने लगते हैं। संन्यास का उद्देश्य

चेतना का विकास करते हुए सही विचारधारा को स्थान देना है, संन्यास उद्देश्य ही लोक कल्याण के लिए कुम देवी शक्तियों से परिचय करना है।

पृथ्वी पर मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने आंतरिक ज्ञान, प्रकाश एवं आनन्द को प्रकाशित करने में समर्थ होता है। वही एक मात्र ऐसा प्राणी है जो धीरे-धीरे अपने धीरतर छिपे हुई आनंदिक शक्तियों को जगूत कर सकता है।

सामाजिक रूप से संन्यास का उद्देश्य लोगों में समझदारी और एकता स्थापित करना है। उनकी महाप्रता कर पूर्णता एवं मधुरतापूर्ण जीवन विताने की प्रेरणा देता है, भवते अर्थ में

संन्यास का अर्थ पूर्ण शांति प्राप्त करना और चेतना को जागृत करना है, इसका लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार है। संन्यासी उसी को कह सकते हैं, जो अपने स्वभाव, संस्कार, इच्छाओं को जानने की जिम्मे में स्वाहा कर दे, जिससे वह अपने और जीवन के विषय में पूर्ण रूप से समझ सके।

जीवन बरसाती नदी की तरह निर्वय होता है, वह कहीं स्फुटता नहीं, मार्ग की बाधाओं को टक्कर देते हुए आगे बढ़ता है, ठीक इसी तरह संन्यासी भी जीवन की सभी परिस्थितियों को रुकीकार कर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता रहता है। संन्यासी की संपूर्ण किया उसकी आंतरिक प्रेरणा एवं

स्वभाव पर आधारित होती है क्योंकि संन्यास का उद्देश्य ही स्वतंत्रता है। यह स्वतंत्रता बाह्य जीव की स्वतंत्रता नहीं अपितु आंतरिक जीवन की स्वतंत्रता है। कई व्यक्ति तरह-तरह के कपड़े पहन कर बाह्य चेष्टाओं और क्रिया कलाओं में पागलपन का प्रदर्शन करते हैं और वह साधित करना चाहते हैं

कि वे स्वतंत्र हैं, संन्यासी हैं, लेकिन वास्तव में वे स्वतंत्र नहीं हैं, क्योंकि स्वतंत्रता का संबंध तो मन से है संन्यासी भले ही बाह्य रूप से बंधनों से जकड़ा हुआ प्रतीत हो लेकिन वह आंतरिक रूप से पूर्णतः स्वतंत्रता का अनुभव करता है।

संन्यासी योग का रास्ता अपनाता है, अपने आंतरिक स्वतंत्रता को पूर्ण बनाने के लिए भीतिक वस्तुओं पर अवलंबित नहीं रहता है। संन्यासी न किसी वस्तु को प्राप्त करने की मन में इच्छा रखता है और न ही प्राप्त वस्तु को अस्वीकार करता है जो भी मिल जाए उसी में संतुष्ट रहता है।

संन्यासी भूतकाल की चिंता तथा भविष्य की योजनाओं के बिना सदैव पूर्णरूप से वर्तमान में विचरण करने का प्रयास करता है।

जब मनुष्य पूर्णरूप से वर्तमान में रहने लगता है तो इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति विशेष के, विचारों एवं कार्यों में क्षमता है, ज्ञानादार लोगों के कार्य और विचार आधे हृदय से होते हैं, क्योंकि उनका ज्ञान भूत भविष्य की घिना, बाह्य अथवा किसी वस्तु की भाशा से चिंचा रहता है।

संन्यासी निरर्थक विचारों को त्याग कर सुख और दुख की परवाह किये बिना अपने हाथ में लिए गए कार्य को पूर्णता एवं तल्लीनता से करता है।

संन्यासी के लिए जीवन परीक्षा स्थल है वह भीतिक पदार्थों पर अवलंबित नहीं रहता। भीतिक वस्तुओं का प्रयोग मात्र अनुभव करने के लिए करता है, भोग के रूप में नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति जो अंधकार में डूबा हुआ है वह सदैव भवधीत रहता है कि उसे जीवन में कुछ खोना न पड़े, इसीलिए वह पुरानी मान्यताओं और भीतिक अधिकारों की कायम रखना चाहता है, जबकि संन्यासी जीवन में प्रत्येक अवसर का सुधुप्रयोग करते हुए सुझाम में प्रवेश करता है, इसी से उसमें आंतरिक स्वतंत्रता की प्रेरणा जाती है।

संन्यासी इस बात का अनुभव करता है कि कोई भी वस्तु उसके लिए आप्राप्य नहीं है, इसी लिए वह अपने पुराने विचारों, मान्यताओं से मुक्त होकर स्वतंत्रता की खोज के लिए निकल पड़ता है।

संन्यासी के लिए यह आधारभूत सत्य रहता है कि वह बिना डरे आगे बढ़ता रहता है क्योंकि यह सत्य है कि 'जो खोता है वह पाता है, और जो अपना बचाव करता है वह हमेशा के लिए खोता है'।

संन्यासी के लिए जीवन एक प्रयोगशाला है और वह वैज्ञानिक की तरह होता है। जब तक स्वयं अनुभव से किसी चीज का ज्ञान न हो जाए तब तक वह स्वीकार नहीं करता।

संन्यासी का जीवन प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित रहता है, न कि गलत विश्वासों पर। संन्यासी वास्तविक जगत में विचरण करता है, व्यर्थ काल्पनिक विचारों, विवास्वन, इच्छाओं में अपना समय बर्बाद नहीं करता। संन्यासी अपने जीवन में वर्तमान सीमाओं से परे जाने का प्रयास करता रहता है। गुरु निर्देशन में उपने प्रयत्नों के फलस्वरूप अपने अंतर्शन के दरवाजे को खोलना और अनुभव करना चाहिए। इसीलिए संन्यासी में भक्ति का एक आग होता है और भक्ति विश्वास तथा अविश्वास की सीमा से परे है।

संन्यास का और अध्यात्म का मूल वैराग्य अर्थात् त्याग और अनासक्ति है। संन्यास जीवन में अनासक्ति और त्याग को इतना अधिक महत्व इसलिए दिया जाया है कि जीवन में भीतिक वस्तुओं की उपलब्धि और उनके पीछे मार्गने से मनुष्य का उनका गुलाम हो जाता है, इससे उसकी संकल्प शक्ति कमज़ोर हो जाती है। जीवन के प्रति अनुभव और समझ भी कमज़ोर हो जाती है।

यदि मनुष्य जीवन की कार्यों में हिस्सा लेता रहे लेकिन उसकी प्रवृत्ति अनासक्त रह तब उसके जीवन का निर्माण नये ढंग से हो सकता है।

संसार में भीतिक जीवन का भी अनन्द लेना चाहिए, लेकिन एक ही कार्य को बार-बार करने से उस कार्य की आवृत पड़ जाती है और वह आवृत आसक्ति बन जाती है जिसके कारण आंतरिक प्रेरणा और सुझाम चेतना का विकास रुक जाता है। संन्यासी के लिए भीतिक त्याग की अपेक्षा आंतरिक त्याग का भाव अधिक आवश्यक है। कई संन्यासी गेल्प वस्त्र धारण करते हैं, तो कोई अवश्यूत या विगम्बर की स्थिति में रहने ऐसे सब नाटक मात्र हैं, ऐसे कार्य भी उसे अहंकार के मर्ज पर ले जाते हैं। दाढ़ी बढ़ाए या कटाए इस बात का महत्व नहीं है, धर्म केसे पहने इस बात का महत्व नहीं है, क्योंकि यह सब बाह्य भाव हैं। संन्यासी का न तो कोई गिर होता है और न कोई शब्द, सभी उसके लिए परिवर छोता है। संन्यासी ये सांसारिक वस्तुओं धृणा भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह एक नकारात्मक भाव है।

अष्टवक्र गीता में स्पष्ट रूप से लिखा है कि-

संन्यासी या संत संसार के कार्यों में उलझे रहकर भी पूर्ण उत्तमता रहते हैं। वह जीवन को एक रंगमंच मात्र समझता है, इसी मात्र से जो भी कार्य हाथ में लेता है उसका अभिनय अदा करता है।

### आधुनिक जीवन में संन्यास

अब प्रश्न उठता है कि क्या पिर के बाल मुड़ाने अथवा चर के बाल और दाढ़ी बढ़ाने वाले को ही संन्यासी कहते हैं?

क्या गुफा, कन्दराओं में रहने वाले व्यक्ति को ही संन्यासी कहते हैं जो समाज से कटकर साधना तपस्या करने वाले को ही संन्यासी कहते हैं?

संन्यास की यह वास्तविक व्याख्या नहीं है, आधुनिक समाज में व्यक्ति को हर स्थिति में सक्रिय होना पड़ता ही है। पहले के संन्यास में व्यक्ति जीवन से भाग कर निष्कृत्य बनकर ऊपर करता था, लेकिन वर्तमान समय में संन्यास का सही अर्थ है किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से स्वेच्छनता से करना। जीवन में कार्य करना ही लेकिन आंतरिक रूप से अप्रभावित रहना है सबसे बड़ा संन्यासी तो गृहस्थ व्यक्ति होता है जो संसार के सारे कार्यों को करते हुए भी अपनी आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत रखता है। वह किसी से भी ख़िन्नी मांशता, किसी भी प्रकार का नाटक नहीं करता, अपितु इस संसार चक्र को दृष्टि की भाँति देखते हुए भी उससे अविचलित रहता है।

वास्तविक संन्यासी अपनी स्वभाविक शक्ति और क्रियाशीलता को बढ़ाता नहीं है अपितु अपनी वास्तविक शक्ति और क्रियाशीलता को उच्चतम स्तर पर ले जाता है। मोहम्मद साहब, गुरु नानक, कबीर, संतुकाराम, रामकृष्ण परमहंस को हम महान संन्यासी अवश्य कहते हैं। उनकी पूजा अराधना करते हैं इन सब ने भी तो गृहस्थ जीवन धारण किया और गृहस्थ जीवन को पूर्ण रूप से निभाया। विवाह तो जीवन का एक परिस्थिति है, लेकिन उसके साथ जो आध्यात्मिक प्रेरणा है वह गुरु के निर्देश से आपको श्रेष्ठ जीवन संन्यासी बना सकती है।

संन्यास सुजनात्मक शक्तियों का विकास करता है। वह आलस्य शिथितता की ओर नहीं ले जाता। संन्यास विकारों की संकीर्णता और जड़ता को दूर कर मन को स्वतंत्र और उन्मुक्त रखता है जिससे व्यक्ति अपने विचारों और भावों को संचनात्मक कार्य की ओर प्रेरित कर सकता है। मैं तो यह कहता हूँ कि संसार में जितने भी महान वैज्ञानिक रचनाकार

और महापुरुष हुए हैं वे सबके सब संन्यासी ही थे जो अपने चरों ओर की आलोचनात्मक वातावरण को परवाह किए थिना जीवन में आगे बढ़ते गये इसी कारण संसार में नये अविष्कार हो सके। संसार को महान रचनाएं प्राप्त हो सकी।

### उत्कृष्ट प्रबोधीज्ञानिक पद्धति

मनुष्य का जीवन निरंतर विरोधी परिस्थितियों के बीच चलता है। इसे द्रुन्द कहते हैं। ये अच्छे और बुरे, सुख-दुःख, स्वीकृति-अस्वीकृति, प्रेम-घृणा इत्यादि के एक दूसरे से ठीक विपरित होते हैं। इस तरह का द्रुन्द मनुष्य के मन के निरंतर उत्तात, उत्तेजना, विशिष्टता तथा अस्थिरता का कारण बनते हैं। जिसके कारण वे मनुष्य के अन्दर की शांति, ज्ञान और आनन्द की छीन लेते हैं।

संन्यास पूर्व अनुभव से जात मन को संतुलित करने का रसना है। यह धीर-धीर मानसिक द्रुन्द को समाप्त करती है जिससे मनुष्य निर्द्रित हो जाता है, मन प्रत्येक द्रुन्द एवं विरोधी के बीच पूर्ण रूप से शांत एवं संतुलित हो जाता है। संन्यास जीवन मनुष्य के अन्दर की समस्याएं हीन-मात्रा, अद्यहीनता, तक, प्रय, निराशा आदि को दूर करता है। इस तरह से यह मनुष्य के मन को पूर्णतः मंत्र की तरफ बदल देता है जो कि हमारे अन्दर दुख को आनन्द में तथा द्रुन्द को ज्ञान की सीमा में, जिसे प्राप्त करने के लिए हमें वर्षों या कई जन्म-जन्मान्तर से भटक रहे हैं पहुँचा देता है।

इसी लिए सद्गुरु देव ने अपने प्रवचन ने बार-बार कहा कि मेरा प्रत्येक शिष्य जो साधना करता है वह संन्यासी ही है क्योंकि वह क्रियाशील है और अपनी क्रियाशीलता और अधिक निरंतर विकास के लिए प्रयत्नरत है। इसी लिए संन्यास जीवन में गुरु का होना एक महत्वपूर्ण संयोग है और संन्यास जीवन के लिए दो बातें विशेषरूप से आवश्यक है वह है अभ्यास और वैराग्य। अभ्यास के अंतर्गत योग के अन्य मार्ग कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञान योग, ध्यान, इष्ट स्वरूप अजपाजप आते हैं और वैराग्य का तात्पर्य है कि पूर्णता की प्राप्ति किस प्रकार हम अपने शरीर को और मन को शुद्ध शक्तियों से युक्त कर सकते हैं और जीवन में पूर्ण रूप से स्वतंत्र रह सकते हैं वही सच्चा संन्यास है।

और इसी संन्यास की प्रेरणा पूज्य गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने दिये हैं और हम सब शिष्य उसी स्वतंत्रता के संन्यास पथ पर निरंतर बढ़ते चलते रहेंगे।

कार्तिक मास संवत् २०५८

# दशहरी की वापी

ग्रेष

(इ. चौ. चू. ली. तू. लो. अ.)  
समय आपके अनुकूल है परन्तु नन्दवानी न आए, सबसे सलाह लेकर ही करें करें, लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। अद्यालनी नमली में शब्दवीड़ करनी पड़ेगी। कला में जुड़े व्यक्तियों की छप समय लचाच में गान भाग्यवान होगा। अधिक वर्ण व्याप्ति के बाहर ले जाएं। किसी के बहकावे में आकर काँच न करें। स्वास्थ्य के प्रति नलपरवाही न करें। महिलाओं के लिए यह समय अनुकूल है। जारीबार देविस्तार होने की नमामन है। इस मास आप पूरी सफलता तथा बाधा निवारण के लिए 'शिव साधना' अवलंभ रखें। इस मास की शुभ तिथियाँ १, २३, २५, २६, २७ हैं।

शुक्र

(इ. उ. ए. रा. ली. तू. वे. दो.)  
कारोबार देविस्तार होने गे प्रसन्नता होगी। कारोबार के लिए यात्रा करनी पड़ सकती है। कोई अपेक्षित आने पर घबराए नहीं, डूर कर मुकाबला भरें। धन का अपनाया न लेने दें, विद्युते पर काढ़ रखें स्वास्थ्य उपकरण, मिश्र परं स्वधियों से सहयोग प्राप्त होगा। विशेषज्ञार व्यक्तियों को रोजगार भास हो सकता है तथा कार्यों में अपनाना भी प्राप्त होगी। धार्मिक कार्यों में बढ़ा-चढ़ा कर विद्यमा लें। बच्चों की ओर से शुभ रुग्णाचार प्राप्त होगा। इस मास आप 'शिवीनी साधना' अवलंभ करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ५, ११, १६, २१ और ३० हैं।

मिथुन

(का. करि. कू. य. छ. को. हा.)  
हम यास आप धार्मिक। न मारनिक जायों में व्याप्त रहें। अधिक वृद्धि से सफलता प्राप्त होगी। जुड़े लूटियों के साथीों में दृढ़ होगी। व्याप्ति के संबंध में नाप्रवाही न बरतें। सेवाना एवं आपके अनुकूल होगा। ये वर्षा यात्री से सहयोग प्राप्त होगा तथा मिश्र पूर्ण संबंधी भी सहयोगी सिद्ध होगे। नीकरी पेशा लोगों के लिए यह अच्छा समय है। वह तरकीकी का समय है। अधिकारियों से प्रोत्याहन प्राप्त होगा। करोंवर के सम्बले में यश करनी पड़ेगी। व्याप्ति के विवादों और झगड़ों में न पड़े अन्यथा हानि हो सकती है। अमीन-जायद वर्ष का इस विशेष तमस न करें। अधिक वर्ग के लिए यह समय अनुकूल है। इस मास की शुभ तिथियाँ १, ५, ८, ११, १८ तथा २४ हैं। इस मास आप 'धूमाकरी साधना' अवलंभ रखें।

कठीन

(ही. हु. हो. डा. डी. डे. डा.)  
पिछले कुछ समय से आप जो परेशानीयों का अनुभव कर रहे हैं उनका निवारण होगा। इस मास आप पूरीता, आप नव्युक्त रहें। इष्ट-पूजन तथा गुरु पूजन की ओर सम्मान रहेगा। यथा करते समय स्वास्थ्य के द्व्यान रखें तथा बाहर ध्यान से चलाएं। नीकरी पेशा लोग अधिकारियों से व्याप्ति विवाद न करें तथा समय से ज्यादा लें। बाम्पत्ति नीवन सुर्खी रहेगा तथा मंत्रान पक्ष की ओर से भी दूष सम्बान भार प्राप्त होंगे। महिलाओं के लिए यह बहुत ही अनुकूल समय है। उन्हें धन लाभ हो सकता है। विवाहियों के लिए

यह समय कहे परिश्रम का है। किसी भिन्न के सहयोग से रज्जा बाधा का समर्थन होगा। इका दूजा धन प्राप्त होगा। शारु आपको हानि पहुँचाने की विशिष्ट क्रियों परेनु सफल नहीं हो पाएंगे। इस वास आपको मिली से विशेष लाभ प्राप्त होगा। कारोबार को अपो और न बढ़ावा दें। इस मास आप 'हनुमान साधना' अवलंभ सम्पन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ १, २, १२, १३, २३, २७।

लिंग

(मा. मी. मू. मे. मो. दा. टी. द्व. टा.)  
आप में नेतृत्व का गुण कूट-कूट कर भरा होगा। आप जो भी कार्य करते हैं त्वयि की दूष वृश्च में तथा वैतानिक निर्णय से करते हैं। यह मास आपके लिए बहुत अनुकूल है। ल्यारथ्य में कुछ गडवाई हो सकती है। अतः नाप्रवाही न बरतें, किसी के बड़कावे में भी न आदेत्या बाहन मरणों के समय विशेष लावधानी बरतें, स्वर्ण के लिए यथा बांधों में विशेष रापनाला प्राप्त होंगी। कारोबारी नमलों में सतकी रुक्त तथा सांकेदारी से भी सावधान रहें। विशेषज्ञार व्यक्तियों के व्यवहा करना चाहिए कि कोई रोजगार प्राप्त हो। प्रोत्याहन इंद्रजट्टु ने सपनाला प्राप्त हो सकती है। धार्मिक कार्यों में सभी रहेंगी तथा याचा भी करनी पड़ सकती है। इस मास आप 'पृथ्वीवर्ष महालक्ष्मी साधना' अवलंभ करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ५, १४, १२, १६, २५, २८ हैं।

बुधवार

(टो. एा. पी. पू. अ. य. ठ. वे. ए.)  
इस मास आपको बहुत सुनाए अवलंभ प्राप्त होंगे और अपर आप सुध-बुझ से काग लेने तो आशाती सफलता प्राप्त होगी। इन अवसरों को जुक नहीं। यह समय भावना और महसुस का नहीं है। अपिनु सुख-बुझ से निशाय लेने कहे। कोई ऐसा निशाय न ले कि बाद में पछताना पड़। व्यापार बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उत्तम समय है। परंतु व्यापार साझेदारी में न करें। राज्य की ओर से भी आप को सहयोग प्राप्त होंगा। जीवन सार्थी, मिश्र ज्येष्ठ संबंधी भी सहयोगी निश्च होंगे। तात्पर देने पर घबराए नहीं। शीघ्र ही समाधान प्राप्त होगा। देश के द्वेष में सफलता प्राप्त होंगी तथा विवाह का योग भी है। अधिक वर्ग के लिए यह समय कुछ विशेष अनुकूल है। आप 'अन्नपूर्णा साधना' अवलंभ सम्पन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ४, ५, ३०, ३१, २५, ३१, ३२ हैं।

तुला

(श. री. रु. ता. ती. तू. ते.)  
इस मास व्याप्ति की दृष्टि से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। युर्ध्वरात्रि भी ही सकती है। अधिक विशेष भी कमज़ोर रहेंगे। अतः ध्यान में व्यवहार करें। व्यापार में जानि होने की संभावना है, इसलिए बहुत ही नाप्रवाही कीर्ति करें। धन के मामलों में धोखा हो सकता है। किसी भर विशेषज्ञ न करें। नीकरी पेशा लोगों के लिए भी यह समय प्रतिकूल है। अधिकारियों से विवाद न करें। अधिक वर्ग की भावना रहें तथा ध्यान से कार्य

उत्तरी	सिद्धन
नवाच	व्रम्भ
व्रम्भ	किपुष्ट
किपुष्ट	नुक्तु
नुक्तु	जिमा
जिमा	नाम संक्ष.
नाम संक्ष.	न विद्या
न विद्या	न इस
न इस	१५, २५,
१५, २५,	त्रुटिस्त
त्रुटिस्त	कालाली
कालाली	उक्त नवी
उक्त नवी	लालस्यन
लालस्यन	कर्म में सं
कर्म में सं	विनीती नव
विनीती नव	स्वकर्म
स्वकर्म	कर्मों नव
कर्मों नव	मुक्तयों में
मुक्तयों में	सुखद सम
सुखद सम	नाम तिथि
नाम तिथि	द्यातु
द्यातु	नहींदोनी
नहींदोनी	विज्ञेयोंके
विज्ञेयोंके	नुक्त का
नुक्त का	संबंध सम
संबंध सम	करने पह
करने पह	डागी
डागी	प्रा
प्रा	रत्नों। अ
रत्नों। अ	द्विविधापू
द्विविधापू	मह आ
मह आ	नियतियों
नियतियों	मरकर
मरकर	दोगो। का
दोगो। का	की भी सं
की भी सं	जीवन सं
जीवन सं	जनहृत
जनहृत	किसी वि
किसी वि	तिप शी
तिप शी	करने के
करने के	तमय व्य
तमय व्य	नाम की

ज्योतिष, अमृत, संयुक्त, पुष्य, हिमुष्यर, शिखि योग	1-2-7-13-15 नवम्बर
सर्वार्थ सिद्ध योग	5-11-18 नवम्बर
अमृत सिद्ध योग	5-08 नवम्बर
शिखि कर्क योग	03 नवम्बर
मुख पुष्य योग	08 नवम्बर

नहीं निम्नसे दर्शनाएँ न हों। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में केवल आपका जीवन की सहायी सिद्ध होगा। परिवार की उपेक्षा न करें। अपने निर्णय स्वयं के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि सफलता हेतु वे पुरे परिश्रम से कार्य करें। इस मास 'गुरु साधना' अवश्य करें। इस मास की शुभ तिथियाँ १, २, ५, १२, २३, २८ और ३० हैं।

### त्रुटियकृत (तो, जा, भी, तू, ने, जी, या, यी, यु)

आप बहुत ही बुद्धिमान हैं और बहुत ही कम लोग आप को जानकी द्वारा परामर्श कर सकते हैं परन्तु अपनी बुद्धिमानी पर धमापद करना चाहिए नहीं। नम्र होना भी एक गुण है, जिसकी इस मास आपको अधिक अवश्यकता है। नहता द्वारा आप दूसरे का दिल जीत सकते हैं तथा अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। धार्य स्वयं में आपकी लोकप्रियता होनी तथा मिथ्यायोग सिद्ध होगी। इस समय आपका निवारण भी हो सकता है परन्तु संघर्ष न होने तथा मौलिक निर्णय से कार्य करें। धार्यकृतों तथा यात्राओं के लिए यह समय बहुत ही अनुकूल है। इस समय अनुकूलन में न केंद्र। परिवार में सुख-शानि रहेगी। विद्यार्थियों को बहुत ही सुख समाजार प्राप्त होगी। इस मास आप 'ब्रह्माण्डी साधना' अवश्य करें। शुभ तिथियाँ ६, १४, १९, २३ और २० हैं।

### धर्म

(ये, यो, आ, भी, था, था, था, थे, थी)

किसी संबंधी के कारण घर में विवाद हो सकता है। शिव भी नहियोगी सिद्ध नहीं होगे। शशु आपको छानि प्रभुचने की बोशिता करेगे। जिसी के बहकावे में न आएं तथा विवादों में दूर रहें। मनस्तिक चिंता होने पर गुरु का ध्यान करें। नीवन मार्यों से मतभेद न होने दें। अगर आप मधुर-ब्रह्म बनाए रखते हैं तो अनुकूलता प्राप्त होगी। करोड़ों मामलों में यात्रा करनी पढ़ सकती है। धार्यकृत एवं मानसिक कार्यों से मानसिक चिंता दूर होगी। प्रेम प्रसंगों में साधारणी बदलें तथा अपने मान स्वामान का ध्यान रखें। अच्छों के प्रति लापरवाही न बरतें। अधिक वर्ष के लिए यह समय दुष्प्राप्ति ही सकता है जबन्तु मास के अंत तक शुभ समाचार प्राप्त होंगे। इस माह आप 'महामृत्युजय साधना' सम्पन्न करें। इसी माह की अनुकूल तिथियाँ ३, ९, १४, १९, २३, २० और २५ हैं।

### मक्कर

(ओ, जा, जी, तू, ने, यो, आ, भी)

इस मास संघर्ष और सूख-बुझ से हो कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में विस्तार के लिए यह अच्छा समय है। नीकरी में पंडोत्रिती भी भी समावना है। पुजाओं से बचने का प्रयाप्त करें। इस समय आपको नीवन साधी से उठित सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय अनुकूल है। उच्छेद परिक्षाओं में तथा इंटरव्यू में सफलता प्राप्त हो सकती है। किसी विद्येष कार्य पर जाने समय बेत बरबर धारण करें। धार्यकृत वर्ष के लिए यह समय अच्छा है। अधिक लाभ हो सकते हैं। नये कार्य प्रारंभ करने के लिए ध्वनि निर्माण तथा नीमीन जायवाह स्थानों-बेचने के लिए यह समय बहुत अच्छा है। इस माह आप 'सरस्वती साधना' सम्पन्न करें। इस नाट्रों की शुभ तिथियाँ १, ५, १२, १४, २२ और ३० हैं।

## ज्योतिष की दृष्टि से कार्तिक २००९

पूरे वर्षीने विश्व में तनाव का मालौल रहेगा, कई स्थानों पर छोटे-छोटे पृथक् होने की पूर्ण संभावनाएँ हैं। प्राकृतिक वृष्टि से वेज में अच्छी स्थिति अवश्य बनायी लेकिन पवोसी वेशों के साथ संबंध और अधिक चराब होंगे। राजनीतिक वृष्टि से भी उथल-पुथल रहेगी इसके अन्वयावाकिसी एक और बड़े नेता के जीवन पर भी संकट आ सकता है।

### कुम्भ

(ब्र, ग्र, गो, स्त, सौ, तू, ने, रो, अ)

इस समय मिथ्य संवर्धियों और जीवन अशी के सहयोग से आपके स्त्रीहृत कार्य पूरे होंगे। परन्तु साझोदारों पर अधिक विश्वास न लगें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा चित्त भी प्रसन्न रहेगा। इस समय सक्ता हुआ प्रातः होगा। परिवारिक जीवन में इस समय अच्छा रहेगा। घर में मांगलिक कार्य होंगे। व्यापार में विशेष लाभ होगा। व्यापार के कारण यात्रा करनी होगी जो कि अनुकूल सिद्ध होगी। बेगों बगार व्यक्ति वृसरों के सहयोग से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। प्रेग में भी सफलता प्राप्त होगी। इस मास में पूरी अनुकूलता प्राप्त करने के लिए 'विशिष्ट साधना' सम्पन्न बनना बेष्ट रहेगा, इस मास आपको अनुकूल तिथियाँ १, २२, ३६, ३८ और २६ हैं।

### मीठा

(ब्र, दू, था, द्वा, थे, थी, था, थी)

आपके सहयोग से आपके भिन्नों भाइ संबंधियों को लाभ होगा तथा समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। इस माह आपको बहुत यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं परन्तु ये यात्राएँ आपको उत्तरि भी और उत्तरार करेंगी। प्रेम प्रसंगों में बाधाएँ आ सकती हैं। परन्तु नास के अन्त तक अनुकूलता प्राप्त होगी। औरीरों से राना होने की अंतिम स्वयं की मीलेक बृहा-बृहा ले नियम ले। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दें। कोई भी कार्य जन्मदानी में न करें। धार्यकृत एवं मानसिक कार्यों में स्वीकृती। कुछ पुराने भिन्नों से मेट होने से मन में प्रसन्नता होगी। इस मास व्याय अधिक होगा परन्तु आव में भी वृद्धि होगी। नीवन साधी से पूरी सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी परिश्रम द्वारा अवश्य ही सफलता प्राप्त करें। इस समय आप 'कीमारी साधना' सम्पन्न करें। इस मास आपकी अनुकूल तिथियाँ १, २६, ३८, २४, २९ और ३० हैं।

## इस मास के द्रव, पर्व एवं त्योहार

१ नवम्बर-	आस्तिन शुक्ल पक्ष तिथि - १५ - गुरुवार शरद युग्मिया
४ नवम्बर-	कार्तिक कृष्ण पक्ष तिथि - ०३ - शनिवार करवा चौथ द्रव,
८ नवम्बर-	श्री गणेश चतुर्थी
११ नवम्बर-	कार्तिक कृष्ण पक्ष, तिथि - ११ - शनिवार, रमा पक्षवती द्रव
१४ नवम्बर-	कार्तिक कृष्ण पक्ष, तिथि - १४, चूतवार, श्री महालहमी पूजन, दीपावली, श्री द्वादशी जयती
१५ नवम्बर-	कार्तिक कृष्ण पक्ष, तिथि - ३५ गुरुवार, गोवर्धन पूजा, विश्वकर्मा पूजा
१७ नवम्बर-	कार्तिक शुक्ल पक्ष, तिथि - ०२ शनिवार, शाईकून
२३ नवम्बर -	कार्तिक शुक्ल पक्ष, तिथि - ०४ शुक्रवार, गोपालमी

# सामाया

लाईक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह अप बहां प्रस्तुत है।  
जोकिसी भी व्यक्ति के जीवन में उभारी का व्याप्ति होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं

आपने लिए उभारी का मर्दी प्रशंसन कर सकते हैं।

जीवे की वर्षीयार्थी में समय को प्रेष्ट अप में प्रस्तुत किया जाता है - जीवन

के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, आहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो,

जौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो ग्रथवा

अवधि किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस प्रेष्टम समय का

उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9; आपके भाव

में ड्राइफ्ट हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।**

वार/दिनांक	शेष्ठ उत्सव
शुक्रवार (५ ११ १२ २५ नवम्बर)	दिन ७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से २.०० तक
सोमवार (५ १२ १५ २६ नवम्बर)	दिन ८.०० से १०.४८ तक १.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६
मंगलवार (६ १३ २० २५ नवम्बर)	दिन ६.०० से ७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६ तक
बुधवार (७ १४ २१ २६ नवम्बर)	दिन ६.४८ से ११.३६ तक रात्रि ६.४८ से १०.४८ तक २.०० से ४.२४ तक
गुरुवार (१ ८ १५ २२ २९ नवम्बर)	दिन ८.०० से ८.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार (२ ९ १६ २३ ३० नवम्बर)	दिन ९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक २.०० से ६.०० तक रात्रि ९.२४ से १०.४८ तक १.१२ से २.०० तक
शनिवार (३ १० १७ २४ नवम्बर)	दिन १०.४८ से १२.०० तक १.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ६.०० तक



# यद्युमीने नहीं किया है तो कहाँ

किसी भी कार्य को प्राप्ति बजाए ते पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होनी या नहीं, जाश्न तो उपलेख नहीं तो जावेगी, पता कहीं दिन का प्राप्ति किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर क्या स्वर्ण के तबाहीनत कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाता रहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हर आनन्द मुक्त बन जाय, कुछ ऐसे ही उपाय आपने समझ प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विषय प्रकाशित-अप्रकाशित खंडों से संकलित हैं, जिससे वहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत विद्या गया है तथा जिससे सम्प्रभ करके पर आपका पूरा धूम पूर्ण सफलतादातक बन सकेगा।

## नवम्बर

1. प्रातः, काल चूध देव को पूष्य, सफलता नहिं जल अपित करें।
  2. आज कोई शो नाशना सम्पाद करें।
  3. प्रातः वरसेबाहर निकलने से पहले गुरु मंत्र की एक माला जप जरूर।
  4. नाथ को रोटी तथा गुड़ दें। पूरा दिन प्रसन्नतामय रहेगा।
  5. आज रोमवार है, तो नमः शिवाय मंत्र का जप करने हुए तीन विलय पर अपावन शिव जी अपित करें, तभी प्रस जाए।
  6. मंगलवार के दिन हनुमान जी के भानगे तेल का दीपक लगाएं तथा शिवर अपित करें।
  7. कुछ काल निल लेकर तीन बार दिश पर धुगाएं, फिर घर से बाहर भेज दें। बाधा दी का निवारण होगा।
  8. गुरुवार के दिन प्रातः गुरु मूर्गल करके ही घर से बाहर जाएं। पूरा दिन प्रसन्नतामय होगा।
  9. प्रातः पांच मिनट तक सोहङ्ग मंत्र का जप करें। शानि प्राप्त होगी।
  10. प्रातः अनन्त करने के पश्चात भैरव मंत्र कुर्बाब नमः का ११ बार जप करें।
  11. ऊर्ध्वांश सूर्य आविन्याय नमः का ३ बार जप करें, तभी घर से जाए।
  12. घन च्याढ़ी के दिन प्रातः श्री सुक्त का पाठ जरूर तथा श्री लक्ष्मी के चित्र के समस्त दी ला दीपक जलाएं।
  13. निखिल स्तवन के प्रधाम पांच ऋतों का जप करने के पश्चात घर से जाए।
  14. दीपावली के दिन प्रातः, काल संधिग्रह लक्ष्मी पूजन करे तथा ऊर्ध्वांश श्री लक्ष्मीवासुदेवाय नमः मंत्र की एक माला जप करें। रात्रि में त्रिलूप पूजन करें।
  15. श्री गोवर्धन पूजन दिवस पर श्री कृष्ण का पूजन करे तथा भन्नी कृष्णाय शोभीजन वल्लभाय स्वामी मंत्र का एक माला जप कर।
  16. गणपती कुर्मा का ध्यान जरूर करें तथा शुभ अपित करें। नमः का ५ बार जप जाए।
  17. आज तुमरों के बीच में जल अपित करके तीन प्रदक्षिणा करें। सफलता प्राप्त होगी।
  18. घर के द्वार पर स्वाभिक का निरांग कल के उत्तर पर अक्षत घलाएं।
  19. सौमाय गुटिका (न्योडावर ५१/-) को जेब में स्वरक कर जप रह जाए।
  20. प्रातः पांच बर्ती का दीपक पूजा ध्यान में लगाकर द्वेषह से सफलता की ग्राह्यता करें।
  21. गुरु जन्म के दिवस पर दूर्वा विश निधान सहित गुरु पूजन करे तथा गुरु सेवा हेतु संकल्प लें।
  22. देवी के मंदिर में जाकर ५ लाख पूज्य अर्पित करें।
  23. गोपालमी के दिन पांच गदों को रोटी तथा गुड़ दें।
  24. शनिवार के दिन कानी डड़द का दान अरे, सप्तलता प्राप्त होगी।
  25. सरस्वती देवी का ध्यान करे तथा पाल बाट ऊर्ध्व वालेष्व च विशाह कमशानाय धीमहि, तजो नेत्रा प्रचोदयात् ना जप करें।
  26. आज भगवान रागपति को प्रातः दूर्वा अपित करे तथा लहू का भोज लेनाएं।
  27. प्रातः पांच दीपे पूज्य गुरु का अपित करे तथा सफलता की ग्राह्यता करें।
  28. शकुओं का वरास्त करने के लिए आज अर्क भूखी मंत्र का प्रातः ५ बार जप करें।
- ॐ हल्ली बनलामुखी वर्षदृष्टानां वाच सुखे  
पहं सत्यं नीहा वीलय कुर्ले विनाशय इन्नीं फह्।
29. लिलो विष मंदिर में नावर दिवालिंग पर दूध एव चन्द्र अपित वर्ते।
  30. पूर्णिमा के दिन खोर का शोण एवं जान विष्णु को लगायें घर से जाएं।

उप संस्कृत प्रतिष्ठित

ज्ञान प्राप्ति के लिए युवा चेलों में अद्वा उपनिषद है।

## यथा पिण्डे : यथा ब्रह्मण्डे

### ऐतरेय उपनिषद

अब तक अपने इत्यावश्यकतापूर्वक, केवल उपनिषद कठोरपनिषद, प्रचल उपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूकयाची-पर्वनिषद, शीतिरीयोपनिषद वा अद्याचाच परिका के पूर्व अंकों में पढ़ा है। इस अंक से ऐतरेय उपनिषद का इत्यावश्यकतापूर्वक सिद्धेष्ट उपनिषद किया जा रहा है।

पिछले अंक में इस उपनिषद के प्रथम अद्याचाच के दो खण्डों का विच्छृङ्खला विषेषक किया गया था। ऐतरेय उपनिषद वाच्यात ही सहत्यपूर्ण उपनिषद है, जिसके इस उपनिषद में जीव की उत्पत्ति देवताओं व देवान का विच्छृङ्खला विवरण है। प्रचलुत अंक में प्रथम अद्याचाच का दृश्यो व्याप्ति विवरीय अद्याचाच और दूसरी अद्याचाच विच्छृङ्खला विवरण है।



### इतरीजीवसंहीनपद्मावतम्

ज्ञानप्राप्ति २०११ मंत्र-संभ-द्युग्र विज्ञान '६४' व

## ऐतरेय उपविष्ट व्रत प्रथम अध्याय दृढीय खण्ड

स ईश्वरेभे तु ..... सुजा इति ॥१॥  
 सोऽपोऽभ्यतपत्ताभ्योऽ ..... वै लत् ॥२॥  
 तदेनत्सुष्टुपरां गत्य .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥३॥  
 तत्प्राणेना .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥४॥  
 तच्चक्षुषा .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥५॥  
 तच्छ्रोवेणाजिष्ठ .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥६॥  
 तत्प्राणाजिष्ठ .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥७॥  
 तन्मनसाजिष्ठ .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥८॥  
 तच्छिष्ठनेनाजिष्ठ .....  
 ..... हैवान्नमन्नप्रस्यत् ॥९॥  
 तदपानेनाजिष्ठ .....  
 ..... एष यद्यायुः ॥१०॥  
 स ईश्वर कथं न्विदं महते .....  
 ..... यथपानेनाभ्यपानितं यदि शिश्नेन  
 विसृष्टमथ कोऽहमिति ॥११॥  
 स एतमेव सीमानं .....  
 ..... अयमाक्षस्थोऽयमाक्षस्थ इति ॥१२॥  
 स जातो श्रुतान्वयभिव्यैख्यत् .....

इदमदर्शमिती-३ ॥१३॥  
 तस्मादिदन्द्रो नामेदन्द्रो हौ वै नाम .....  
 ..... परोक्षप्रिया इव हि देवा: ॥१४॥

अर्थ प्रथम श्लोक- परमात्मा ने फिर विचार किया कि जब मनुष्य वैह की रचना हो गई है, उसमें लोकपाल की भी रचना हो गई है तो इनके लिए अब जी सृष्टि करनी चाहिए।

अर्थ द्वितीय श्लोक- तब परमात्मा ने उन पंचभूतों को तपाया अर्थात् संकल्प द्वारा किया उत्पत्ति की और उस किया द्वारा विभिन्न प्रकार के पदार्थ उत्पत्ति हुए वही अब कहलाया।

अर्थ तृतीय श्लोक- पंच नहान्नामूर्तों से उत्पत्ति यह अब पुरुष उनसे विमुच्य होकर भागने की चेष्टा करने लगा तो पुरुष ने उसे बाणी द्वारा ग्रहण करना चाहा परंतु वह वाणी द्वारा ग्रहण नहीं हो सका, क्योंकि यदि व्यक्ति बाणी द्वारा अब को ग्रहण कर सकता तो 'अब कह देने भाव से ही भूख-प्यास शांत हो जाती'।

अर्थ चतुर्थ श्लोक- तब व्यक्ति ने धाण इंद्रिय द्वारा अब को पकड़ना चाहा लेकिन उसे नहीं पकड़ सका, क्योंकि यदि पुरुषने मात्र से ही अब शृण्य हो जाता तो मनुष्य सुंघकर के ही तूम हो जाता।

अर्थ पंचम श्लोक- तब उस पुरुष ने अब को नेत्रों के माध्यम से पकड़ना चाहा लेकिन अब को नेत्रों से अर्थात् देखकर ही तूम हो जाता, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सका।

अर्थ षष्ठम श्लोक- तब उस पुरुष ने अब को कणिन्द्रियों अर्थात् कानों द्वारा पकड़ना चाहा, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सका, परंतु कानों द्वारा अब को पकड़ जाता तो मनुष्य अब का नाम सुमकर ही तूम हो जाता।

अर्थ सप्तम श्लोक- तब उस मनुष्य ने त्वचा द्वारा उब्र को पकड़ना चाहा, लेकिन यह भी संभव नहीं हो सका, क्योंकि तब मनुष्य अब को चुकर ही तूम हो जाता।

अर्थ अष्टम श्लोक- तब उस पुरुष ने मन से अब को पकड़ना चाहा, परंतु मन से यदि अब को पकड़ सकता तो अब का विस्तार करके ही मनुष्य तूम हो जाता।

अर्थ नवम श्लोक- तब उस पुरुष ने शिश्न और दोनों द्वारा अब को पकड़ना चाहा, लेकिन यदि इसके द्वारा ही अब को पकड़ पाता तो अज्ञा का त्याग करके ही मनुष्य तूम हो

जाता।

**अर्थ दशम श्लोक-** अंत में उसने अन्न को अपान वायु द्वारा ग्रहण करना चाहा, तब वह अन्न को ग्रहण कर सका, क्योंकि अपान वायु भी अन्न को ग्रहण करने वाली है और यह वायु अन्नायु के रूप में प्रसिद्ध है। यह अन्नायु ही अपान वायु है।

**अर्थ एकादश श्लोक-** तब सूर्णी के विचार परमेश्वर ने विचार किया कि यह मनुष्य मेरे बिना किस प्रकार रहेगा। परमात्मा ने विचार किया कि संसार में ग्राणी ने वर्णी द्वारा बोनने की क्रिया कर ली है। धाण इंडिया द्वारा सृधने की क्रिया कर ली है, नेत्र द्वारा देखने की क्रिया कर ली है, कर्णेन्द्रिय द्वारा सूनने की क्रिया कर ली है, मन द्वारा ध्यान मनन की क्रिया कर ली है, अपान अन्न ग्रहण आदि क्रिया भी सम्पन्न कर ली है, जनन दीदय द्वारा मृत वीर्य का स्थान क्रिया कर ली है, तो फिर इस मनुष्य को कैसे जान होगा कि मैं कौन हूँ और परमात्मा ने विचार किया कि मुझे मनुष्य की शरीर में पैर और मल्तक इन दोनों में ये किस मार्ग से प्रवेश करना चाहिए।

**अर्थ द्वादश श्लोक-** ऐसा विचार कर परमात्मा ने मनुष्य शरीर की भीमा अथवा कपाल को चौरकर मनुष्य शरीर में प्रवेश किया और यह द्वारा 'विशृति' के नाम से प्रसिद्ध है और यही अनन्द देने वाला ब्रह्मत्व प्राप्ति का स्थान है। परमात्मा के लिए मनुष्य शरीर में प्रथम स्थान स्वप्नावस्था वृसरा स्थान हृदय और तुलीय स्थान यह परमधार्म मस्तक है।

**अर्थ त्रयोदश श्लोक-** इस प्रकार मनुष्य ने अपनी भौतिक रक्षना को बारों और से देखा और विचार किया कि यहाँ दृप्ति कीन है जिसने मझे बनाया है। तब उसने परमपुरुष सर्वव्यापी परब्रह्म रूप को देखा और कहा कि यह बड़े सीभाग्य की बात है कि मैंने परब्रह्म के दर्शन कर लिए।

**अर्थ चतुर्थश श्लोक-** इस लिए परमात्मा इन्द्र नाम वाला है वास्तव में मनुष्य उस परमात्मा को और देवता उस परमात्मा को इन नाम से पुकारते हैं क्योंकि देवता लोक परोक्षभाव से कहीं हुई बातों को पर्यंत करने वाले होते हैं।

## व्याख्या : ऐतरेय उपनिषद् प्रथम अध्याय दृतीय खण्ड

उपनिषद के इस भाग में मूलतः शरीर के लिए यह तो निश्चिन्त हो गया कि इसमें देवता त्वेकपाल के रूप में निवास

करने हैं और इनके साथ ही भूख और प्राप्ति युक्त है अतः जीवन को चलाने के लिए और उसे पूर्ण रूप ने तुम करने के लिए अन्न की आवश्यकता अवश्य है। इस अध्याय में कवियों ने यह भी स्पष्ट किया है कि पांचों कर्मेन्द्रियों के साथ मन जनन प्रदेश और अपान भी है। अपान का तात्पर्य है कि नाभि प्रवेश जिसके द्वारा बालक गर्भावस्था में मां से जुड़ा हुआ होता है और माता जो भोजन ग्रहण करती है वही भोजन गर्भस्थ बालक को प्राप्त होता है और वह गर्भ में वृद्धि करता है।

ठीक इसी प्रकार जन्म लेने के उपरांत जब वह अपना शरीर माता के शरीर से अलग कर लेता है तो किस विधि से वह अन्न को ग्रहण करे जिससे उसकी सारी कर्मेन्द्रियां कार्य करती रहती हैं।

जीवन में अन्न का अत्यत महत्वपूर्ण स्थान है अन्न का तात्पर्य वह भोज्य पदार्थ और जल है जिसे ग्रहण करने के लिए परमात्मा ने मुख को स्थान दिया, लेकिन अंततः वह अन्न केवल मुख में नहीं रहकर अपान स्थान अर्थात् नाभि के बारों और स्थित पेट में पहुँचता है और वही उसका पचन-पा चन होकर शरीर के सभी ऊर्गों को ऊर्जा प्राप्त होती है। अन्न ग्रहण करने के लिए नेत्र, कान, त्वचा, मन, हृषि, जनन स्थान की उपयोगिता नहीं हैं। अन्न तो उसी स्थान पर पहुँचकर अपनी क्रिया करता है जो जीवन और मृत्यु दोनों का स्थान है, इसीलिए नाभि स्थान को अपान स्थान कहा गया है जो जन्म और मृत्यु से सम्बंधित है यह एक प्रकार से वर्तुलाकार क्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य का जन्म और मरण होता रहता है।

कवियों ने इन श्लोकों के आधार पर यह स्पष्ट करने का पूर्ण प्रयास किया है कि केवल देखने, सुनने और मनन करने से ही शरीर की पूर्ति नहीं हो सकती है। पुरुष के देह का आधार अन्न है और जब तक देह अन्न से संपन्न रहती है, तब तक जीवन में क्रिया चलती रहती है लेकिन यहाँ यह भी स्पष्ट किया है कि अन्न की उपयोगिता केवल शरीर को चलाने के लिए है, पांचों कर्मेन्द्रियों से जुड़ी जानेन्द्रियां तो अपना काम करेंगी ही। केवल देखने से, सुनने से, स्पष्ट करने देने से जिस प्रकार जीवन नहीं चल सकता है ठीक उसी प्रकार जीवन की पूर्ण बनाने के लिए उचित गत्रा में अन्न भी आवश्यक है और यह अन्न भी ऐसा होना चाहिए जिससे देह में शुद्धता का भाव उत्पन्न हो।

इस संसार में भांति-भांति के पदार्थ हैं, भांति-भांति के दृश्य हैं, भांति-भांति के सुण्ठुर हैं लेकिन जिस प्रकार से मनुष्य

अपनी आवश्यकता हेतु इसका उपयोग करे, किस उद्दार का भोजन ग्रहण करे, यह सब उसके लिए आवश्यक है क्योंकि परमात्मा ने जो जीवन दिया है उसकी पूर्ण रक्षा आवश्यक है क्योंकि वह जीवन परमात्मा का बरदान है। इस बरदान को भूखे-प्यासे रहकर शरीर को पीड़ा के कारण इस उपहार की अवहेलना नहीं की जा सकती। मूल कार्य तो मनुष्य के शरीर में स्थित आठ स्थानों को और उनके रक्षक लोकपालों को करना है। इन लोकपालों द्वारा अपना-अपना कार्य अवश्य किया जाता है लेकिन यह तभी संभव है जब मनुष्य उचित और संतुलित आहार लेता रहे।

इसी के आधार पर ऋषियों ने मनुष्य और पशु का अंतर भी स्पष्ट किया है कि पशु अपना आहार अपने शरीर को बृक्षि करने के लिए करता है लेकिन मनुष्य अपनी पांचों जानेन्द्रियों और शरीर स्थित देवताओं के पोषण के लिए अन्नग्रहण करता है। मनुष्य के लिए अन्न एक ऐसी क्रिया है जो जीवन का संपूर्ण आधार नहीं है यह क्रिया केवल अपनी बुद्धि और अपनी इंद्रियों को संतुलित रखने के लिए की गई आवश्यक क्रिया है।

प्रत्येक मनुष्य अपनी मृत्युंता में यह समझ बेठता है कि मैं ही सब कुछ हूं क्योंकि मैं ही अन्न को ग्रहण कर शरीर को चला रहा हूं, संसार में बृक्षि कर रहा हूं, अपने जैसे ही पुरुष और लौटी उत्पह करने की अमता रखता हूं इसलिए संसार में जो कुछ भी है वह अन्न ही है जो केवल अन्न के लिए ही जीते हैं। वे परमात्मा द्वारा दिये गये देह रूपी उपहार का अपमान ही करते हैं। मनुष्य की रचना केवल अन्न को ग्रहण करने और संसार की अभिवृद्धि के लिए नहीं हुई है, परमात्मा ने अपने जैसे पुरुष का निर्माण इसलिए किया कि मेरे जैसा पुरुष सृष्टि में श्रेष्ठ रचनात्मक जानकार्य कर सकेंगा। जीवन की भाग-दोहरे में सब कुछ होने हुए भी वह विचारशील रहेगा, उसका द्वय भावों से भरा रहेगा, पशुओं की भाँति आपस में लड़ना और एकदूसरे का शिकार करने की वृत्ति से मुक्त रहेगा। लेकिन वर्तमान समाज में देखें तो मनुष्य मानवता से पशुता की ओर अधिक प्रवृत्त होता जा रहा है। ज्यादा से ज्यादा संग्रह करना, ज्यादा से ज्यादा ग्रहण करने का भाव और दूसरे से छीनने का भाव



बढ़ता ही जा रहा है और आश्चर्य है कि कषित इस उपनिषद में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जीवन का आधार परमात्मा है, जिन्होंने देवताओं को मनुष्य के शरीर में स्थापित किया है और उसे चलाने के लिए अन्न की उत्पत्ति की है और यह सब अस्थायी व्यवस्था है क्योंकि जीवन है वहां मृत्यु तो आवश्य समावी है। इसके उपरांत भी मनुष्य इस संसार में विभिन्न प्रकार के कर्म करता है जिनका कोई उद्देश्य नहीं होता है।

**ऐतरेय उपनिषद द्वितीय अध्याय**  
पुरुषे छवा अयमादितो.....

.....तदस्य प्रथमं जन्म ॥१॥

तत्स्त्रिया आत्मभूतं.....

.....गतं भावयति ॥२॥

सा भावयित्री भावयितव्या .....

द्वितीय जन्म ॥३॥ एव ब्रह्मोष इन्द्र एष.....

प्रजा प्रतिष्ठा प्रजानं ब्रह्म ॥३॥

सोऽस्यायमात्मा.....

तदस्य तृतीय जन्म ॥४॥

तदुत्तमृषिणा.....

बामदेव एवमुवाच ॥५॥

स एवं विद्वान्.....

समभवत् समभवत् ॥६॥

**न्यास्या :** ऐतरेय उपनिषद के द्वितीय अध्याय में छलोकों में विशेष ४५ से यही वर्णन आया है कि दस संसार में जो रक्षी गर्भधारण करती है वह मूल रूप में पुरुष का ही स्वरूप होता है, क्योंकि पुरुष के अंग-अंग का तेज सारतत्त्व वीर्य रेतस है इस कारण संसार में प्रत्यक्ष व्यक्ति को अपनी इदं जीवनी शक्ति की रक्षा के लिए जीवन में ब्रह्मान्वयवत का पालन अवश्य ही करना चाहिए।

जन्म में रक्षी पुरुष की गर्भ में धारण करती है और जन्म के बाद पुरुष कुमार की रक्षा करता है यह रक्षा की भावना अपनी ही रक्षा की भावना है। इसी लिए संसार में प्रत्येक पुरुष अपनी भंतान में अपनी ही छवि देखता है और वह चाहता है कि उसकी भंतान उससे भी अधिक जीवन-तेजवन और उसके वृत्ति को आगे बढ़ाने वाली हो।

बालव में कुमार रूप में संतान उप मनुष्य के पुत्र य कमों का प्रतिनिधि नमकर रह जाना है। मनुष्य के पृथग्यकमे उपके पुत्र के रूप में संसार में बने रहते हैं। यह उसका दूसरा जीवन होता है। जीवन की तृतीयावस्था में बृद्धावस्था में शरीर को स्थाग देता है। और इस लोक में जाकर किरनया जन्म लेता है। यह उसका तीसरा जन्म है।

**ऐतरेय उपनिषद तृतीय अध्याय**

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे.....

च चास्वादु विजानाति ॥७॥

यदेतद्वद्य नमश्चैतत्.....

नामधेयानि भवन्ति ॥८॥

स एतेन प्रजानात्म.....

समभवत्सम भवत ॥८॥

**व्याख्या :** यह 'आत्मा' कौन है जिसको इम उपासना करते हैं, और वह आत्मा कौन-सा है जिससे यह मनुष्य 'रूप' की वेष्टना है, 'शब्द' को सुनता है, 'जन्म' को संवता है, 'वाणी' का व्यवहार करता है, और जिससे स्वादु वा अस्वादु पदार्थ को जानता है?

इस प्रश्न का उत्तर देने हैं वह जो 'ब्रह्म' और 'मन' है, और इनके साथ जो यह 'सोजान', 'आज्ञान', 'विज्ञान', 'मेधा', 'वृष्टि', 'धृति', 'मति', 'मनोधा', 'जृति', 'स्मृति', 'संकल्प', 'ऋतु', 'असु', 'काम' और 'वंश' हैं। ये सब 'प्रजान' के ही नाम हैं। जीवात्मा के ये गुण हैं। जीवात्मा के कारण यही नहीं कि रूप, रस, गन्ध का ज्ञान होता है, अपितु अभी कहे ये सब कार्य भी जीवात्मा के कारण ही होते हैं।

'जीवात्मा' का वर्णन कर चुके पर, 'परमात्मा' का वर्णन करते हैं। ब्रह्म वह है, इन्द्र यह है, प्रजापति यह है। यह क्या? जिसका अभी वर्णन करते हैं--वह। ये सब वेद, ये पांचों महामूर्त, पृथ्वी, वायु, आकाश, आज, और ज्योति, ये क्षुद्र जीव, ये मिश्र जीव-जन्म, ये बाज, ये अङ्गज, जरायुन, स्वेदज, उद्दिष्टज, ये अश्व, गी, पुरुष, दृष्टी-ये जो भी प्राणि-जगत है, स्थावर, गंगा, पर्वत--ये सब 'प्रजा-मेत्र' हैं, इन सबमें प्रजा मानो दीख रही है, यह सृष्टि अन्धी नहीं चली जा रही, प्रजा से जा रही है, किसी लक्ष्य की तरफ मानो आंख उठाकर जा रही है, यह सृष्टि 'प्रजान' में प्रतिष्ठित है, प्रजान में ही उठरी हुई है। सम्पूर्ण लोक 'प्रजा-मेत्र' हैं, प्रजा में प्रतिष्ठित है- 'प्रजा-मेत्रो लोक'। वह 'प्रजान' ही ब्रह्म है, वही इन्द्र है, वही प्रजापति है। जिस आत्मा की हम उपासना करते हैं, वह यही है।

उपराक इसी 'प्रजा'-आत्मा की उपासना से इस मर्त्य-लोक से उत्कर्मण कर उप स्वर्ग-लोक में सब कामनाओं को प्राप्त कर अमृत हो जाय, हो गया।

ॐ शांसि । शांति ॥ शांति ॥

# होम हनुमते हूम हूम

यों तो किसी भी रोग के शमन हैं आज चिकित्सा विज्ञान के पास अपूर्व इलाज है, वरन् मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे बारण यह है, कि जबीं गेंगों का उद्दाय मधुर के मत से ही होता है। अब पर्यटकुण्डलीयों को विद्य कंत्र हारालिंगंडिम कर दिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

## १. अनिद्रा, दौब और मानसिक तनाव भी हुए छुप देंगे क्यों?

आज के दृग की विड्यवान कहे या व्यक्ति के अपने निजी जीवन की ओर, जो भी हो अनिद्रा रोग और मानसिक तनाव पक सामान्य घटना होती जा रही है। व्यरस जीवन में रहते हुए व्यक्ति जाने अनजाने में सेकड़ों तनावों से धिरा रहता ही है, जिसका दुखद परिणाम मानसिक तनाव में होती है। और फिर आगे चलकर व्यक्ति सारी सारी रात आँखों में बिना नीद के काटने के लिए मगदूर हो जाता है, जिससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और निर्णय लेने की क्षमता घटने लग जाती है। रोग के होने पर आपको तनावशरण होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप चाहे तो इन अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से अनिद्रा रोग को समाप्त हर सकते हैं।

सर्वप्रथम अपने दूत कल्प में 'बजरंग गुटिका' को कले निलों की छेष पर रख्या पिंप कर किसी भी मंगलवार व्रीही रात से आरंभ कर मिन मंव का विधुत माला से नित्य ५ माला जप करें-

॥ॐ हूम हूम हूम हूम हूम॥

Om Hoom Hoom Hanumate Hoom Hoom Phat

नी दिन तक नियमित रूप से जपने पर ऐसी मानसिक शानि प्राप्त होती है जिससे अनिद्रा और तनाव दूर होने लगते प्रयोग समाप्ति के बावजूद गुटिका व माला को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साप्तक्रम सामग्री रेकर्ड 360/-

ऋग्वेद 'अमृतम्' 2001 मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान '69' ८

## २. क्या आपके गृहरथ जीवन में विभेद अथवा अनज्ञन हैं?

भारतीय संस्कृति में नारी को अत्यंत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। वरन्तु नारी ही परिवार में संस्कारों की जन्मदात्री होती है और यदि उसी का मानसिक सन्तुलन ठीक न हो, तो इसका परिवार बच्चों पर अर्थात् देश की भावी पीढ़ी पर भी पड़ता है। परंतु वह सब कुछ जानते हुए भी कई परिवार रहते हैं, जहाँ स्त्री को उचित सम्मान प्राप्त नहीं है, उसे नौकरी की तरह यसका जाता है। यह एक दुखद स्थिति है, जिसका प्रभाव यह होता है, कि घर की सम्पत्ति, घर की उत्तरति, घर का विकास सब कुछ अवस्था डो जाता है, क्योंकि घर की स्त्री को घर की लक्ष्मी कहा जाया है। जिस घर में स्त्री का सम्मान नहीं होता है, उस घर में देवताओं का वास कभी नहीं होता और न ही उस घर में देवताओं की कृपा ही बरसती है। उस घर में सदैव क्लेश, असानि और विपद्धता ही अनी रहती है।

आज भी ऐसे कई परिवार हैं, जहाँ पति या तो कार्य में बहुत अधिक व्यस्त रहता है या किसी अन्य कारणों से परिवार का ध्यान नहीं दे पाता या फिर पति-पत्नी की आपस में बनती नहीं है, आए दिन कलह होती है। कारण कुछ भी हो परंतु इसका विपरीत प्रभाव घर की सुख शांति एवं पति-पत्नी के स्वास्थ्य पर पड़ता है, मानसिक तनाव बन जाता है। इस पर भी घर की प्रमुख जिसमेंशादी स्त्री पर ही होती है, परंतु वह

विनश हो होती है, आग्निर किससे कहे अपने मन की व्यथा ? आखिर वह ज्या करे, जिससे उसका पति समझदारी से काम ले, अपने कर्त्त्वों का समझे, अपने वर-परिवार-बच्चों के साथ प्रेम पूर्वक रहे, और घर को घर समझे, यही जब तो प्रत्येक स्त्री, प्रत्येक पन्नी की अभिनाश होनी है। जब बात बातों से न बन पाय, तो आपको चाहिए कि आप यह दिव्य प्रयोग सम्पन्न करें। इस प्रयोग के प्रधाव से आपके पति नहीं दिल में आ जाएं और वर का कलेश मिट सकेगा, तथा आपको अपने घर परिवार में मान-सम्मान प्राप्त हो सकता। यह गृह कलेश निवारण प्रयोग है।

इसके लिए घर की स्त्री को चाहिए कि वह किसी सोमवार को एक ताम्र पात्र में '३ बलंश निवारिका' को स्थापित कर ले। यह का कुंडल, अक्षात्, गुण, धूप, धूप, दीप से पूजन करे, फिर निम्न मंत्र का 'गृहस्थ सूख सौभाग्य माला' से ५ माला जप २१ दिन तक नित्य करे-

**मंत्र**

॥ॐ ह्रीं श्रीं गृहाप युग्मं प्रित्ये ऋताः ॥

Om Hreem Shreem Grahasth Siddhaye Om Nama  
इस मंत्र के नाप के बाद गुरु मंत्र की भी एक माला जप करे तथा शुल्देव से अपनी शाधना में सफलता की प्रार्थना करे। २१ दिन बाद माला एवं तीनों कलेश निवारिका को जल में विसर्जित कर दें।

लाभना सामर्थी पैकेट-२४०/-

### ३. छोटे बच्चों को नजर आकि से रक्खा ?

चाहे यह बात वैज्ञानिक धरातल पर भिज्ज न हो सके, परन्तु मनोवैज्ञानिक धरातल पर यह बात आवश्य ही स्वीकार की जाएगी, कि मनुष्य की मनाभावना ओर उत्तिज्जरों से भी अदभुत शक्ति होती है। विज्ञान के बाज किसी को मानता है, जबकि इसके अलावा मन भी कुछ होता ही है, इस बात को वैज्ञानिक धरात ही समझ न सके हों, परन्तु वे भी स्वीकार अवश्य करते हैं। यदि व्यक्ति मन से प्रसन्न है, तो उसका चेहरा भी खिला रहता है, और वितना भी कोई गम ल्या न दिलाए, उसके मन के भाव चेहरे पर दालक ही जाने हैं।

कुछ लोगों के पास मन की शक्ति विलक्षण रूप से जागत होती है, ऐसे लोग जब किसी को मन मन वाले शिशु को बुरे भाव से देख लेते हैं, तो उस व्यक्ति के नेत्रों से निकली रजिमीयों का प्रभाव शिशु के कोसल मन पर पड़ता है, और वह बीमार हो जाता है। इसी को 'नजर लगना' कहते हैं। वस्तुतः कोई जनवृक्ष

कर शिशु को नजर नहीं लगता, और उस व्यक्ति को मन में कहों न कर्त्ता ऐसा भाव अवश्य होता है, कि हाय वितना सुन्दर बच्चा हो अथवा काश मेरा बच्चा भी ऐसा हो तन्दस्त, श्वसन-खेलता हुआ होता। इसी बेदना को वह कोसल मन वाला शिशु एक रेशे के रूप में गहण कर लेता है, इस प्रयोग से शिशु की नजर जिसे 'दृष्टि दोष' भी कहते हैं, से रक्त होती है। इसके लिए मंत्र मिल 'दृष्टि दोष निवारक त्रिलोह मूलिका' को कलने धारे में पिरोकर शिशु के गले अथवा कमर में जांध दें।

लाभना सामर्थी पैकेट- ११०/-

### ४. चौन्दर्य बरकरार रखें

भान्दर्य तो एक जादू है, ऐसा आकर्षण है, जिसे दखकल एक सनसनाइट सी पूरे शहर में दौड़ा जाता है। इस प्रयोग द्वारा कोई भी सीन्दर्य का रवाणी भन सकता है, अपने उच्चर सम्मोहन, आकर्षण पैदा कर सकता / सकती है, एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता / सकती है, जिसे दखकर सामने वाला भी क्षण नक कर एक बार निहार लेने की विश्वा हो जाए।

जब यह सीन्दर्य स्वाभाविक रूप से प्राप्त नहीं हो पाता है, तो स्त्री अथवा पुरुष को कृतिम सीन्दर्य प्रस्वाधनों का सहारा लेना पड़ता है। परंतु चेहरा धूल नहीं कि साथ में बनावटी परन उत्तर गई। बनावटी ही होता है जो अधिक बेर तक टिक नहीं पाता। इस प्रयोग के माध्यम से आपके सीन्दर्य पर आकर्षण में निवार आ सकता है, याहे आप पुरुष अथवा स्त्री, युवक हों अथवा युवती हैं।

सूर्योदय के पहले उठकर पूर्व दिशा को ओर मुंह कर बेठ जाएं। अपने सामने शुल्देव का एक सून्दर चित्र रखकर सीन्दर्य माला से निम्न मंत्र की ५ माला सम्पन्न करें-

**मंत्र**

॥ऊहीं पलीं हीं हीं हीं ॐ॥

मंत्र जप के बाद शारीर में एक ऊर्जा का प्रवाह बनता है। मंत्र जप के बाद ५ मिनट तक 'शीतलीआण त्रिलो' करें, अर्थात जीभ को थोड़ा सा मूँह से बाहर निकालकर, उसको गोलाकार बनाकर उससे धीरे-धीरे अन्दर की ओर इवा खोचे और बाहर निकालें, ५ मिनट तक इस त्रिलो को करें। इसके बाद १० मिनट तक चिल्कुल शांत मन से बेठ जाए। इस प्रयोग के कुछ दिनों बाद ही आपका चेहरा दमकलन गेहू, एवं उमा और आकृद की स्वरेखा चेहरे पर प्रकट होने लगेगी। योगियों के चेहरे पर जो अमृत नेज रहता है, वह ऐसी ही त्रिलो पद्धतियों का कारण होता है।

लाभना सामर्थी पैकेट-१५०/-

# अयुर्वेद और संभव हैं

**दीपावली** ग्रे दो दिन पहले यह अयोद्या आती है और यह दिवस क्रगदान धनवत्तरारी का उद्भव दिवस भी है। संसार को पांचवे वेद आयुर्वेद का ज्ञान धनवत्तरी क्रपि द्वे ही प्रदान किया था और यदि हम ऊपरी जीवन प्रक्रिया को लियकिता धनार्थ तथा जीवन में तनाव इत्यादि से मुक्त रहें तो यह संभव है कि प्रत्येक व्यक्ति शौर्य का जीवन वी सकता है। क्षेत्रे जिन्हें अपना जीवन? इसका एक विशेष विवेचन-

श्रीमद्भागवतपुराण (२।७।२१) में ब्राह्मण श्रीकृष्ण-द्विपायन वेदव्यासजी ने भगवान् धनवत्तरि की स्तुति में बड़ी सुन्दर बात कही है-

धन्वन्तरिश्च भगवान् स्वयमेव कीर्ति-  
नाम्ना नृणां पुरुरुज्ञो रुज आशुङ्कन्ति ।  
यज्ञे च भागममृतायुर्ब्राह्मणं  
आयुर्श्च वेदमनुशास्त्यवतीर्थ लोके ॥

**अर्थात्** इस लोक में अवतार लेकर आयुर्वेद शास्त्र का अनुशासन करने वाले स्वनामधन्य भगवान् धनवत्तरि के नाम स्मरण से ही बड़े-बड़े रोगियों के रोग नष्ट हो जाते हैं और यह कोई मात्र अथवाद नहीं है, 'विश्वास, फलदायक,' हमारे धर्मशास्त्र विश्वास की धुरी पर टिके हैं, वे कहते हैं-

मन्त्रे तीर्थे द्विजे वेदे वैष्णवे भेषजे गुरु ।  
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्वति तादृशी ॥

**अर्थात्** मन्त्र में, तीर्थ में ब्राह्मण में, देवता में, देवज में, और जीविति में तथा शुरु में जो जैरी भावना (निष्ठा) रखता है, उसे फूल भी तदनुरूप ही मिलता है।

चिकित्सा-शास्त्र, ज्योतिष तथा तन्त्र-मंत्र के ग्रन्थ प्रत्यक्ष शास्त्रों में आते हैं, क्योंकि चिकित्सा-शास्त्रों में उल्लिखित और जीविति का रोगानुसार सेवन करते ही रोग का नष्ट होना उसकी सत्यता का प्रत्यक्षीकरण करा देता है। इसी प्रकार ज्योतिषशास्त्रानुसार वर्षों पूर्व यह घोषणा कर दी जाती है कि अमुक विन अमुक समय पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण होगा और

ठीक उसी समय पर यहाँ उत्खाई भी देता है। वह हमारी प्राची भारतीय विद्या के लिये गीरज का विषय है। अन्यथा विज्ञान के लिये तो आज भी यह चुनीती का विषय है कि किस समय, कौन सा ग्रह कहाँ होगा? कौन किसको आच्छादित करेगा, उसकी ठीक गति क्या है? इन्यादि! विराटब्रह्मण में यह आज भी पाश्चात्य विज्ञान के लिये चुनीती है। तन्त्र-मंत्र का प्रत्यक्षीकरण तो प्रभित्र ही है। मंत्रों से साप तथा बिल्कु के विष को शांत करना तो साधारण बात है।

इसके अतिरिक्त अन्य चिकित्सा-पद्धतियों की तुलना में आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्रों की विशेषता यह भी है कि 'मित च यार च चो द्वि वाभिता' के सिद्धान्तानुसार बड़ी बात को संक्षिप्त-सूत्र स्वरूप में ही कह देने की उसकी अपनी विशेषता है। जैसा कि देखें, कफ-वात-पित्त आदि की चिकित्सा के बारे में संक्षेप में ही किसी सुन्दर बात कह दी गई है-

वर्मनं कफनाशाय वातनाशाय मर्दनम् ।

शथनं पित्तनाशाय च्वरनाशाय लंगनम् ॥

**अर्थात्** कफनाश करने के लिये वर्मन (उलटी), वातरोग में मर्दन (मलिश), पित्तरोग में शथन तथा ज्वर में लंगन (उपवास) करना चाहिए। आयुर्वेद शास्त्र के बल रोगी की चिकित्सा करने में ही विश्वास नहीं करता, अपितु उसका तो सिद्धान्त है, 'रोग होकर चिकित्सा करने से अच्छा है कि बीमार हीन पड़ा जाय।' इसके लिये आयुर्वेद शास्त्रों में स्थान-स्थान पर ऐसी बातें भरी पढ़ी हैं, जिसके अनुपालन से वैद्य की

आवश्यकता भी नहीं पड़ती। जैसे-

दिनान्ते च पिबेव दुर्घ निशान्ते च जलं पिबत् ।

भोजनान्ते पिबेत् तत्र विद्यस्य किं प्रथोनम् ॥

तात्पर्य यह कि यदि रात्रि की शयन से पूर्व दुर्घ, प्रातः बाल उठकर जल और भोजन के बाद तत्र (मट्टा) पिये तो जीवन में वैध की आवश्यकता ही ल्यों पढ़े? इस प्रकार के सुनौं ५. आष्टू परमा-८ जीवन में जानन, अन्य के उपयोग खाड़ी का भूजन भक्ता यस प्रकार कर दिया गया ३. जिनका सेवन अवश्य करना चाहिए-

सवान हरे भावी चीत, कार मास गुड खाये भीत ।  
कार्तिक मूली अगहन तेल, पूषे करे दूधसे मेल ॥  
माथे धी व खीचड खाय, फागुन उठि के प्रात नहाय ।  
कैसा मास में नीम व्यसननि, भर बैसखे खाये अगाहनि ॥  
जेठ मास दुपहरिया लोवे, ताकर दुख अषाढ में रोवे ॥  
बालहों मास के इन विधि-खाड़ी के अतिरिक्त निषेध खाय  
भी है, जिन्हें भूलकर भी ग्रहण न करें। जैसे-

चैते गुड बैसाखे तेल, जेठे पथ आषाढे बेल ।  
साकन माग न भावे ली, बार कैलना व्यातिक मही ॥  
अगहन जीरा न पूषे बना, माथे मिश्री फागुन बना ।  
इन बालह से बचे जो भाव, ता धर कबहूं केद न जाव ॥  
आयुर्वेद का सिद्धान्त है कि - 'गुरुत्वा शतपदं  
गच्छेच्छायाणं हि शने.शने ।' भोजन करने के बाद छाया में  
सौ पां पूरे-धीरे चलना चाहिए। शयन से कम-से-कम २-  
३ घंटे बहले ही भोजन कर लेना चाहिए, अन्यथा कल्प रहेगा।  
हमके अतिरिक्त दीर्घायु के लिये भी एक जगह ब्रह्म सुन्दर  
संकेत कर दिया गया है कि -

वामशायी क्षिभूजानो षष्मूरी दिष्पुरीषकः ।

स्वल्पमेथुनकारी च शतं वर्षाणि जीवति ॥

अर्थात् जायी करवट सोने वाला, दिन में दो बार भोजन  
करने वाला, कम-से-कम ३, बार लघुशंका, दो बार शैव  
जाने वाला, (ग्रहस्य में आवश्यक होने पर) स्वल्प-मैथुनकारी  
व्यक्ति सौ वर्ष तक जीता है।

आयुर्वेद शास्त्र ही नहीं अपितु अथवेदीय अगवती श्रुति  
भी ऐसी ही कामना करती है-

कृष्णन्तु विश्वे देवा आयुषे शरदः शतमा ।

(३०४३१)

अर्थात् सभी देवता तुम्हारी आयु सौ वर्ष की करे।

परंतु आगे ही एक बात अवश्य कह दी है कि-

प्रत्यक्ष सेवस्व वेष्वं जरददिष्ट कृष्णमित्वा ।

अर्थात् सेवण से बीमार पड़ जाने पर औषधि अवश्य ले  
लेनी चाहिए। इसमें प्रमाण करने की आवश्यकता नहीं;  
क्योंकि 'शरीरमायं खलु धर्मसाधनम्' स्वरस्य शरीर ही धर्म-

साधन का माध्यम है। सत कहते हैं-

पहला सुख निरेगी काया। दूजा सुख घर में हो माया।

तीजा सुख सुत दार वरा में। चौथा सुख जस खूब कमाया ॥

यिमित्र व्याधियों के तारतम्य पर अनुसन्धान करते से उक्त बात सामने आती है कि जिन लोगों का जन्म शीतकाल में होता है, उनको शीत की बीमारियां ही अधिक होती हैं। जिनका जन्म ग्रीष्म-ऋतु में होता है, उनको गर्भी की ही बीमारियां अधिक होतीं तथा गर्भी भी असद्ध होतीं हैं। इस प्रकार उन अनुसन्धानों में नहां मनव जाति का बहुत बड़ा कल्पणा होता है वहीं आधुनिक युग में भी शास्त्रों की प्रामाणिकता पर सुनिश्चित होती है।

चिकित्सा के विषय में वर्तमान स्थिति में यह अवश्य

चिन्तनीय बात है कि आज का तथाकथित चिकित्सक अनुसन्धान तथा स्वाध्याय-अनुयाम के अभाव में रोगी पर विलोने की तरह चिकित्सा की आड़ में मात्र प्रयोग करता जाता है-

यस्य कस्य तरोमूलं येन केनापि पोषितम् ।

यस्य कस्यै प्रदातव्यं यदा तदा भविष्यति ॥

अर्थात् : जिस किसी जड़ी को गिस-किसी भी प्रकार पीसकर निः-किसी भी तरह जिस-किसी भी रोगी को दे दो। कुछ-न कुछ तो प्रतिक्रिया होगी ही और होता वही है कि अन्न में प्रयोग करते-करते रोगी स्वर्ग ही सिधार जाता है। ऐसे चिकित्सकों के बारे में ठीक ही कहा गया है-

वैद्यराज नमस्तु धर्यं क्षपिताऽप्नेष्मानव ।

त्वयि विन्यस्तमारोऽयं कृतान्तः सुखमेधते ॥

(सुशास्त्रलक्ष्मी २३।१)

इस प्रमाण में आज कल के कुछ चिकित्सकों की अर्थवृद्धि भी कम कारण नहीं है, क्योंकि 'अर्थवृद्धिर्धर्मवित' अर्थात् जिसकी वृद्धि अर्थ में लगी ही वह धर्मावरण नहीं कर सकता। जो लोग मण्णारन्न व्यक्ति से भी कुछ-न-कुछ धनामगम की कामना रखते हैं, वे चिकित्सा-सेवा कैसे कर पायेंगे?

इसमें कोई संदेह नहीं कि आयुर्वेद शास्त्र औषधि से भी अधिक महत्व पर्याय को देता है-

विनापि भेषजं व्याधिः पश्यादेव निवत्ति ।

न तु पश्यविहीनोऽयं भेषजाना जातेरपि ।

पश्यसेवन से व्याधि बिना औषधि के भी नहीं हो जाती है, परंतु जो पश्यसेवन नहीं करता, युक्ताहार विद्युत नहीं रखता, वह चाहे सैकड़ों औषधि ले ले, परं उसका वह रोग तर नहीं होता। अतः आरोग्य-लाभार्थ सद्यमित जीवन जीने की आवश्यकता है।

(धूरप्रज्ञानाचर्चा नी)

यद्यां  
माय्य स  
व्यर्थ क  
चाहे हृद  
दे उसमें  
उसे सार  
हो जाता  
हो और  
इसके न  
ल्पश्च क  
वस्त  
गया है  
महत्व न  
रखा जि  
भाग्य उ  
में सभी

# भाष्य रेखा

## क्या कहती है

यद्यपि मानव के जीवन में सब कुछ होता है, परं यदि उसका भाष्य साथ नहीं देता है, तो एक प्रकार से उसका पूरा जीवन व्यर्थ कहा जाता है। चाहे व्यक्ति के पास भव्य व्यक्तिनाम हो, चाहे हृदय से वह किन्तु ही उदार हो, चाहे स्वास्थ्य की दृष्टि से उसमें सभी प्रकार की श्रेष्ठता हो, परंतु यदि उसका भाष्य उसे साथ नहीं देता है, तो उसका जीवन एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। कहा जाता है कि यदि व्यक्ति का भाष्य साथ देता हो और यदि वह मिहीं भी छू ले, तो वह सोना बन जाता है। इसके विपरीत यदि भाष्य साथ नहीं देता, तो सोने को भी न्यूर्झ करने पर वह मिडी के समान हो जाता है।

**बन्धुता:** जीवन में भाष्य का महत्व सबसे अधिक मान गया है इसीलिए हाथ में भी भाष्य रेखा पा प्रारब्ध रेखा को महत्व दिया जाता है। अंगों में इसे 'फेट लाइन' कहते हैं। यह रेखा जितनी अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्वोष होती है, उसका भाष्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ कहा जाता है, यदि व्यक्ति के हाथ में सभी रेखाएं दृष्टि एवं कमज़ोर हों, परंतु यदि उसकी भाष्य

रेखा अपने आप में अल्पन्ना श्रेष्ठ हो तो यह बात निश्चित है कि उसके ये सारे दुर्गुण छिप गाते हैं और वह जीवन में पूर्ण प्रगति करने में समर्थ हो पाता है। अतः हस्त रेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह हथेली का अध्ययन करते समय भाष्य रेखा का सावधानी से अध्ययन करे।

सभी हाथों में यह भाष्य रेखा नहीं पाई जाती है और मेरा तो यह अनुभव है कि लगभग ३० प्रतिशत हाथों में भाष्य रेखा का अभाव ही होता है। परंतु मेरे कबन का यह अभिप्राय नहीं सिया जाना चाहिए कि जिसके हाथ में भाष्य रेखा नहीं होती, वह व्यक्ति भाष्यहीन होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि भाष्य रेखा के अभाव में प्रयत्न करने पर भी व्यक्ति की पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। भाष्य रेखा होने से व्यक्ति थोड़ी सी प्रतिभा और परिश्रम से ही कार्य को अपने मानवकूल बना लेता है।

इस रेखा को शनि रेखा भी कहा जाता है, क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है। यद्यपि यह रेखा व्यक्ति के

हाथों में अलग-अलग स्थानों से प्रारंभ होती है, तथा पिंड इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही होती देखी गई है। इसलिए भी इसको शनि रेखा के नाम से पुकारते हैं।

जिन हाथों में यह रेखा कमज़ोर होती है या नहीं होती है, उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है, परंतु उनकी उन्नति में भावयों, सम्बंधियों या रित्येवरों का किसी प्रकार का कोई सहयोग उसे उसके जीवन में नहीं मिलता। इस प्रकार से वह जो भी प्रगति करता है, स्वयं के प्रयत्नों से ही कर पाता है। ऐसे लोगों को न तो समाज से किसी प्रकार का कोई सहयोग मिलता है और न परिवार से ही सहायता मिलती है। जिन लोगों के हाथों में शनि रेखा का अभाव हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन में जो भी विखाई दे रहा है वह सब इसके प्रयत्नों से ही संबंध हुआ है।

यह रेखा नीचे से ऊपर की ओर बढ़ती है, जैसा कि मैंने स्पष्ट किया है कि हथेली में इस रेखा के उद्गम स्थान अलग-अलग होते हैं, परंतु इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही जाकर होती है। इस रेखा के माध्यम से मानव की बच्छाएं, भ्रावनाएं उसका बीचिक एवं मानसिक स्तर तथा उसकी क्षमताओं का अनुमान हो जाता है। भाग्य रेखा के माध्यम से यह जाना जा सकता है कि यह व्यक्ति जीवन में कितनी प्रगति करेगा। इसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से क्या स्थिति होगी? क्या इसको जीवन में धन, मान, पव, प्रतिष्ठा आदि मिल सकेंगे? क्या इसका जीवन परेशानियों से भरा हुआ है? क्या यह व्यक्ति अपने जीवन में इन बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्त कर सकता है? ये सारे तथ्य भाग्य रेखा के माध्यम से ही जाने जा सकते हैं।

माध्यमा उंगली के मूल में शनि पर्वत होता है। हथेली के किसी भी स्थान से कोई भी रेखा प्रारंभ होकर शनि पर्वत को स्पर्श कर लेती है, तो वह भाग्य रेखा कहलाने लगती है। हथेली के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रारंभ होने के कारण भाग्य रेखा का महत्व भी भिन्न-भिन्न हो जाता है। इसलिए भाग्य रेखा का उद्गम तथा उसकी समाप्ति दोनों ही बिन्दुओं का अली-भानि सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिए।

यदि यह रेखा कहीं से भी प्रारंभ होकर बिना किसी अन्य रेखा का सहारा लिए शनि पर्वत पर पहुंच जाती है, तो नि-सम्मेह ऐसी रेखा प्रबल भाग्यवर्लक एवं श्रेष्ठ मानी जाती है, परंतु यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत को पार कर माध्यमा उंगली पर चढ़ने

के पौर तक पहुंचने की कोशिश करती है, तो ऐसी रेखा दुःख कहलाती है।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के बारे में कुछ तथ्य स्पष्ट किया है मेरे अनुभव के आधार पर भाग्य रेखा का उद्गम निम्न प्रकार से हो सकता है:-

१. हथेली में भाग्य रेखा मणिबन्ध के ऊपर से निकल कर अन्य रेखा भी का सहारा लेती हुई शनि पर्वत तक पहुंचती है।

२. कई बार यह रेखा जीवन रेखा के पास में से निकल कर शनि क्षेत्र पर पहुंच जाती है।

३. भाग्य रेखा शुक पर्वत से भी निकल कर शनि पर्वत तक पहुंचती है।

४. कभी-कभी यह रेखा मंगल पर्वत से भी निकलती हुई दिखाई दी है।

५. यह रेखा जीवन रेखा को काटती हुई शनि पर्वत तक पहुंचने का प्रयास भी करती है।

६. कुछ हाथों में मैंने भाग्य रेखा राहु क्षेत्र से भी निकलते हुई देखी है।

७. भाग्य रेखा हृवय रेखा से निकलकर शनि पर्वत को स्पर्श करती हुई अनुभव की है।

८. कई बार यह रेखा नेपच्यून क्षेत्र से प्रारंभ होकर शनि पर्वत तक जाती है।

९. कुछ हाथों में यह रेखा चन्द्र पर्वत से भी निकलती है।

१०. हर्षल क्षेत्र से भी इस रेखा का प्रारंभ देखा जा सकता है।

११. कई बार यह रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ होकर शनि पर्वत को जाती है।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के ग्राहन-उद्गम स्थान बताए हैं अधिकतर हाथों में उद्गम स्थल इसी प्रकार के दिखाई देते हैं परंतु इसके अलावा भी उद्गम स्थल हो सकते हैं।

आगे के पृष्ठों में मैं इन उद्गम स्थलों से संबंधित भविष्यफल स्पष्ट कर रहा हूँ:-

**प्रथमावस्था:** इन प्रकार की भाग्य रेखा सर्वोत्तम कहलाती है। यह रेखा नितनी अधिक स्पष्ट गहरी और निर्देश होगी उन्हीं ही अच्छी कहीं जाएगी श्रेष्ठ उनमा ही श्रेष्ठ फल मिल सकेगा। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि भाग्य रेखा शनि पर्वत तक पहुंचती है, तो वह शुभ कहनाती है। परंतु यदि शनि पर्वत को पार कर माध्यमा उंगली पर चढ़ने

न जाती है तो है। क

नायमा उंगली है, परं

त्पर्य यह

नवाकांक्षा होगी, परंतु

वालाओं को

बढ़ी हुई

पर्य को बिग

परंतु इस

उली पर न

नाकर सक

नलदायक व

निकलते

न यह दिखा

भाग्य रेखा

नकर पक्की

दसरा सिरा

व्यक्ति आ

जे पद प

नामान्य वरा

होते देखा ग

यदि भाग

तो उसे

व्यक्ति बाध

है। ये बाध

मच्छी मानी

यदि भाग

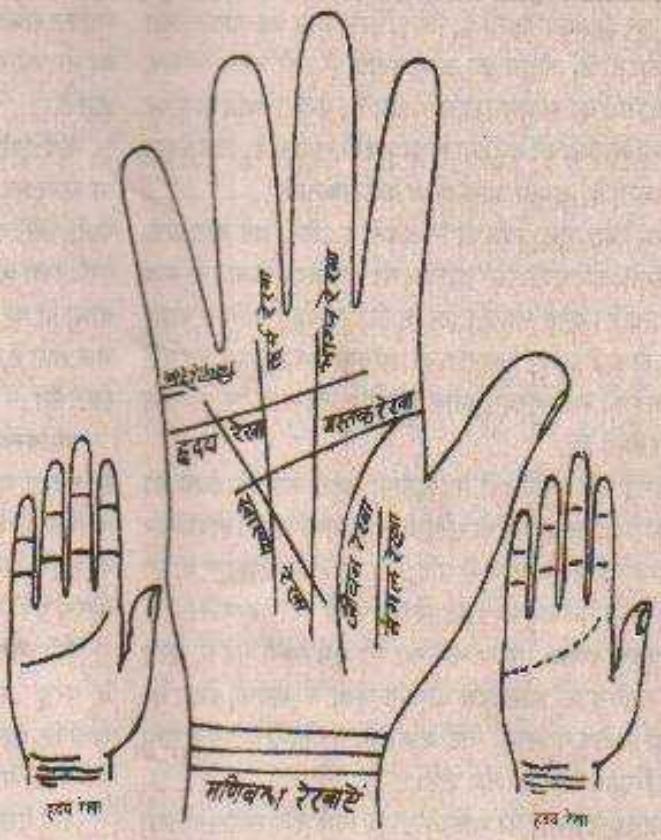
जल जाती है, तो वह विपरीत फल देने लगती है। कुछ हाथों में मैंने भाग्य रेखा को मध्यमा ऊंगली के दूसरे पीर तक पहुंचते हुए देखा है, परंतु इस प्रकार की रेखा बनने का अन्तर्याम यह है कि ऐसे व्यक्ति में उच्चाकांक्षाएं तथा इच्छाएं जरूरत से ज्यादा होती है, परंतु वह अपने जीवन में अपनी इच्छाओं को पूरी होते हुए नहीं वेख पाता। वह बड़ी हुई भाग्य रेखा व्यक्ति के बने बनाए चाहे को बिगड़ देती है।

परंतु इस प्रकार की यह रेखा माध्यमा ऊंगली पर न चढ़े, अपितु शनि क्षेत्र तक ही जाकर रुक जाए तो ऐसी रेखा शुभ उल्लायक कही जाती है। यदि भाग्य रेखा शनि क्षेत्र तक जाते जाते दुमुहरी हो जाती है तो वह विशेष सफलता की सूचक है। यदि भाग्य रेखा के अन्तिम बिन्दु पर दो सिरे जुकर पृष्ठ सिरा शनि पर्वत पर जाती है और दूसरा सिरा शुभ पर्वत तक पहुंच जाए तो वह व्यक्ति अपने जीवन में बहुत अधिक ऊचे पद पर पहुंचता है। ऐसे व्यक्ति को नामान्य धरने में जन्म लेकर भी उच्चपद प्राप्त होते देखा गया है।

यदि भाग्य रेखा को शनि पर्वत पर तिरछी रेखाएं काटती हों, तो उसे अपने जीवन में बाधाएं देखाने को मिलती हैं। बहुत अधिक बाधाओं के बाद भी वह अपने जीवन में सफल होता है। ये बाधक रेखाएं जितनी ही कम होती हैं, उतनी ही ज्यादा उच्ची मानी जाती हैं।

यदि भाग्य रेखा का उद्गम मणिबन्ध के नीचे से हो, तो ऐसी रेखा भी दोषपूर्ण मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति दरिद्र तथा नायहीन जीवन व्यतीत करते हैं।

**द्वितीयावस्था:** सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की रेखा भी श्रेष्ठ मानी गई है। परंतु यदि इस प्रकार की रेखा मध्यमा ऊंगली पर चढ़ने का प्रयत्न करते हो यह बाधाओं को पैदा करने वाली मानी गई है। ऐसे व्यक्ति साधसी होते हुए भी परेशानियों से घिर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को जीवन में सफलता बहुत मुश्किल से मिलती है।



जिसके हाथ में इस प्रकार की रेखा शनि पर्वत पर पहुंच जाती है, वह व्यक्ति यथोपि ब्रह्मपन में परेशानियां उठाता है, परंतु आगे चढ़नकर वह अपने प्रयत्नों से उत्तीर्ण करता है। २८वें वर्ष में उसका पूर्ण भाग्योदय होता है।

ऐसे व्यक्ति संकोची स्वभाव के होते हैं, तथा तुरंत निर्णय लेने में समर्थ नहीं हो पाते। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों, तो उस व्यक्ति के जीवन में कई बार बाधाएं आती हैं और अथक परिश्रम के बाद वह जीवन में सफल हो पाता है।

यदि भाग्य रेखा के साथ-साथ जीवन रेखा भी बढ़ रही हो, तो ऐसी रेखा शुभ नहीं मानी जाती। जीवन रेखा और भाग्य रेखा का परस्पर मिलना या आपस में लिपटना भी अनुकूल नहीं कहा जाता।

**तृतीयावस्था:** यह रेखा जितनी ही स्पष्ट होती है, उतनी ही ज्यादा शुभ मानी जाती है। ऐसी भाग्य रेखा जीवन रेखा को

काट कर ही आगे बढ़ती है, परंतु जिस जगह वह जीवन रेखा को काटती है जीवन की उस अवधि में उसे बहुत अधिक प्रेरणायों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति होने पर वह व्यक्ति भयंकर दुर्घटना में घायल हो सकता है, विवाहिया हो सकता है, अथवा आत्महत्या कर सकता है।

यह रेखा शुक्र पर्वत से निकलती है, अतः यह बात मही समझनी चाहिए कि उस व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम के सेव में बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा होता है, तथा समुराल से अधिक धन मिलता है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री मुन्द्र, आकर्षक तथा तड़क-भड़क से रहने वाली होती है।

परंतु ऐसे व्यक्तियों का बुद्धापा बहुत कष्ट का होता है। उनका वैवाहिक जीवन भी सुखमय नहीं माना जाता। इस प्रकार की भाग्य रेखा के बीच में यदि द्वीप का चिन्ह दिखाई दे, तो पति-पत्नी मन्त्रिमंड की वजह से एक साथ नहीं रह पाते।

**थतुर्थावस्था:** यह भाग्य रेखा भी शुभ मानी गई है, परंतु ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय योग्यतावस्था के बाव ही होता है। शिक्षा के सेव में इसको बार-बार बाधाएं देखनी पड़ती है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाना।

यदि इस प्रकार वी भाग्य रेखा के गाथ कोई सहायक रेखा न हो, तो व्यक्ति जीवन में अपनी ही की हुई गलतियों पर पछताता रहता है। मित्रों का सहयोग उसे नहीं मिल पाता, तथा जीवन में उत्तरि के लिए उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। उसका भाग्योदय अत्यधिक विलम्ब ग्रह होता है और कठीन के सहयोग से ही वह उत्तरि कर पाता है। ऐसा व्यक्ति पुलस या मिलिट्री विभाग में विशेष उत्तरि कर सकता है।

यदि यह रेखा मार्ग में टूट गई हो, तो व्यक्ति को अपने जीवन में बार-बार बार बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि इस रेखा पर द्वीप हो तो ऐसा व्यक्ति शायदीन होता है।

**वंचमावस्था:** यह रेखा हथेली में अनुकूल कही जाती है, परंतु यह यदि मध्यम उमली के होए पर वह उपर्युक्त प्रयत्न करती है, तो वह व्यक्ति जीवन में सामना नहीं प्राप्त कर पाना। यद्यपि वह आगे बढ़ने के लिए बराबर प्रयत्न करता रहता परंतु उसे जीवन में बार-बार असफलता का वापिना करना पड़ता है। किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के भल्यागर दो उह उत्तरि कर सकता है।

जीवन के मध्य-काल में ये व्यक्ति विकाप करने हैं तथे-

व्यक्ति सफल चित्रकार अथवा साहित्यकार होते हैं। मेरे स्वेच्छा का तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में पासगत होते हैं।

यदि ऐसी रेखा जीवन रेखा के आगे बढ़ने पर दूटी हुई हो या लहरदार बन जाई हो, तो उस व्यक्ति की उत्तरि नहीं हो पाती, और वह निरंतर अपने भाग्य के कोसता रहता है। यदि ऐसी रेखा को आड़ी या तिरछी रेखाएं करें, तो उसे जीवन में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति सफल देश भूत होते हैं, तथा इनकी वृद्धावस्था अत्यन्त सुखमय व्यतीत होती है।

**वृद्धावस्था:** जिसके हाथ में इस प्रकार की भाग्य रेखा होती है, वह अत्यन्त सौभाग्यशाली माना जाता है। इस प्रकार वे व्यक्ति का भाग्योदय ३६वें वर्ष के बाद से ही होता है। जीवन के ३६ से ४२वें वर्ष के बीच वह आग्य वर्जनक रूप से उत्तरि करता है।

ऐसे व्यक्ति का प्रारंभिक जीवन अत्यन्त कष्टदायक होता है, परंतु उसका योवनकाल और उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त सुखकर मानी जाती है, और अपने जीवन के उत्तराकाल में उसे धन, मान, यश, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त होती है।

यदि ऐसी रेखा बीच-बीच में टूटी हुई हो, तो उसके भाग्य में बाधाएं जाती हैं और यदि उस रेखा पर बृत का चिन्ह होता हो तो ऐसा व्यक्ति भाग्यहीन कहा जाता है। यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर गुरु पर्वत की ओर जाती हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

**सप्तमावस्था:** - हृदय रेखा से निकलने वाली यह भाग्य रेखा माझी शनि पर्वत तक पहुँच जाती है, पर कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा अग्र चलकर विश्वन की तरह बन जाती है, जिसका एक चिना दूरी पर्वत की ओर जाता सुभरा हिम्मा गुरु पर्वत की ओर जाता है। ऐसी भाग्य रेखा अत्यन्त शुभ मानी गई है। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा शनि दो बाकर दो टुकड़ों में बंट जाए तो यह दो जन अपने नवाम में अपूर्व धन, मान, यश, पद, आदि प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति गहरदार होता है। अपने जीवन में वह निरंतर अपने की जलाना करता रहता है। अब अपने प्रग-गोंसे लाल्हों करने की चमत्कारी करता है और शामिक कालों में खच्ची भी करता है। यह दोनों व्यक्ति प्राप्ति में दोष का चिन्ह होता है, तो ३५ अपने जीवन में बहुत बड़ी बदनामी उठानी पड़ती है। यदि यह रेखा

नीच में दूरी तक निश्चय लेवार हो, तामना का सफलता।

यदि इसकी अपर्याप्त चढ़ने जसफलता अष्टम

नो उस विद्या की बालक के कारण पर का कोई सफलता सुखमय विद्या

परंतु इस व्याप्ति उस जीवन अत्यन्त वृद्धि रेखा संकेत होता है।

नवम माना जाया तीन का अवधि व्यक्ति इस प्रवास ना रहा प्राप्त करता है। अपने जीवन में वह निरंतर अपने की जलाना करता रहता है। अब अपने प्रग-गोंसे लाल्हों करने की चमत्कारी करता है और शामिक कालों में खच्ची भी करता है। यह दोनों व्यक्ति प्राप्ति में दोष का चिन्ह होता है, तो ३५ अपने जीवन में बहुत बड़ी बदनामी उठानी पड़ती है। यदि यह रेखा

बोच में टूटी हुई हो, तो आगु के उस भाग में उसे विशेष आर्थिक शानि सहन करनी पड़ती है। यदि इसे रेखा पर आड़ी तिरछी लखाएं हों, तो उस व्यक्तित्व को जीवन में कई बार संघर्षों का सामना करना पड़ता है और अत्यन्त कठिनाई के बाद ही वह सफलता प्राप्त कर पाता है।

यदि इस रेखा के अन्तिम स्थान पर तारे का विन्ह हो, तो उसकी अकाल मृत्यु होती है। यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ने का प्रयत्न करे, तो वह व्यक्ति जीवन में बराबर असफलता का सामना करता है।

**अष्टमावस्था:** यदि यह रेखा निर्देश स्पष्ट और गहरी हो, तो उस व्यक्ति का बचपन अत्यन्त सुखमय व्यतीत होता है। विद्या की दृष्टि से वह श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार के बालक की शुद्धि तेज होती है और वे अपने स्वतंत्र विचारों के कारण पहचाने जाते हैं। वश्वपि परिवार से इनको किसी प्रकार का कोई विशेष सहयोग नहीं मिलता फिर भी वे प्रयत्न करके सफलता की ओर बढ़ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति का जीवन पूर्णतः सुखमय कहा जा सकता है।

विदेश यात्रा का योग इनके जीवन में कई बार होता है, परंतु इस प्रकार की भाग्य रेखा टूटी हुई या लहरदार हो, तो उस व्यक्ति के जीवन में सफलता के अवसर कम रहते हैं। उसे जीवन में आए बार संघर्ष करना पड़ता है, बहुत अधिक प्रयत्न के बावजूद सफलता मिल पाती है। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा अन्त में जाकर दोमुँही बन जाती है, तो वह श्रेष्ठ संकेत है, और ऐसा व्यक्ति निश्चय ही अपने उद्देश्यों में सफल होता है।

**नवमावस्था:** इस प्रकार की भाग्य रेखा को अत्यन्त शुभ माना गया है। यदि यह रेखा शानि पर्वत पर जाकर दो भागों में या तीन भागों में बंट जाती है, तो वह व्यक्ति अतुलनीय धन का स्वामी होता है, तथा जीवन में पूर्ण प्रगति करता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में आय के लोत एक से अधिक होते हैं। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा का अन्तिम सिरा गुरु पर्वत की ओर जा रहा हो, तो वह व्यक्ति साहित्य के माध्यम से श्रेष्ठ कल प्राप्त करता है। यदि इस प्रकार का सिरा सूर्य पर्वत की ओर जाता हो, तो वह विदेश में व्यापार कर पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता है, तथा समाज में उसे सम्माननीय स्थान मिलता है।

यदि इस प्रकार की रेखा टूटी हुई या जंजीरदार हो, तो उसे

जीवन में बहुत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि यह रेखा मध्यमा उंगली की पौर पर चढ़ रही हो, तो उसे जीवन में जखरत से ज्यादा हानि सहन करनी पड़ती है।

जिन व्यक्तियों के हाथ में ऐसी भाग्य रेखा होती है, उनका माघ्योदय विवाह के बाद ही होता है। उनका मन अस्थिर तथा वृत्त बंचल होता है। जीवन में एक से अधिक सिन्दूरों से उनका सम्पर्क रहता है। उनके जीवन में जलयात्रा के योग बहुत अधिक होते हैं। ऐसे व्यक्ति एकान्त प्रेमी सहदय एवं मधुर स्वभाव के होते हैं।

**दशमावस्था:** निस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार की भाग्य रेखा होती है, वह निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा रहता है, अथवा वह वायु में से उच्च पद प्राप्त अधिकारी होता है। जीवन में ऐसा व्यक्ति राष्ट्र-स्तरीय सम्मान प्राप्त करता है और उसके जीवन में साहस तथा धैर्य की किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। यदि ऐसी भाग्य रेखा जंजीरदार टूटी हुई या लहरियादार हो, तो उसे जीवन में बहुत अधिक बाधाओं का सम्मान करना पड़ता है। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा अन्त में जाकर दो भागों में बट जाए और उसका एक सिरा गुरु पर्वत तथा दूसरा सिरा सूर्य पर्वत की ओर जाता हो, वह व्यक्ति प्रबल भावशाली होता है।

**एकादशावस्था:** ऐसी भाग्य रेखा बहुत ही कम लोगों के हाथ में देखने को मिलती है। इन व्यक्तियों का व्यक्तित्व अपने आप में भव्य होता है। ये शुक्र की तरह जीवन में चमकते हैं। इनके कार्यों से समाज प्रभावित होता है। देश के दिग्निर्देश में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके विवाह, इनके कार्य सभी कुछ योजनाबद्ध होते हैं। एक साधारण कुल में जन्म लेकर भी ऐसा व्यक्ति सभी दृष्टियों से योग्य, शम्पङ्ग और सुखी होता है।

यदि ऐसी रेखा अन्त में जाकर दो भागों में बट जाए तो वह उच्च स्तर का अधिकारी होता है, तथा उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

ऊपर मैंने न्याय विवाह के भाग्य रेखा के उद्दाम स्थल बतलाए हैं। परंतु इसके अन्वावा भी उद्गम स्थल हो सकते हैं। पाठकों को एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जो भी रेखा शानि पर्वत को स्पर्श करती है, वास्तव में वही रेखा भाग्य रेखा कहनाने की अधिकारी होती है।

(भाग्य रेखा के संबंध में शेष विवेचन अगले अंक में)

# जीवन की प्रतिष्ठा

धन-शान्ति, आज्ञा, भवन, यश,  
प्रतिष्ठा सभी कुछ प्रदान करती है....

जीवन में घटित होने वाली विविध घटनाओं को देखते हुए एक साधारण व्यक्ति यह समझ ही नहीं पाता है, कि वह किस रूप में अपना जीवन प्राप्त करे। उसके जीवन का निर्गम उसके खुद के हाथों से निकल कर उन घटनाओं पर निर्भर हो जाता है, जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। और फिर वह अपने जीवन को एक निष्काम्य गति प्रदान करता हुआ सिर्फ जीवन व्यतीत करता रहता है। आज का मानव विवश दिखाई देता है, हारा हुआ, थका हुआ, बिस्तेज विखता है। उसमें जीश, हिम्मत, ताकत का अभाव दिखाई पड़ता है। वह किसी आन्य के लिए तो कुछ करने में असमर्थ होता ही है, खुद के लिए भी कोई ऐसा कार्य नहीं कर पाता, जिससे उसे सन्तुष्टि का अनुभव हो। यदि उससे पूछा जाये, कि क्या उसे अपने जीवन की कोई भी ऐसी घटना याद है जिसमें उसे प्रसन्नता मिली हो, वो क्षण के लिए ही सही मुरक्काड़ प्राप्त हुई हो?

तो वह विचार मग्न हो जाएगा, क्योंकि ऐसी कोई घटना उसके जीवन में घटित हुई ही नहीं है। बाहर से अपनी प्रतिष्ठा अपने सम्मान को लेकर एक लम्बे आवरण में तो वह सैकड़ों बार मुरक्कराया होगा, प्रसन्न भी हुआ होगा, लेकिन वे एक आवरण मात्र थीं, जो माझील या क्षण बदलते ही विस्फूट हो जाती हैं। इसके अलावा यदि उससे दुख, तनाव या किसी समस्या के बारे में पूछा जाय, तिर जात होता है, कि उसका पूरा जीवन ही समस्याग्रस्त है। उसमें कहीं प्रसन्नता ही नहीं। फिर मानव अपने दुख, तकलीफ को भिटाने के लिए गुरु की शरण लेता है।

देखा जाए तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति ही गुरु का आश्रय

पाने के लिए भटकता है, यह आवश्यक नहीं है, कि वह ढोल-पीट-पीट कर कहे, कि मैं गुरु बना लिया है, लेकिन गुरु के पास जाकर उसे यो क्षण की शांति का अनुभव होता ही है। उस व्यक्ति का यह कर्तव्य ही जाता है, कि वह सही मार्ग पर पहुंचे और सही मार्ग ही साधना का।

आपको आरती करके, भजन गा कर मानसिक सन्तुष्टि मिल सकती है, लेकिन आपकी जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं वह पूर्ण ही नहीं सकती। उनको पूरा करने के लिए आपको स्वयं साधना के मार्ग पर गतिशील होना पड़ेगा, उस मार्ग पर गतिशील होना पड़ेगा जहां आपको अपने प्रयास से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ेगा।

और इसके लिए आवश्यक है, कि आप जिस मार्ग पर गतिशील हों वह श्रेष्ठ हो, सरल हो, सहज हो तथा आडम्बर रहित हो, क्योंकि ऐसा ही मार्ग आपके लिए उपयुक्त होगा, जिसमें आप किसी ऐसे मार्ग पर भविशील नहीं हो पायेंगे, जिसमें आपको यो महीने जंगलों में बिताना पड़े, जहां हर क्षण जानवरों का भय हो, जरा सी चूक होने पर अनिष्ट की आशंका हो, आडम्बर युक्त वेशभूषा हो, ऐसा मार्ग आपके लिए सम्भव नहीं है। आप जिसे गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो ऐसा मार्ग ही ठीक है, जिसमें आप स्वयं अग्रसर हो सकें और सरलतापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

जब समस्याएं होती हैं, तभाव होता है तो वह सरल, सहज मार्ग भी आसानी से नहीं पार हो पाता है, क्योंकि प्रत्येक साधना के कुछ नियम होते हैं और साधक उन सम्पूर्ण नियमों का

यथोचित ढंग से पालन नहीं कर पाता है और किसी एक गलती

न पूरी की  
ओर एक है  
ही और वह  
कुछ साध  
होकर पुन  
यह नहीं है  
नहीं दूर क  
करना है,  
को भी प्र  
को प्राप्त है  
फिर धन  
घर में कि  
इस वे

‘महालक्ष्मी  
महालक्ष्मी  
यह तभी  
करे। मह  
एक श्रेष्ठ  
बात मार्ग  
उसके ज  
लग जाए  
लगती है

जब  
दुर्योधन  
में सर्व  
निवास  
मार्ग आ  
जन्म से  
उनसे ह  
एक एव  
हम राज  
की भाँ  
हो, फि  
व उसम  
का एक  
करना  
गुरुजन

से पूरी की पूरी साधना असफल हो जाती है फिर उपरके चारों ओर एक निराशा घिर जाती है। कई ऐसे साधक हैं, जो आते हैं और धन सम्बन्धी साधना सम्पन्न करते हैं, और उनमें से कुछ साधक सफलता प्राप्त करते हैं लेकिन कुछ असफल होकर पुनः धन लक्ष्मी की साधना करते हैं। लेकिन ऐसे साधक यह नहीं जानते, कि उन्हें अपने जीवन से सिर्फ दूरिता ही नहीं दूर करनी है बल्कि सुख, सौभाग्य-लक्ष्मी को भी प्राप्त करना है, धन लक्ष्मी को भी प्राप्त करना है, आरोग्य लक्ष्मी को भी प्राप्त करना है, और सबसे महत्वपूर्ण है भाग्य लक्ष्मी को प्राप्त करना। जब भाग्य हो आपका जाग्रत नहीं होता तो फिर धन लक्ष्मी का आगमन होगा कैसे, आरोग्यता आपके घर में किस प्रकार से स्थापित हो पायेगी।

इस सबकी एक साथ प्राप्ति के लिए जो विधान है वह 'महालक्ष्मी दीक्षा' है। महालक्ष्मी दीक्षा का अर्थ है, कि महालक्ष्मी आपको सभी स्वरूपों के साथ प्रदान की जाए और यह तभी समर्थ गुरु आपको यह दीक्षा प्रदान करे। महालक्ष्मी दीक्षा एक सामान्य दीक्षा नहीं है अपितु यह एक श्रेष्ठ, अद्वितीय दीक्षा है। महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक जब महालक्ष्मी से सम्बन्धित मन्त्र जप करता है तो उसके जीवन की जो भी न्यूनताएं हैं वे धीरे-धीरे समाप्त होने लग जाती हैं, उसके मार्ग में आने वाली बाधाएं भी समाप्त होने लगती हैं।

जब पाण्डव निरंतर बनवासर भोगते चले जा रहे थे और दुर्योधन नित नये कुचक रच कर, उन्हें किसी न किसी बहाने से, सभी सुखों से वंचित कर दूर जंगल में ही उनको स्थार्ड निवास बनाने को मजबूर कर दिया था, तो एक दिन पांचों भाई आपस में विचार-विमर्श करने लगे, कि आखिर हमारे जन्म से लेकर आज तक जितनी भी घटनाएं घटित हुई हैं, उनसे हमने दुर्ख ढी छेला है, हम सभी सदैव अपने जीवन के एक-एक दिन को जीने के लिए संघर्षरत रहे हैं, कहने को तो हम राजपुरुष हैं पर हमारा वास्तविक जीवन निर्धनों, दरिद्रों की भाँति ही बीत रहा है। ऐसा नहीं है कि हममें बल की कमी हो, फिर भी हमेशा हमारे जीवन को खतरा रहा और दुर्योधन व उससके अन्य भ्रात्यों ने हमेशा पञ्चपात कर द्ये निर्धनता का एहसास कराया। सदैव हमें राज महल के धरुओं का सामना करना पड़ा, यहां तक कि हमारे बृह पितामह तथा अन्य शुरुजनों ने भी हमारा कभी स्वेच्छापूर्वक साथ नहीं दिया।

अपने जीवन की रक्षा के लिए हम इस वन से उस बन भटक रहे हैं, आखिर कब तक हमें यही भटकना पड़ेगा और जब हमारा बनवास काल पूरा हो रहा है तो भी कौरव युद्ध करने की बात कह रहे हैं। आखिर क्या हमारे भाग्य को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

कृष्ण ने कहा, कि आप पांचों को चाहिए, कि आप महालक्ष्मी दीक्षा ग्रहण कर लें, क्योंकि इस समय आपके लिए यही दीक्षा श्रेष्ठ है। इसे पूर्णता के साथ प्राप्त करने के पश्चात आप राज्य सुख, शांति, ऐश्वर्य, धन, धान्य, आरोग्यता, विजय, यश, प्रतिष्ठा सभी कुछ प्राप्त कर लेंगे।

पांचों भावियों की प्राप्तिना के फलस्वरूप ही कृष्ण ने उन्हें यह श्रेष्ठतम दीक्षा (महालक्ष्मी दीक्षा) सम्पूर्ण विधि-विधान के साथ प्रदान की। महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त कर, ऊर्जायुक्त होकर फिर पाण्डवों को कभी जीवन में दुःखों का सामना नहीं पड़ा। महाभारत के युद्ध में विजयी होकर फिर पाण्डवों ने निष्ठेष्ट राज्य किया, और कहे वर्षों तक राज्य किया फिर उन्हें जीवन में लाली दुःखों का सामना नहीं करना पड़ा, फिर उनका जीवन कष्टमय नहीं गुजरा।

महालक्ष्मी दीक्षा गुरु अपने शिष्य को तभी देता है जब वह देखता है कि अब इसे पूर्णता देनी है, भौतिक क्षेत्र में इसे पूर्ण कर दी देना है, अपूर्ण नहीं रखना है क्योंकि महालक्ष्मी दीक्षा सिर्फ लक्ष्मी के स्वरूप को ही द्यान में रखकर नहीं प्रदान की जाती है, अन्तिक्य यह दीक्षा साधक के भाग्य को भी जाग्रत कर देती है, उसे आरोग्यता प्रदान करती है। यदि बीमारी के कारण उसकी देह निस्तेन द्वारा गई है, तो उसका पूर्ण कायाकल्प कर उसके चेहरे को ओजवुक और प्रसल बना देती है, शत्रु फिर ऐसे साधक के जीवन में ग्रविष्ट नहीं हो पाता है, फिर उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।

महालक्ष्मी दीक्षा के पश्चात फिर साधक जीवन के वास्तविक अर्थ को अनुभव करने लगता है, क्योंकि दीक्षा के पश्चात जैसे-जैसे साधक इसका मेत्र जप पूर्ण करता जाता है उसके घर का बानावण भी बदलने लगता है। घर में उदासी, नीरसता के स्थान पर एक युग्मन्ध प्रवाहित होने लगती है। यदि कोई बाहरी व्यक्ति आ जाता है तो वह भी नलदी जाने की दृच्छा नहीं रखता है, उसे भी उस घर में आनन्द की अनुभूति होती है। पूरे घर में तथा सभी राष्ट्रस्थों में निर्भयता का संचार होने लगता है। जीवन के छन्ने विधि-पक्षों को पूर्ण करनी यह 'महालक्ष्मी दीक्षा' क्या नरधारण हो सकती है?



# हुक्कुद्धाम हिंदूपी

जिस समूह पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध वैतन्त्र दिव्य गूण—

## पर ये दिल्ली साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

- इन तीनों दिवसों पर साधन में भग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मन्त्र होंगे
1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अध्यवा स्वजनों को (जो गतिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुद्धाम में सापन्न होने याते किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रु. 235/- है, परन्तु आपको नात्र रु. 480/- ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष नम्र तिद्दि, प्राण-प्रतिदिव्य सामग्री (यत्र, गुटिका आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
  2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए गतिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
  3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को जूनि परम्परा की इस वायन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनर्जीव एवं पुण्यदाती कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवार में अध्या कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन साधनात्मक चिन्तन आ पता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निःशुल्क है और गुरु कुण द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की नीतिका राशि को अध्य के तरज्जु में नहीं तो ल सकते।

23.11.2001 शनिवार

अपराजिता साधना मन की दुर्बलताओं के कारण ही व्यक्ति आज इनना अधिक परेशान हो गया है। मन में दृढ़ता न होने के कारण ही व्यक्ति किसी भी संकल्प को ने तो लेता है परन्तु बीच में छोड़ दबरा जाता है, यदि वह मन से बढ़ती है तो परिस्थितियों को घुकाकर ही दम लेता है और विजय हासिल करके रहता है। स्वभाव में क्रोध, चिङ्गिचापन, खीझ, निराशा, भय, असरदायपन, लक्ष्यावृत्तना, उच्चाटन- ये सब मन की निर्बलता ही हैं। हर कोई आप पर हाथी हो जाता है, पर के बातावरण एवं कार्यालय की बातों से आपको तनाव हो जाता है। जीवन में भौतिक रूप से उनार चढ़ाय आने ही हैं, उथल-पुथल होती ही है, लडाई-डांगडे होते ही हैं, नाम हानि होती ही है, भर्मीरी-गरीबी होती है, परन्तु सफल मनुष्य वही है, जो हर स्थिति में एक रसा रहे, प्रसन्न रह राके, आनन्दित रह सके और उहसके लिए आवश्यक है, कि वह मनव्येतन के न्यर पर काफी ऊपर उठा हुआ व्यक्ति हो। तभी वह जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है, अन्यथा सकल सम्पत्ति होने हुए भी सब व्यर्थ है, दृढ़ता और अडिगता प्रदान करने की ही यह साधना है, जो आज के युग में प्रत्येक व्यवसायी व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो ही।

पठोटी द्वारा 'लक्ष्मला महातिला दीक्षा' के तत्त्व २३ के १५ लक्ष्मला को ही आप चाहें तो नियमित विकल्पों से पूर्व ही अपना छोटो एवं न्यौछाकर गशि का बैंक ड्राफ्ट ('मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान' के नाम से) खेकर भी इन विकल्पों पर होने वाली दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच नवजनों के पास किसी कार्यालय की सम्पन्न यर प्राप्त होने के, इस हेतु आप अपना पत्र ईमेल-पोस्ट द्वारा ही भेजें। एवं विलम्ब समिलन पर दीक्षा सम्पन्न न हो रहेगी।

25.11

तो, दून्द्र विपुल ऐ देवगण, से हर प्र

गई स्वयं प्रेषवर्य क आजीवन है।

जीका प्रामाणिक उचाइयाँ जीवन के दूर कर केव बल, साहस कर लेने त करते के गुण प्रजिस कार्य है, उसमें व्यौक्ति वह करते का ह

जीका साध्यों क करते के उपरान किसी तीली छिप की जाएगी उपरोक्ती में सम्पर्क :

यह किसी भी मनुष्य के जीवन का सीमांत्र होता है, जब उसे यह साधना प्राप्त होती है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण ही समस्त सिद्धियों का सार है। मूलाधार से लगाकर सहस्रार तक एक-एक कर चक्र जब जागत होते हैं, तो साधक को अनेकों दिव्यानुभूतियां होती हैं। सामने बले व्यक्ति के मन की बासे जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे-बैठे देख लेना, अदृश्य ज्ञानियों से वातान्त्रप करना, और मानसिक तरঙ्गों द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से सम्पर्क करना-ऐसी अनेकों अतिन्द्रिय ज्ञानियों का प्रादूर्भाव कुण्डलिनी के चक्रों के जागरण से होता है। जागरण की इस क्रिया की अनेकों विधियां हैं, जिनमें हठयोग, प्राणायाम, क्रिया योग आदि सम्मिलित हैं, परन्तु मन साधना द्वारा कुण्डलिनी जागरण सरल व सुगम मार्ग है, जो प्रत्येक व्यक्ति अपना सकता है।

यदि वैभव और ऐश्वर्य का एक ही स्थान पर पूर्ण विस्तार देखना हो तो, इन्द्र के दरबार के अलावा कोई दूसरी ऐसी जगह नहीं है, जहाँ इनाम विपुल ऐश्वर्य विखरा पड़ा हो। स्वर्ण आभूषणों, रत्न-माणिक्यों से आभूषित देवगण, दीवान से परिपूर्ण अप्यराण, सुन्दर नन्दन कानन और मीतिक दृष्टि से हर प्रकार की पूर्णता का नाम ही स्वर्ग है।

स्वर्ग के इस ऐश्वर्य के पीछे रहस्य है इन्द्र द्वारा प्रतिपादित एवं की गई स्वर्ग लक्ष्मी साधना का। इस साधना द्वारा साधक अपने जीवन में विपुल ऐश्वर्य को निर्मलन दे सकते हैं। लक्ष्मी और स्वर्ण लक्ष्मी की कृपा साधक पर आजीवन बरसती है, फिर आभाव या दरिद्रता उसके जीवन में रह नहीं पाता है।

लक्ष्मी आज के युग में एक प्रामाणिक उपास है उक्तसत्ता की उदाहरणों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के ज्ञान की, अशूदृप्ति की कूट कर लेने का, जीवन में उत्तुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं झौठ प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का।

बुद्ध प्रवक्ता शक्तिपात्र द्वारा क्रिया उल्लङ्घन करने वाले लक्ष्मी की उदाहरणों को प्राप्त कर लेने का, व्यापक करने के ज्ञान की, अशूदृप्ति की कूट कर लेने का, जीवन में उत्तुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं झौठ प्राप्त कर लेने का एवं उपाय है।

लक्ष्मी में भाग लेने वाले सभी साधकों का जान से अमृत अक्षिक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रबाल किया जाएगा। यह लक्ष्मी इन तीनों क्रियों की साथ ६ बजे प्रबाल की जाएगी। लक्ष्मी के उपरान्त एक उपयोगी मन्त्र प्रबाल किया जाएगा।

जीवन के यन्त्र ३ दिनों के लिये  
किंहीं योग व्याकुलीयों  
की वार्षिक सदस्य बलाकार  
उक्तके ज्ञान वर्ती विश्वास का  
अवहार स्वरूप वे दीक्षा प्राप्त  
किः सुखक प्राप्ति कर मक्तु है

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएं

## कमला महाविद्या दीक्षा

235x5  
=Rs. 1175/-

यह आश्चर्य ही है कि कमला महाविद्या के नाम से तो सभी साधक परिचित होते हैं, पर कमला महाविद्या की शक्ति से साधक प्राप्त, अनभिग्रह ही है, और इसीलिए वे अन्य महाविद्या साधनाएं तो सम्पन्न करते हैं, परन्तु इनकी साधना की ओर ध्यान नहीं देते। सही अर्थों में कहा जाए तो कमला आदि शक्ति का वह स्वरूप है जो जीवन में अर्थ की अधिकारी देकी है। दरिद्रता को जड़ से समाप्त कर धन का अक्षय स्थोत्र प्रबाल करने में कमला-दीक्षा अचूक है। इसके प्रभाव से व्यापार में चतुर्दिक् वृद्धि होती है, बेरोजगार को रोजगार प्राप्त होता है, पदोन्नति होती है। महालक्ष्मी की साधना नो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेता है, परन्तु जो वास्तव में तंत्र के जानकार होते हैं, वे तो कमला दीक्षा ही लेते हैं, क्योंकि यह अपने आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूप है, जिसके सामने दुर्भाव्य, दरिद्रता टिक ही नहीं सकती।

राम्यक : सिद्धांश्रम, 306, कोहाट एन्डलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

सारांश में वर्णन आता है, कि मन्त्रिक में मन जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यकारी होता है यदि नवी के किनारे लगे, उससे श्री अधिक सामुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में बैठे तो, और पर्वत में श्री विद्वान्मत्त भी किंवा जात, तो और भी तरह गुरु ब्रेत छोता है, इस स्थानी भी बैठ होता है यदि साधक गुरु दरणों में बैठकर साधना सम्पाद्य करे। और यदि गुरुदेव अपने आश्रम उत्थान गुरुधाम में ही रह साधना प्रकाश करे, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे रथाल होते हैं, जहाँ किव्य शक्तियों का बाल संकेत रहता ही है। जो रुद्रशुर होते हैं, वे रुद्रम अप रो अश्वा राजशीर प्रतिपूर्व अपने शाम में अवस्थित होते हुए प्रत्येक वित्तियों का सूक्ष्म अप से साधालन करते ही रहते हैं। इशालिए विद्वा गुरुधाम में पर्वत कर गुरु से साधना, मन एवं लक्ष्मी प्राप्त करता है और गुरु दरणों का उपर्युक्त कर उलकी आङ्गों से साधना प्राप्त करता है, तो उसके सौभाग्य से केवल भी दृष्ट्यां करते हैं।

तीर्थ रथाल पुण्यप्रद है पर शिष्ट अश्वा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सालवुरुद्धेय का लिवास रथाल रहा हो, ऐसे किव्य रथाल पर गुरु दरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मन प्राप्त करने की डृच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके लक्ष्मी जागत होते हैं। इसी तथ्य की द्याज में रणने हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी किंवा गुरुधाम में तीन दिवसी को साधनात्मक प्रयोगों की श्रवला लियारित की जाई है।

# श्री लक्ष्मी कटुप

भगवान् सर्वत्रिक शब्दम् ते भजनते मातृश्वरी पार्वती को यह प्रश्नचतुर्व श्री लक्ष्मी कवच कहा था, उसके अद्वितीय भगवन् शिरहृषि जिन्होंने इस कवच को भगवती लक्ष्मी को कहत हुए यह कहा कि इसका पतल करने से साधक साधारण सर्वत्रिक हो जाता है, इसका केवल मूल रूप भी करे तो तुम्हारे पुत्र जगता के समर्पण ग्रीष्म एव युज्ज्वल दो जाता है। साधारण में पार्वती युहस्त्रां को विष्णु द्वितीय लक्ष्मी को लिप्त उपासना अवश्य करनी चाहिए।

**विनियोगः** अस्याद्बतुरक्षरी-विष्णु-दनिताया, कवचस्य श्रीभगवान् शिव-अधिरन्तुपु-छन्दोः, बाघभवी देवता, वाग्मवं शीज, लज्जा शक्ति, रमा कीलक, काम-शीजात्मवं, कवचं मम सुकवित्व-सुपाणिल्पसर्व-सिद्धि-समूलद्वय विनियोगः।

**अर्थः** ऐं श्री ही कली॑ -इस चार अक्षरबाली लक्ष्मी के कवच के 'कलि' प्रश्नान शिव, 'छन्द' अनुष्ठप, 'देवता' वाग्म भवी, 'शीज' ऐंहीं, 'शक्ति' श्री, 'कीलक' कली॑ और 'विनियोग' श्रेष्ठ काल्प-शक्ति, उत्तम विद्वता एवं सभी प्रकार की सिद्धि-समूक्ति प्राप्त करने के लिए है।

इस कवच में प्रथम चौदह श्लोकों में भगवती लक्ष्मी के ऐं रूप, 'श्री' रूप, 'ही' रूप, 'कली॑' रूप की प्रार्थना करते हुए वाक् शक्ति, लक्ष्मी शक्ति, सिद्ध शक्ति और क्रिया शक्ति रूप में प्रार्थना की गई है।

साधक स्नान कर बुद्ध वस्त्र धारण कर जुलू पूजन सम्पन्न कर इस विशेष सिद्धि प्रवायक स्नोव-कवच का पाठ करे-

ऐकारो भस्तके पातु, वाघभवी सर्व-सिद्धिवा।  
ही पातु वक्षुषोर्मध्ये, वक्षुर्युम्ये च शाकरी॥१॥

जिह्वायां सुख-दृष्टे च, कर्णयोर्गण्ड्योर्नसि।  
ओष्ठाधरे दन्त-पक्ती, सालु-मूले हनी पुनः॥२॥  
पातु मा विष्णु-वनिता, लक्ष्मी-श्रीवर्ण-स्त्रिणी।  
कर्ण-युग्मे भुज-द्वन्द्वे, स्तन-द्वन्द्वे च पार्वती॥३॥  
हृष्ये मणि-बन्धे च, शीवाया पाशवर्योः पुनः।  
पृष्ठ-देशे तथा गुण्डे, वामे च दक्षिणे तथा॥४॥  
उपस्थे च नितम्बे च, नाभी जंघा-द्वये पुनः।  
जानु-चक्रे पद-द्वन्द्वे, चुटिकेऽग्निलि-मूलके॥५॥  
स-धातु-प्राण-शक्त्यात्म-सीमान्यां मस्तके पुनः।  
सवागि पातु कामेशी, महा-देवी समृतिः॥६॥  
व्युष्टिः पातु महामाया, उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु।  
कलि पातु सदा वेदी, सर्वत्र शम्भु-वल्लभा॥७॥  
वाघभवी सर्वदा पातु, पातु मा हर-गेहिनी।  
रमा पातु सदा वेदी, पातु माया सुराट स्वगम॥८॥  
सवागि पातु मा लक्ष्मीविष्णु-माया सुरेश्वरी।  
विजया पातु भवने, जया पातु सदा मम॥९॥  
शिव-दृती सदा पातु, सुन्दरी पातु सर्वदा।

धरवी त्वरिता पातु मा वन-दु योगिन्य मात्रा: सर्वत्र पातु म इति ते अर्थ मूल वाग्-भवी मे दोनों भेदों के 'श्री'- स मण्डल मे, दे अधर मे, वात रक्षा करे ॥१॥ पार्वती मे मे, हृदय मे, शीढ़ मे, गुड़ दोनों जांयों मंगुलियों के अण्ड-कोष समुच्छिति म महा-मा करे। शाम् 'वाण-म और 'माया' 'सुरेश्वर करे। विजया 'शिव-द सभी स्थानों त्वरिता मेरी रक्षा मि 'वन-द योगिनियों 'मात्राएं मेरी सभी

भैरवी पातु सर्वं च, भेदण्डा सर्वदाऽवतु ॥१०॥  
 त्वरिता पातु मां नित्यमुग-तारा सदाऽवतु ।  
 पातु मां कालिका नित्यं, काल-रात्रि: सदाऽवतु ॥११॥  
 वन-दुर्गा सदा पातु, कामाख्या सर्वदाऽवतु  
 योगिन्यः सर्वं पान्तु, मुग्रा: पान्तु सदा मम ॥१२॥  
 मात्रा: पान्तु सदादेव्यज्ञचक्रस्था योगिनी-गणा : ।  
 सर्वं सर्वं-कार्येषु, सर्वं-कर्मसु सर्वदा ॥१३॥  
 पातु मां देव-देवीं च, लक्ष्मीः सर्वं-समृद्धिवा ।  
 इति ते कथितं विद्यं, कवचं सर्वं-सिद्धये ॥१४॥

अर्थ मूल कवच- 'ऐ' कार रूपिणी सर्व-पिण्डि-दीवी 'श्री'  
 बाग-भवी मेरे मस्तक में रक्षा करे । 'हीं' - रूपिणी शाकी मेरे  
 दोनों नेत्रों के मध्य में और दोनों नेत्रों में रक्षा करे ॥१॥

'श्री'- रूपिणी विष्णु-पत्नी लक्ष्मी मेरी जिहा में, मुख-  
 मण्डल में, दोनों कानों में, दोनों गण्डों में, नाक में, ओषु और  
 अंधर में, दोनों की पंक्ति में, तालु-मूल में तथा हनु (हसली) में  
 रक्षा करे ॥२॥

पावनी मेरे दोनों कानों में, दोनों भुजाओं में, दोनों स्तनों  
 में, हृदय में, मणि-बन्ध (कलाई) में, गीता में, दोनों पाश्वर्णों में,  
 पीठ में, गुह्या में, उपस्थ में, बाएं और बाएं नित्यम् में, नामिं में,  
 दोनों जांघों में, जानु-चक्र में, दोनों पैरों में, पुष्टिका (गुलफ) में,  
 अंगुलियों के मूल में, सात धातुओं में, प्राण-शक्ति-आत्मा-  
 अण्ड-कोष एवं मस्तक में रक्षा करे । कामेश्वरी महा-देवी  
 'समृद्धिं' मेरे सभी अंगों में रक्षा करे ॥३-५॥

महा-माया 'व्युष्टि', 'उन्नक्षिणी' और 'जगद्धि' सदा मेरी रक्षा  
 करे । शम्भु प्रिया देवी सर्वं रक्षा करे । ॥६॥

'बाग-भवी' और 'हर-गोहिनी' सदा मेरी रक्षा करे । 'रमा'  
 और 'माया' देवी स्वयं मेरी रक्षा करे ॥८॥

'सुरेश्वरी विष्णु-माया लक्ष्मी' देवी मेरे सभी अंगों की रक्षा  
 करे । 'विजया' वर में रक्षा करे, 'नया' सदा मेरी रक्षा करे ॥९॥

'शिव-दूती' और 'सुन्दरी' सदा मेरी रक्षा करे । 'भैरवी'  
 सभी स्थानों में रक्षा करे । 'भेदण्डा' सदा मेरी रक्षा करे ॥१०॥

'त्वरिता' और 'उग्रतारा' निरंतर मेरी रक्षा करे, 'कालिका'  
 मेरी रक्षा नित्य करे और 'काल-रात्रि' सदा रक्षा करे ॥११॥

'वन-दुर्गा' और 'कामाख्या देवी' मेरी सदा रक्षा करे । -  
 'योगिनियों' सदा रक्षा करे । 'मुद्राएं' मदा मेरी रक्षा करे ॥१२॥

'मावरण' और 'चक्र-स्थित देविया' तथा योगिनी-गण सदा  
 मेरी सभी स्थानों में एवं सभी कार्यों-समस्त कर्मों में रक्षा

सद्गुरु लक्ष्मी कहा करते हैं कि लिति के  
 पूजन क्रम में युरु पुजन के साथ-साथ  
 किसी व विश्वर विशेष स्तोत्र का यह  
 अवश्य करना चाहिए और लक्ष्मी का  
 तात्पर्य के दस घन ही नहीं है अग्रिम स्तम्भ  
 का तात्पर्य है धर्म के साथ जो, सम्मान,  
 अस्त्व एवं, कामाख्या शत्ति, अद्वि-  
 सिद्धि और वृद्धि है । लिति के लक्ष्मी में इन  
 सब गुणों की स्थिति होती है यही सभी  
 रूप में लक्ष्मी पाते कहा जा सकता है  
 और इसके सिर और सुन्दर और सहीर-  
 कवच उत्त्यन्त ही प्रभावकारी गलरेक है ।

करे ॥१५॥

यमी प्रकार की समृद्धि दायिनी भुर देवी देवताओं की देवी  
 लक्ष्मी मेरी रक्षा करे ॥१६॥

उपरोक्त लक्ष्मी कवच से एक विशेष बात रूपष्ट होती है कि  
 मूल रूप से लक्ष्मी के नीज मंत्र 'ऐ', 'हीं', 'श्री', 'बत्ती' है  
 इसके साथ ही लक्ष्मी के अन्य स्वरूपों पावनी, कामेश्वरी,  
 महादेवी, व्यष्टि, उत्कृष्टि, आदि, शंभु प्रिया, वाग्भवी, हर-  
 गेहिनी, रमा, माया, सुरेश्वरी, विष्णु, माया लक्ष्मी, विजया,  
 जया, शिवदूती, सुन्दरी, भैरवी, भेदण्डा, त्वरिता, उग्रतारा,  
 कालिका, कालरात्रि, वनदुर्गा, कामाख्या देवी, योगिनियां,  
 मुद्राएं, मात्राएं, चक्रस्थित देविया, सभी लक्ष्मी के ही स्वरूप  
 हैं और जीवन को सम्पूर्ण बनाने के लिए साधक की लक्ष्मी के  
 इन सब स्वरूपों की साधना करनी चाहिए । इसके साथ ही  
 इस कवच में इन सब नामों का प्रार्थना सहित उल्लेख है ।  
 इस कारण यह कवच सभी रिद्धियों की प्राप्ति के लिए कहा  
 गया है ।

### (प्राप्ति-शुद्धि)

यत्र तत्र न वक्तव्यं, यदीच्छेदात्मनो हितम् ।

शादाय भक्ति-हीनाय, निन्दकाय महेश्वरि ॥१॥

न्यूनांगेऽतिरिक्तांगे, दर्शयेत्र कदाचन ।

न स्तव दशयित विद्यं, सन्वश्वं शिवहा भवेत् ॥२॥

कुलीनाय महेश्वर, दुर्गा-भक्ति-पराय च ।



वैष्णवाय विशुद्धाय, दधात कवचमुतमम् ॥३॥  
निज-शिष्याय शान्ताय, धनिने जानिने तथा ।  
दधात कवचमित्युक्तं, सर्व-तत्र-समन्वितम् ॥४॥  
शमो मंगल-वारे च, रक्त - चन्दनके स्त्रावा ।  
यावकेन लिखेभन्तं, सर्व-तत्र-समन्वितम् ॥५॥  
विलिख्य कवच दिव्यं, स्वयम्भ-कुमुमः गुभैः ।  
स्व-शुभैः पर-शुभैऽच, नाना-ग्रन्थ-समन्वितः ॥६॥  
जोरो चना-कुं कुमेन, रक्त-चन्दनके न वा ।  
सु-तिथो शुभ-योगे वा, श्रवणायां रवेदिने ॥७॥  
अश्विन्यां कृतिकायो वा, फलगुन्यां वा मधाम् च ।  
पूर्व-भाद्र-पदा-योगे, स्वान्यां मंगल-वासरे ॥८॥  
विलिखेत प्रपठेत् स्तोत्रं, शुभ-योगे सुरालये ।  
आयुधत-प्रीति-योगे च, ब्रह्म-योगे विशेषतः ॥९॥  
इन्द्र-योगे शुभ-योगे, शुक्र-योगे तथैव च ।  
कीलवे वालवे चेव, वणिजे चैव सत्तमः ॥१०॥  
शून्यागारे शमशाने वा, विजने च विशेषतः ।  
कुमारी फूलसिंहाऽद्वैत, यजेत् त्रेयी सनातनीम् ॥११॥  
मत्स्येमासीः शाक-पूर्णः, पूजयेत् पर-देवताम् ।  
घृतादीः सोपकरणीः, पुष्प-सूर्यविशेषतः ॥१२॥  
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च, पूजयेत् परमेश्वरीम् ।  
आखेटकमुपारब्यानं, तत्र कुर्याद्विन-त्रयम् ॥१३॥  
तदा धरेन्महा-रक्षां, शंकरेणेति भाषितम् ।  
मारण-द्वेषणार्दीनि, लभेनात्र-संश्लेषु स्वकृतः ॥१४॥  
स भवेत् पार्वती पुत्र, सर्व शास्त्रं गुरुर्देवो

हर-साक्षात्, पत्नी तस्य हर-प्रिया ।

अभेदेन यजेद् यस्तु, तस्य सिद्धिरवृतः ॥१५॥

पठति य इह मत्यों, नित्यमाद्रान्तरात्मा तु ।

जप-फलमनुसेयं, लभ्यते यद् विद्येयम् ॥

स भवति पदमुच्चीः सम्पदा पाद-नम-क्षितिप-

मुकुट-लक्ष्मी लक्षणानां चिराया ॥१६॥

फल श्रुति (अर्थ), भगवान् महेश्वर ने महेश्वरी को इस कवच का फल यिवेचन करते हुए कहा कि साधक को यह कवच किसी अभक्त निन्दक के सामने नहीं पढ़ना चाहिए जो शक्ति साधना का डच्छुक साधक है, शांत और जानी है उसे ही इस कवच का पाठ करना चाहिए। शनिवार उथवा मंगलवार को लाल चंदन से इस कवच को लिख कर उस पर सुनांचित पुष्प उर्ध्वं कर इसका पाठ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसम तिथि और योग में किसी देवालय में बैठ कर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। शून्य स्थान अथवा शमशान में, निर्जन स्थान में इस कवच का पाठ नहीं करना चाहिए उसके पहले कई प्रकार के सांत्रोक्त पूजन विधान हैं। आतः सात्विक साधक घर में पुजा स्थान में, मंदिर में अथवा जलाशय के किनारे बृक्ष के नीचे इस कवच का पाठ करना चाहिए।

तदेवी ववच के इस स्तोत्र में भगवान् शिवजै एक विशेष बात कही है कि गुरुदेव साक्षात् शिव है और उनकी पत्नी साक्षात् शिव प्रिया पावती है। जो साधक गुरु और गुरु पत्नी को शिव और भवानी मानकर उनकी आराधना करता है उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्ति होती है।

सुम  
ओर आ  
योग है,  
भावराहीन  
साहायाता  
संत्र विद्धी  
अनुसार  
दीप लगा

### जीवन

ज  
में, मंगल का  
आनंदित अ  
होगी और उ

### आप का

आ  
नि: शुल्क 'म  
पी, पी. से नि  
पत्रिकाएं राज  
सिद्ध प्राप्ति प्र  
द्युटने पर आ

ला -

मंत्र

कोन

Mantra-Tan

निः शुल्क उपहार

दिव्य उपहार !!

# मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

सुसारूपथा में रह रहे भाग्य का उदय करना मनुष्य के तथा की बात नहीं है और आज के इस आपाधापी के युग में कर्म तथा अवसर के साथ भाग्य भी प्रबल योग है, जिसके बिना वह अपने कर्म से अवसर तो प्राप्त कर लेता है लेकिन भाग्यहीनता के कारण वह खाली हाथ ही रहता है। लेकिन वह चाहे तो दैरी सहायता प्राप्त कर अपने सोये हुए भाग्य को जाग्रत कर सकता है। यह भाग्योदय संत्रिष्ठ मन्त्रों से प्राण प्रतिष्ठित है, जिसे आप प्राप्त कर अपने भाग्य को अपने अनुसार निश्चिल कर सकते हैं। इसे पूजन सथान में स्थापित कर नित्य धूप-दीप लगाकर पूजन करें, सब माह के पश्चात छुड़े नदी में प्रवाहित कर दें।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - "ज्ञान दान"

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समाजों में, मंगल कार्यों में, बाल्यांगों को, धार्मिक परिवारों को वान कर लकड़े इंग और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से अतिरिक्त कर सकते हैं, जो आधी तक इससे बचता है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को सभ्यतामुक ज्ञान की शितलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

## आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (सलझ पोस्टकार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि "मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क 'संत्रिष्ठ प्राण प्रतिष्ठित भाग्योदय यंत्र' ३९०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + डाक व्यय ९०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आपने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छुटने के बाद मुझे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक फ्रांस भेज दें।" आपका पत्र आपने पर, ३००/- + डाक व्यय ९०/- = ३९०/- की बी. पी. पी. से संत्रिष्ठ प्राण प्रतिष्ठित भाग्योदय यंत्र भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वी. पी. पी. छुटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

## अपना पत्र जीधापुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, दौ, श्रीमाली नगर, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेलीफ़ोन: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimati Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.). India. Phone : 0291-432209

ज 'अद्यम' 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '85' ४८

## एक दृष्टि में:

# आधारा शिविर पुरं दीक्षा समारोह

13-14 नवम्बर 2001

जोधपुर

## दीपावली महोत्सव

शिविर स्थल - गुरुपाल जोधपुर

29-30 नवम्बर 2001

रायपुर (छत्तीसगढ़)

संन्यास दिवस महोत्सव एवं स्वर्ण स्फुरण महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल - र्पोदिंग काम्लेक्ष्य शयाम टाकोड रायपुर

आयोजक - \* आर.सी. सिंह 07818-33343 \* के.के.

तिवारी 0771-242680 \* उमेश शाह \* बबता उपाध्याय

\* दिनेश सेनी 0771-534279 \* आर.एस. मिश्रा 0771-

326191 \* धूप चंद्रकार \* जार.के. कुशवाहा \* संजय

सोम 07868-22777 \* एन.के. नायक \* तुका राम

गिलोरकर \* गंगा राम साह \* चिनोद साह \* दरपाल सिंह

दीवान \* लोकेश राठोड 07752-44995 \* टी.एस. चन्द्रेश

0771-411692

9 दिसम्बर 2001 हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)

## बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल - मवनमेट सिनियर सेकेंडरी स्कूल हमीरपुर

बस स्टैंड के सामने

आयोजक - \* जानचंद्र रत्न 01978-55283 \* कश्मीर सिंह

चडेन 01978-5547 \* पर्सिन केदरनाथ 01905-66930 \* लरदार सुबेग सिंह 0177-230503 \* श्रीलेन्द्र बेरी 09178-

44500 \* ओमप्रकाश शर्मा 01893-65174 \* प्रकाशो डेवी

01978-66059 \* सुरेश पटेन 01978-55251 \* ओम

निखिल 01978-55016 \* राजेन्द्र शर्मा 01972-22265 \*

जयचंद्र टाकुर 01972-23530

15-16 दिसम्बर 2001 जयपुर

सिंह बिनायक अमहालक्ष्मी साधना शिविर  
शिविर स्थल - दशहरा बेसान आदर्श नगर, जयपुर (राज.)

आयोजक - \* रघु जी शर्मा 0141-582164 \* अनिल शर्मा 0141-415277 \* अम्बरीश शर्मा 0141-351304 \* तेज सिंह राजवत 0141-412246 \* विलोक चंद्र अश्वाल 0141-418987 \* विष्विजय सिंह राठोड 561197 \* राकेश जैन 24118 \* राजेन्द्र पारिक 402327 \* सुणा राम सेनी 261889 \* हरि सिंह चौधरी 701608 \* सुमील शर्मा 564480 \* विजय कुड़ी 22301 \* मोहन लाल यात्रव 221228 \* शेर सिंह मीना 360467 \*

23 दिसम्बर 2001 भरुच (गुजरात)

अष्ट लक्ष्मी भुवनेश्वरी साधना शिविर  
शिविर स्थल - सत्संग भवन हॉल, कल्सक फ्लारा, रेलवे स्टेशन के पास भरुच  
आयोजक - \* दिलेश शुकल 02642-50989 \* आर.सी. सिंह 02642-27356 \* घोंसेश प्रजापति 02642-61128 \* देवेन्द्र व्यास \* योगेन्द्र बलिया 02642-27659 \* शिवांकर प्रसाद \* जे.पी. सिंह 02642-50803 \* हमेत भट्ट

13-14 जनवरी 2002 सारनी बेतुल, (मध्य प्रदेश)

दस महाविद्या शिवि साधना शिविर  
शिविर स्थल - शास-शालक उद्यानर माध्यमिक विद्यालय सारनी (सुपर पक)

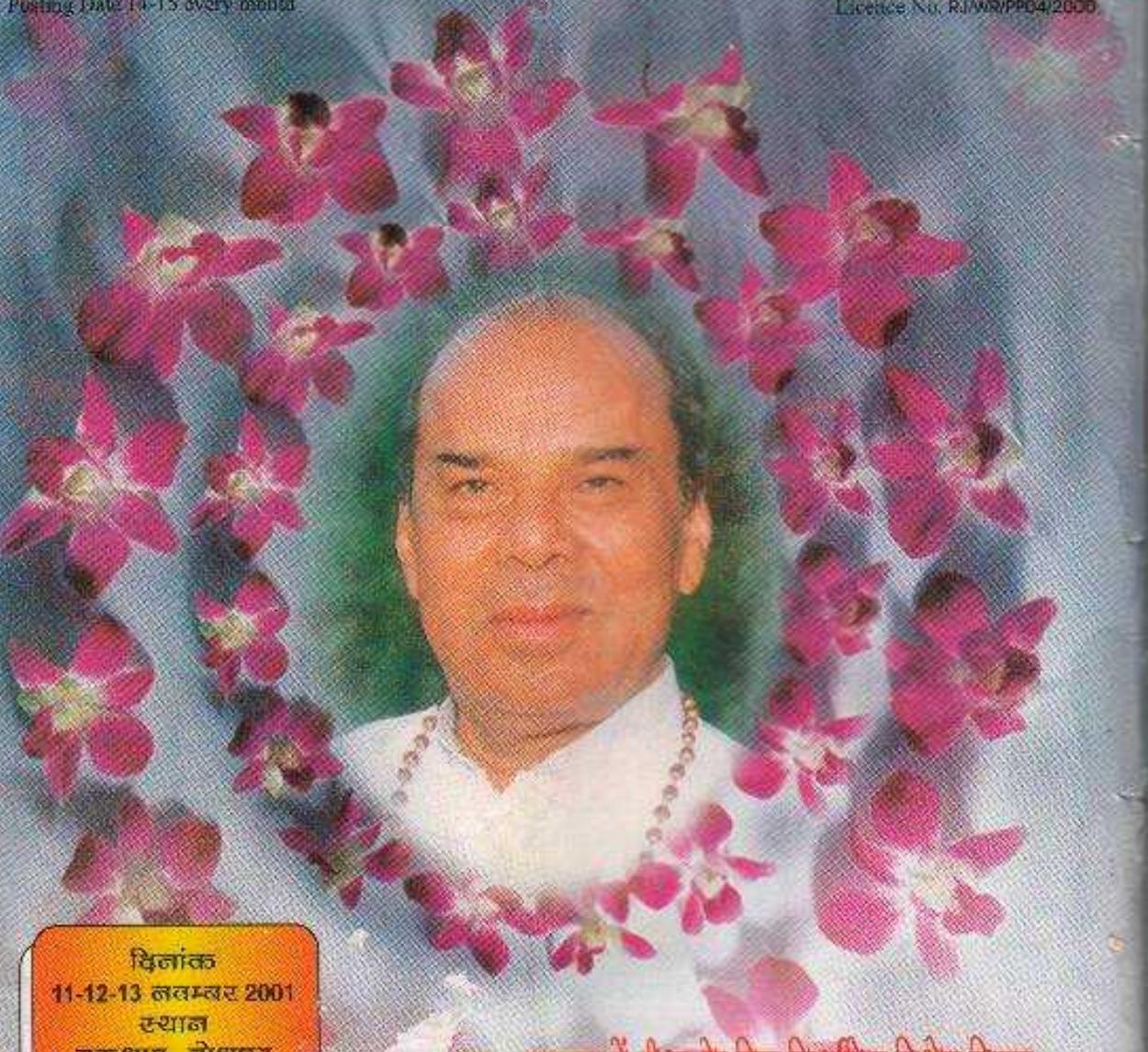
आयोजक - \* श्रीमति शकुन देवी धोटे 78508 \* रामचन्द्र लोनारे \* हरिराम नाहु \* पूनम साहु \* धनश्याम मालवीय \* सुनदर सिंह टाकुर \* डा. दिलिप मानकर \* लेरुराम साहु \* शिव कुमार धाड़से \* अर्जुन सिंह उडके \* मुन्ना लाल हारोडे \* नरेन्द्र महतो \* श्रीया लाल सरपंच \* आर.सी. मिश्रा बेतुल \* एन.के. श्रीकाल्क मुलताई \* वी. डा. काकरे दमुआ \* कमलाकर धाड़से आठेनर \* जे.ए.ल. मवासे श्रीनवही \* इदल सिंह टाकुर आमला \* के.के. श्रीया शाहनुर \* महाविद्यालय मासोद।

27 जनवरी 2002 उल्हास नगर मुंबई, (महाराष्ट्र)

दस महाविद्या शिवि साधना शिविर

शिविर स्थल - बृदावन लॉन होटल जवाहर के नगल में सेटल हास्पिटल रोड, फलावर, लाइन चौक उल्हास नगर-४२४१००३

आयोजक - \* सतीश मिश्रा 8050323 \* गणेश सिंह 8118497 \* भास्करन जी 95251-683357 \* अट पक्नाथ रोय 888 6094 \* श्री. कृष्णा गोडा-841 2860 \* पी.एस. खांबा 95251-546297 \* चंद्र टवरमलानी 492 9090 \* हरिशंकर पांडे 885 6080 \* किरणी भाई - 95250-412166



दिलांक  
11-12-13 नवम्बर 2001  
स्थान  
गुरुदाम, जोधपुर

दिलांक  
23-24-25 नवम्बर 2001  
स्थान  
सिद्धाश्रम, छिंगली

## महा : नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पश्चिम गुरुदेव जिम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।  
इन्हें क साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर ये दीक्षाएं प्राप्त : ११ बजे ये १ बजे के  
मध्य सायं ५ बजे ये ७: ३० बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

वर्ष - 21

अंक - 10

### संरक्षक

ग्रंथ-त्रय-ट्रिपाल, डॉ० ८५३८३३०३००, हाईकोर्ट फैलोरी, जोधपुर-342001 (राज.) , फोन: ०२९१-४३२२०९, टेली फ़ोन : ०२९१-४३२०१०  
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहरा एक्सेप्ट, पीतभग्ना, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४४८, टेली फ़ोन : ०११-७१९६७००



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

